वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

5.3

16 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

शक्ति एवं सिद्धान्त

वाल्डन बैलो

समाज विज्ञान एवं लोकतन्त्र

दीपांकर गुप्ता

देखभाल कार्य पर परिसंवाद

ब्रिजित ऑलनबाकर, माईकल फाइन, हिल्डेगार्ड थियोबोल्ड, यायोइ सायटो, रोलैंड अजमुला, एलमट बचिंगर, फैबीनी डिस्यू, बर्गित रिग्राफ, मोनिका बुडोवस्की, सेबास्टियन शैफ, डेनियल वेरा रोजास, ऐलेना मूर तथा जैरेमी सीकिन्गास

आज का समाजशास्त्र

- रुसी समाजशास्त्र में नई दिशाऐं
- चैक समाजशास्त्र मे उद्यमशीलता
- चीन की श्रमिक राजनीति
- विश्व पैमाने पर समाज विज्ञान पर कार्यक्रम
- अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पेशे
- धन्यवाद, नॉचो !

पत्रिका

International Sociological Association

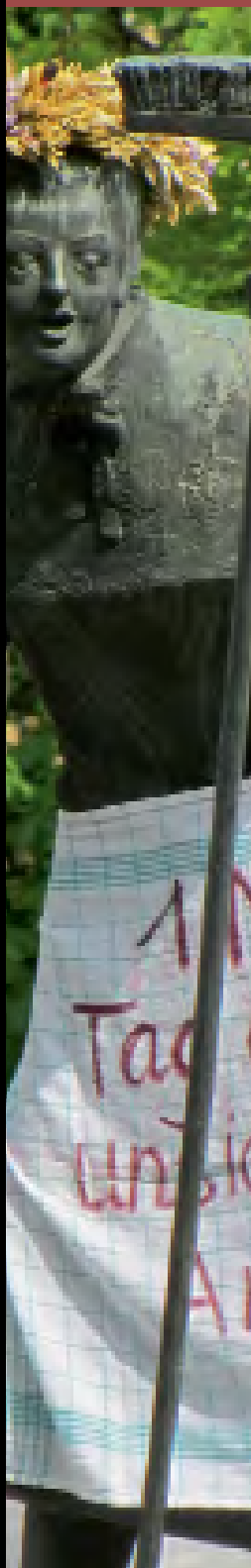

GD अंक 5 / क्रमांक 3 / सितम्बर 2015
http://isa-global-dialogue.net

> सम्पादकीय

सार्वजनिक होना, तुलनात्मक होना

इस अंक में हम एशिया पर दो लेखों से प्रारम्भ कर रहे हैं – एक फिलीपीन्स से एवं दूसरा भारत से – जो कि वहां के प्रख्यात सार्वजनिक बुद्धिजीवी हैं। वाल्डन बैलो एक ऐसे समाजशास्त्री हैं जिन्होने राजनीती में प्रवेश किया। उदाहरण के लिए वैश्विक संवाद ने फरनान्डो हैनरिक का जो कि ब्राजील के राष्ट्रपति बने (GD 3.4) तथा निकोलास लिन्च जो कि पेरु के शिक्षामन्त्री बने (GD 4.2) का साक्षात्कार किया। बैलो ने संसद के फिलीपीन्स के विरोधी दल, अकबायन, का प्रतिनिधित्व करते हुए उन तनावों तथा समझौतों में शामिल होने का विवरण दिया है। वैश्विक विकास पर महत्वपूर्ण लेखक होने के नाते, बैलो का एक साहसी हस्तक्षेप का लम्बा इतिहास रहा है जिसके सहयोग से वह वर्ल्ड बैंक में प्रवेश कर यह जान सके कि किस प्रकार मार्कोस की तानाशाही फिलीपीन कम्युनिस्ट पार्टी के अत्याचारों का भण्डाफोड कर सके, जबकि वो उसके एक सदस्य थे। भारतीय समाजशास्त्री, दीपांकर गुप्ता एक अन्य प्रकार के सार्वजनिक बुद्धिजीवी हैं – एक बहुआयामी विद्वान और इसी के साथ–साथ प्रमुख विकासात्मक संस्थाओं तथा राष्ट्रीय आयोगों के विशिष्ट सदस्य होने के नाते जो कि उन्हें सत्ता के नजदीक ले आये हैं। यहां पर वो लोकतन्त्र तथा समाज विज्ञान के घनिष्ट सम्बन्धों का विवेचन कर रहे हैं।

इन सार्वजनिक विनियोजन के प्रबन्धों के बाद हम ऐक ऐसे परिसंवाद जो कि हमारे समय की प्रमुख अत्यावश्यक समस्या है, जिसेकि समाजशास्त्र ने धीरे से उठाया है – वह है, देखभाल कार्य का व्यवस्थापन। अथक ब्रिजित ऑलनबाकर, द्वारा संयोजित, यह लेख ऑस्ट्रिया, जर्मनी, स्वीडन, जापान, स्पेन, आस्ट्रेलिया, चिली, कोस्टारिका एवं दक्षिण अफ्रीका में हो रहे बच्चों एवं वयोवृद्धों पर बाजारु दबाओं का विश्लेषण कर रहें हैं। यह अत्यधिक हर्ष की बात है कि आई.एस.ए. शोध समिति इस प्रकार के महत्वपूर्ण तुलनात्मक शोधों पर प्रोत्साहन दे रही है।

युवा विद्धानों द्वारा लिखित दो लेख रुसी समाजशास्त्र की नई दिशाओं पर प्रकाश डाल रहे हैं। सैंट पीटर्सबर्ग में स्थापिन सार्वजनिक समाजशास्त्र प्रयोगशाला दो ऐसी प्रधान रुढीगत सम्भावनाओं पर प्रकाश डाल रही है जैसे नीतिगत शोध पर ''उप–करणिकाओं'' (Instrumentalism) जो कि राज्य अथवा निगमों द्वारा संचालित ग्राहकों द्वारा आयोजित की जाती हैं तथा पेशेवरों की ''स्वायत्त'' (Autonomism) जो कि व्यक्तिक गुमनामी में डूब जाते हैं। सार्वजनिक समाजशास्त्र प्रयोगशाला आलोचनात्मक विनियोजन का एक तीसरा रास्ता भी अपनाती है, नागरिक सामज के साथ समझौता करके, लेकिन वैज्ञानिक यर्थाथों के साथ बिना बलिदान के। दूसरा रुसी आलेख सैटं पीटर्सबर्ग के एक ऐसे जिले का छायाचित्र निबन्ध जो कि आज भी प्रारम्भिक सोवियत काल के समाजवादी वास्तुकला को प्रर्दशित करता है। नये जमाने के समाजशास्त्रियों के लिए वह समय आ गया है कि वो अब उन कल्पनाओं की खोज करें जिन्होने 20वीं सदी की उन महानतम तथा अत्यधिक दुखान्त सामाजिक प्रयोगों की तरफ प्रेरित किया।

हमारे पास चैक रिपब्लिक से तीन रुचिकर लेख हैं – ऐक चैक 'आऊ जोड़े' का इंग्लैंड में अध्ययन, रोमा श्रमिकों का सार्वजनिक प्रर्दशन, तथा चैक शिक्षा में असमंजस। हमारे पास विशिष्ट स्तम्भ हैं चीन में श्रमिक संघवादों पर, पेशों पर एक तुलनात्मक अध्ययन, तथा वैश्विक पैमाने पर समाजविज्ञान को एक नवीन कार्यक्रम को प्रोत्साहन देने के लिए। और अन्त में हम कह रहे हैं जो इग्नेसियो रेग्यूऐरा, यानी नॉचो (Nacho) को एक मीठी सी यादगार के साथ जो कि पिछले तीन दशकों से आई.एस.ए. ऑफिस को सम्भाले हुऐ हैं खास तौर से हमें 21वीं शताब्दी के इलेक्ट्रोनिक (विद्युतिकृत) युग के लिए। इसी के साथ वैश्विक संवाद के 16वें संस्करण के उत्पादन के लिए हम इन्डोनेशियन सम्पादकीय दल का भी स्वागत कर रहे हैं।

> ***वैश्विक संवाद*** को आईएसए वैबसाइट पर 16 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

वाल्डन बैलो, *अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त फिलीपीनो समाजशास्त्री, राजनीति में अपनी भागीदारी चुनौतियों एवं निराशाओं पर प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे हैं और यह बतला रहे हैं कि क्यों उन्हें संसद की सदस्यता से त्यागपत्र देना पडा।*

दीपांकर गुप्ता, *ख्यातिप्राप्त एवं सार्वजनिक बुद्धिजीवी भारतीय समाजशास्त्री सामाज विज्ञान एवं लोकतन्त्र के मध्य सम्बन्धों की खोजबीन कर रहे हैं।*

ब्रिजित ऑलनबाकर, *एक प्रमुख ऑस्ट्रियन समाजशास्त्री, विश्व पैमाने पर देखभाल कार्यों की शोधों पर विवरण प्रस्तुत कर रही हैं।*

GD

Global Dialogue is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Associate Editor: Gay Seidman.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Consulting Editors:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Rafael de Souza, Benno Alves, Julio Davies.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo.

India:
Ishwar Modi, Rashmi Jain, Pragya Sharma, Jyoti Sidana, Nidhi Bansal, Pankej Bhatnagar.

Indonesia:
Kamanto Sunarto, Hari Nugroho, Lucia Ratih Kusumadewi, Fina Itriyati, Indera Ratna Irawati Pattinasarany, Benedictus Hari Juliawan, Mohamad Shohibuddin, Dominggus Elcid Li, Antonius Ario Seto Hardjana.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Abdolkarim Bastani, Niayesh Dolati, Mohsen Rajabi, Faezeh Esmaeili, Vahid Lenjanzade.

Japan:
Satomi Yamamoto, Masahiro Matsuda, Fuma Sekiguchi, Taiki Hatono, Hidemaro Inouye, Shinsa Kameo, Kanako Matake, Shuhei Matsuo, Kaho Miyahara, Noriko Nishimori, Shintaro Oku, Fumito Sakuragi, Yutaro Shimokawa, Mayu Shiota, Masaya Usui, Tomo Watanabe.

Kazakhstan:
Aigul Zabirova, Bayan Smagambet, Gulim Dosanova, Daurenbek Kuleimenov, Ramazan Salykzhanov, Adil Rodionov, Nurlan Baygabyl, Gani Madi, Galimzhanova Zhulduz.

Poland:
Jakub Barszczewski, Mariusz Finkielsztein, Weronika Gawarska, Krzysztof Gubański, Kinga Jakieła, Justyna Kościńska, Martyna Maciuch, Karolina Mikołajewska-Zając, Adam Müller, Zofia Penza, Teresa Teleżyńska, Anna Wandzel, Justyna Zielińska, Jacek Zych.

Romania:
Cosima Rughiniș, Corina Brăgaru, Costinel Anuța, Adriana Bondor, Ramona Cantaragiu, Alexandru Duțu, Irina Cristina Făinaru, Ana-Maria Ilieș, Ruxandra Iordache, Gabriela Ivan, Mihai-Bogdan Marian, Anca Mihai, Adelina Moroșanu, Monica Nădrag, Radu Năforniță, Oana-Elena Negrea, Elisabeta Toma, Elena Tudor.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Lubov Chernyshova, Anastasija Golovneva, Anna Kadnikova, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Gül Çorbacıoğlu, Irmak Evren.

Media Consultants: Gustavo Taniguti.

Editorial Consultant: Ana Villarreal.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय : सार्वजनिक होना, तुलनात्मक होना **2**

शक्ति एवं सिद्धान्त : संसद में समाजशास्त्री होने का फेर
वाल्डन बैलो, फिलीपीन्स **4**

समाज विज्ञान एवं लोकतंत्र : एक प्रभावी बन्धुत्व
दीपांकर गुप्ता, भारत **8**

> देखभाल कार्य पर अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद

देखभाल कार्य पर वैश्विक परिप्रेक्ष्य
ब्रिजित ऑलनबाकर, ऑस्ट्रिया **11**

आस्ट्रेलिया में देखभाल पुनः संरचनाओं का बाजार
माईकल डी फाइन, आस्ट्रेलिया **13**

दीर्घावधि देखभाल : स्वीडन एवं जापान की तुलना
हिल्डेगार्ड थियोबोल्ड, जर्मनी एवं यायोइ सायटो, जापान **15**

ऑस्ट्रिया और जर्मनी में देखभाल कार्य का बदलता चेहरा
रोलैंड अजमुला, ब्रिजित ऑलनबाकर, एलमट बचिंगर, फैबीनी डिस्यू, आस्ट्रिया एवं बर्गित रिग्राफ, जर्मनी **17**

चिली, कोस्टारिका और स्पेन की अस्थिर परिस्थितियों में घरेलू देखभाल कार्य
मोनिका बुडोवस्की, स्विट्जरलैंड, सेबास्टियन शैफ, स्वीटजरलैंड, डब्ल्यू. डेनियल वेरा रोजास, चिली **20**

दक्षिण अफ्रीका में देखभाल कार्य के प्रावधान
ऐलेना मूर तथा जेरेमी सिकिंग्स, दक्षिण अफ्रीका **22**

> रुसी समाजशास्त्र में नई दिशाऐं

प्रतिकूल पर्यावरण में समाजशास्त्र
सार्वजनिक समाजशास्त्र प्रयोगशाला, रुस **24**

छायाचित्र निबन्ध : प्रारंभिक सोवियत वास्तुकला में समाजवादी आदर्श
नतालिय ट्रेगुबोवा और वैलेन्टीन स्टेरिकोफ, रुस **26**

> चैक समाजशास्त्र मे उद्यमशीलता

'आऊ जोड़े' का प्रवास, मार्ग की रीति के रुप में
जूजाना सीकीराकोवा ब्यूरीकोवा, चैक रिपब्लिक **29**

घर पर शिक्षा : चैक शिक्षा में स्वतंत्रता और नियंत्रण
इरिना कैस्परोवा, चैक रिपब्लिक **31**

चैक रिपब्लिक में रोमा श्रमिकों की याद में
केटरिना सिडियोपूलू जानकू, चैक रिपब्लिक **33**

> विशिष्ट स्तम्भ

क्षेत्र से ग्रहण किये गये वक्तव्यः चीन की श्रमिक राजनीति में बदलाव के परिदृश्य
लेफेंग लिन, यू.एस.ए. **35**

विश्व पैमाने पर समाज विज्ञान के लिए कार्यक्रम की रुपरेखा
एर्कुमेंट सेलिक, जर्मनी **37**

अर्न्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पेशे : सम्बंधित पक्षों की सार्वजनिकता
एलन कुहलमन, स्वीडन, टयूबा एगर्टन, यू.एस.ए, डेवी बोनिन, दक्षिण अफ्रीका, जेवीर पाबलो हर्मो, अर्जेंटीना, अलेना इयरकाईया–सिमरनेावा, रुस, मोनिका लेंग्यूर, जर्मनी, शाउन रिग्यूनन, दक्षिण अफ्रीका, एवं वीरेन्द्र पी. सिंह, भारत **39**

धन्यवाद, नॉचो !
इजाबेला बारलिन्सका, स्पेन **41**

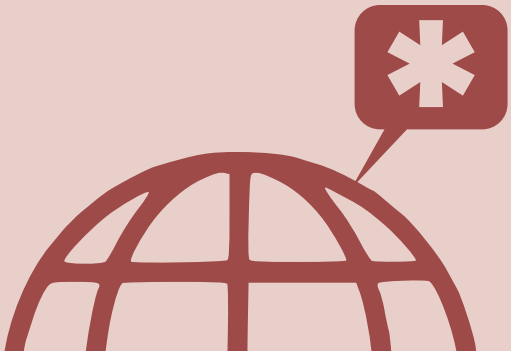

> शक्ति एवं सिद्धान्त : संसद में समाजशास्त्री होने का फेर

वाल्डन बैलो, एमिरिटस प्रोफेसर, फिलिपीन्स विश्वविद्यालय, डिलमन एवं फिलिपिनी संसद के पूर्व सदस्य (2009-15)

वाल्डन बैलो

वाल्डन बैलो एक विद्वान के रूप में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फिलीपीन्स के समाजशास्त्री और सार्वजनिक बुद्धिजीवी है। उन्होंने विकास एवं राजनीति पर कई पुस्तकों का प्रकाशन किया है जिसमें Anti-Development State (2004), Food Wars (2009) और हाल ही की Capitalism's Last Stand? Deglobalization in the Age of Austerity (2013) सम्मिलित है। फिलिपिन्स विश्वविद्यालय में प्रोफेसर होने के अलावा, उन्होंने अमरीका में स्थित खाद्य एवं विकास नीति संस्था (Food First) को निर्देशित किया (1990–94) और वे बैंकाक स्थित संस्था Focus on the Global South के संस्थापक निदेशक थे। वे दुनिया भर के समाचार पत्रों में नियमित रूप से लिखते रहे हैं और कई अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों जिसमें Right Livelihood Prize (एक तरह का वैकल्पिक नोबल पुरस्कार) और इन्टरनेशनल स्टडीज एसोसिएशन के उत्कृष्ट लोक विद्वान पुरस्कार से नवाजा गया। यहां वे फिलीपीन संसद में, फिलिपीन विपक्षी दल अकबयान के प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में राजनीति में एक समाजशास्त्री के उनके अनुभव और दुविधाओं का वर्णन करते हैं। योकोहामा (जुलाई 2014) में आयोजित आई. एस. ए. की समाजशास्त्र की विश्व कांग्रेस में प्रोफेसर बैलो प्लेनरी वक्ता थे। इस लेख का विस्तृत संस्करण ग्लोबल एक्सप्रेस पर पाया जा सकता है।

>>

अपने जीवन के अधिकांश समय, मैं एक सक्रिय कार्यकर्ता और समाजशास्त्री दोनों ही रहा हूं। 1975 में प्रिंस्टन से समाजशास्त्री में पी. एच. डी. के साथ मैं पूरी तरह सक्रियतावाद में डूब गया। पहले मैंने राष्ट्रीय लोकतांत्रिक फ्रंट की अन्तर्राष्ट्रीय शाखा के भूमिगत सदस्य के रूप में फिलिपिन्स में मार्कोस के तानाशाही शासन को उखाड़ फेंकने और फिर कॉर्पोरेट संचालित वैश्वीकरण के खिलाफ आतंकवादी के रूप में मैंने कार्य किया। 1994 से 2009 तक मैंने डीलीमन में फिलिपिन्स विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र पढ़ाया। 2009 में, मैं फिलीपींस की संसद में प्रगतिशील राजनैतिक दल का विधायक बना।

अकबयान, जिस दल का मैं सदस्य था, ने 1998 से 2009 तक प्रजनन स्वास्थ्य विधेयक, कृषि सुधार प्रस्ताव, एलजीबीटी (LGBT) समुदाय के खिलाफ भेदभाव समाप्त करने की पहल, विदेशों में रह रहे फिलीपीनो को अनुपस्थित मतदान अधिकार का विस्तार, कामगारों की सुरक्षा को बढ़ावा और शहरी गरीबों के लिए सामाजिक आवास की शुरूआत जैसे संसदीय प्रस्तावों के लिए लड़ाई लड़ कर अपनी प्रगतिशील छवि को बनाया।

2009 में पार्टी ने इस बात पर बहस की कि क्या उसे 2010 के राष्ट्रपति चुनावों में उदारवादी दल (Liberal Party) (LP) के उम्मीदवार का समर्थन करना चाहिए। इस प्रश्न ने इस बात को उठाया कि क्या उम्मीदवार पर सुधारवादी कार्यक्रम को पूरा करने का विश्वास किया जा सकता है। जहां लिबरल उम्मीदवार शायद धन पुनर्वितरण, सहभागिता लोकतंत्र या राष्ट्रीय संप्रभुता की रक्षा को बढ़ावा नहीं देगा, अधिकांश अकबयान समर्थन मानते थे कि लिबरल, सुशासन या भ्रष्टाचार के विरोध का समर्थन करेंगे–जो हमारे लोकतंत्र पर भ्रष्टाचार के क्षयकर प्रभाव को देखते हुए एक अधिभावी मांग है।

परन्तु जहां LP का भ्रष्टाचार विरोधी एजेण्डा निर्णायक था, हम यह भी अपेक्षा रखते थे कि LP का उम्मीदवार हमारे एजेण्डे के अन्य भागों पर, विशेष कर प्रजनन स्वास्थ्य और कृषि सुधार पर, अनुकूल रूप से देखेगा। 2010 तक लंबे समय से विवादास्पद प्रजनन स्वास्थ्य बिल संसदीय बहस के केन्द्र में पहुंच गया था, जबकि मेरे दल की एक और मुख्य चिंता–हाल ही में पारित कृषि सुधार क्रियान्वयन की प्रतीक्षा कर रहा था। इसके अलावा, हम कई मुख्य मुद्दों जिसमें स्वतन्त्र विदेशी नीति, स्वचालित विनियोग विधेयक जो विदेशी और घरेलू कर्ज की सेवा को प्राथमिकता देता है को निरस्त करना और व्यापार, वित्त और निवेश में नवउदारवादी उपायों के निर्मूलन सम्मिलित हैं, को आगे बढ़ाने की अपेक्षा की उम्मीद करते थे।

LP उम्मीदवार बेनिग्नो सिमोन एक्विनो तृतीय (प्रतिष्ठित पूर्व राष्ट्रपति कोराजोन एक्विनो और शहीद बेनिग्नो एक्विनो के पुत्र) 2010 में राष्ट्रपति चुने गये। अकबयान के संसद में प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में, अगले पांच वर्षों में, मैंने पारंपरिक राजनेताओं और लिबरल के वर्चस्व वाले गठबंधन में एक प्रगतिशील दल की भागीदारी के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले अवसरों और प्रतिबन्धों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया।

> सांस्कृतिक मोर्चे पर विजय

फिलीपीनो प्रगतिशीलों ने गरीबी और महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य को संबोधित करने के लिए लंबे समय तक एक सरकार समर्थित परिवार नियोजन कार्यक्रम की मांग की है। 2010 तक, जब नये प्रशासन ने कार्यभार संभाला, मैंने और अन्य प्रगतिशीलों ने प्रजनन स्वास्थ्य विधेयक को बारह वर्षों तक विधायी एजेण्डे पर रखा था। शक्तिशाली रोमन कैथोलिक चर्च के भारी विरोध के बावजूद प्रगतिशीलों ने महिलाओं के प्रजनन अधिकारों और स्वास्थ्य के संदर्भ में इस मुद्दे को पुनः फ्रेम कर बहु–वर्गीय गठबंधन बनाया था।

यह एक विजयी तर्क था जो न सिर्फ तार्किक स्तर पर अपितु प्रतीकात्मक स्तर पर भी सर्व–पुरूष संस्तरण और महिलाओं की पसन्द को नियंत्रित करने वाली पुरूष वर्चस्व वाली कांग्रेस की छवि का दक्षता से प्रसार किया। 2012 तक हमने रूढ़िवादी वैचारिक संस्थाओं और सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग और मध्य वर्ग के एक हिस्से, जो सामान्य तौर पर उनके प्रभाव में था, के मध्य एक खूँटे को सफलतापूर्वक गाड़ दिया था और विधेयक कानून बन गया।

> कृषि सुधार : वर्ग की कठोर वास्तविकताएँ

हालांकि, कृषि सुधार, विशेष रूप से वर्ग रूचियों को छूने वाले मुद्दों पर, गठबंधन की राजनीति की परेशानियाँ दर्शाता है। यद्यपि, फिलीपीन्स में भूमि सुधार के प्रयास 1960 के प्रारंभिक दशकों में प्रारम्भ हुए, फिर भी व्यापक असमानताएँ कायम हैं। 1970 के दशक में, मार्कोस के तानाशाही भूमि सुधार कार्यक्रम ने भूस्वामियों के प्रतिरोध का सामना किया और उसे रोकना पड़ा। 1986 में मार्कोस के तख्ता पलट के पश्चात्, राष्ट्रपति कोराजोन एक्विनों के प्रशासन ने, आंशिक रूप से न्यू पीपुल्स आर्मी के ग्रामीण उग्रवार के जवाब में, कुछ 10.3 लाख हैक्टेयर के पुनर्वितरण की एक महत्वाकांक्षी योजना शुरू की। हालांकि, भू–स्वामियों के वर्चस्व वाली कांग्रेस ने कानून में बचाव के रास्ते दिखा सार्वजनिक भूमि के पुनर्वितरण के प्रयासों को प्रभावी रूप से सीमित कर सर्वाधिक उत्पादक निजी स्वामित्व वाली भूमि को अछूता छोड़ दिया।

कांग्रेस में मेरे पहले वर्ष में, अकबयान ने भूमि अधिग्रहण के लिए पर्याप्त धन जुटा और विधिक कमियों को रोक कर एक नये कृषि सुधार कानून (CARPER) का सफलता से सह–प्रायोजन किया। विधेयक पारित हो गया क्योंकि कांग्रेस में भू–स्वामियों की संख्या काफी कम हो गई थी, और दूसरी तरफ मिन्दानाओ द्वीप से राष्ट्रपति महल तक 1,700 किलोमीटर मार्च करने वाले किसानों के एक समूह द्वारा जीवन्त होने वाला कृषि न्याय हेतु लोकप्रिय आंदोलन पुनः जीवित हो गया था।

तथापि यदि सशक्त कानून पारित भी होता है, इसे क्रियान्वित करने के लिए राजनैतिक इच्छा शक्ति चाहिए। कानून के पारित होने के समय से, राष्ट्रपति द्वारा उपेक्षा और भू–स्वामियों का सामना करने की अनिच्छा ने करीबन 7,00,000 योग्य हैक्टेयर जो अधिकांश निजी है और जिसमें देश के सर्वश्रेष्ठ कृषि भूमि सम्मिलित है, को अछूता छोड़ दिया है। भू–स्वामियों के प्रतिरोध, राष्ट्रपति द्वारा उपेक्षा, और नौकरशाही की कातरता के द्वारा कृषि सुधार रूक गये हैं। सुधारवादी राष्ट्रपति द्वारा भूमि सुधार के प्रभारी, डरपोक और अक्षम अधिकारियों को हटाने से मना करने के साथ इस सुधार के प्रति राष्ट्रपति का बेपरवाहर रवैया, मार्च 2015 में मेरे इस्तीफे के पीछे एक कारण था।

> सुशासन की शिकस्त

आखिर में, मैं सुशासन की वकालत करने के मेरी पार्टी के अनुभवों की तरफ मुड़ता हूं। 2010 में अकबयान द्वारा सुधार गठ–बंधन में सम्मिलित होने का मुख्य कारण यह वादा था कि लिबरल

>>

दल का प्रशासन भ्रष्टाचार को सम्बोधित करने के बारे में गंभीर होगा। पांच वर्ष पश्चात, इसी मुद्दे ने मुझे इस्तीफा देने हेतु प्रेरित किया।

एक्विनो प्रशासन के प्रारंभिक वर्ष सुशासन के लिए अभियान द्वारा चिन्हित थे। कांग्रेस में अकबयान के मुख्य प्रतिनिधि के रूप में इस सुधारवादी झुकाव जिसमें बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के लिए पूर्व राष्ट्रपति ग्लोरिया मेकापागल अरोयो पर अभियोजन सम्मिलित था, का हिस्सा होना शानदार था। मई 2013 के चुनाव, मेरे सहित, कई के द्वारा लिबरल प्रशासन में विश्वास मत के रूप में देखा गये।

परन्तु यह हनीमून ज्यादा नहीं चला। फिलीपीन राजनैतिक व्यवस्था में यू. एस. के. उपनिवेशिक काल से उत्तराधिकार में मिली ''पार्क बैरल'' या प्राथमिकता विकास सहायता कोष (PDAF) नामक संस्था है जहां राष्ट्रपति कांग्रेस के प्रत्येक सदस्य को उसके निर्वाचन क्षेत्र की परियोजनाओं में काम लेने के लिए विशिष्ट राशि आवंटित करता है। उसके तुरंत बाद, हमने यह जाना कि एक कुशल राजनैतिक कार्यकर्त्ता जेनट लिम–नेपोल्स ने फर्जी संगठन खड़े कर लिये थे जिनके माध्यम से विधायक विकास परियोजनाओं और समाज सेवा के लिए आवंटित PDAF कोष को स्वयं के लिए चैनल करते हैं। इसमें नेपोल्स अपनी सेवाओं के लिए एक हिस्सा रखती थी। ''नेपोल्स घोटाले'' ने व्यापक विकर्षण और PDAF को खत्म करने के लिए कई मांगों को प्रोत्साहित किया। मेरा दृढ़ विश्वास था कि मेरी पार्टी को अपने सिद्धान्तों पर टिक, PDAF को बंद करने की मांग से जुड़ना और राष्ट्रपति द्वारा पार्टी के लिए आवंटित रकम को उठाने से मना करना चाहिए था। लेकिर मेरे लिए आश्चर्य की बात थी कि नेतृत्व की बैठक में मेरे प्रस्ताव को जबर्दस्त तरीके से हरा दिया गया।

जल्द ही, के कई बिलियन पैसों के राष्ट्रपति के गुप्त स्लश कोष, Disbursement Acceleration Programme में एक और घोटाला उजागर हुआ। गैर–पारदर्शी, गैर–जवाबदेही, लोक निधि का लापरवाही घालमेल, के साथ प्रशासान उसी प्रकार के व्यवहार में लिप्त था जैसा उसने पूर्व के प्रशासन पर आरोप लगाया था। जब सर्वोच्च न्यायालय ने इस कार्यक्रम को गैर कानूनी के रूप में परिभाषित किया तो मुझे लगा कि अब राष्ट्रपति द्वारा निर्णायक कार्यवाही करने का समय है।

जब मैंने अपनी पार्टी को उत्तरदायी अधिकारियों के इस्तीफे मांगने के लिए राष्ट्रपति पर दबाब डालने को कहा, यद्यपि पार्टी के कुछ साथी सदस्य इससे असहमत थे और उन्होंने कहा कि ऐसा करना राष्ट्रपति को अधिक जिद्दी बनायेगा – यह एक ऐसी भाग्यवादी प्रतिक्रिया थी जिसे मैं एक प्रगतिशील पार्टी के लिए अनुचित मानता हूं। पार्टी नेतृत्व के साथ कुछ लाभ न पा कर मैंने सीधा राष्ट्रपति को लिखा और तर्क दिया कि एक चिंतित नागरिक के रूप में राष्ट्रपति को अपने बजट सचिव को उसके ''बिना किसी सीमा का ध्यान रखे, पैसे/धन के तेज और ढीले हेरफेर'' के कारण उसे हटा देना चाहिए। मैंने लिखा कि कार्यक्रम ने सीनेट और हाउस के सदस्यों के उपर कार्यकारी शाखा को प्रत्यक्ष वित्तीय आधिक्य दे कर ठीक वैसे ही अध्यक्षीय संरक्षण प्रदान किया जो शक्ति के विभाजन के बिल्कुल उल्टा था और जिसे संविधान टालना चाहता था।

मेरे पत्र ने अकबयान नेतृत्व के मध्य तनाव को बढ़ाया : अधिकांश सदस्यों ने बहस की कि मुझे एक व्यक्ति के रूप में राष्ट्रपति को लिखने का कोई अधिकार नहीं था। मुझे बताया गया कि कारण, अपनी निजी राय को पार्टी की राय के अधीनस्थ रखना पार्टी के सबसे उंचे दर्जे के प्रतिनिधि होने की कीमत थी।

जैसे हमारी पार्टी की आंतरिक बहस चलती रही, प्रशासन के दूसरी पराजय का सामना किया : 25 जनवरी 2015 को निन्दानाओं में एक आतंक विरोधी मिशन उल्टा पुल्टा हो गया जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय पुलिस के विशेष कार्यवाही दल के 44 सदस्यों की अलगाववादी मोरो इस्लामिक लिबरेशन फ्रंट जिसके साथ सरकार एक अस्थायी स्वायत्तता समझौता की बातचीत कर रही थी, के 18 आतंकवादियों के साथ मौत हो गई।

''ममासापनो छापे'' ने तीन मोर्चों पर कुशासन का उदाहरण दिया। पहला, राष्ट्रपति ने राष्ट्रपति पद के नेतृत्व के बुनियादी सिद्धान्त का उल्लंघन करते हुए स्वयं के आदेश द्वारा चलाई गई कार्यवाही की जिम्मेदारी को लेने से मना कर दिया। दूसरा, उन्होंने अवैध तरीके से कार्यवाही का नेतृत्व राष्ट्रीय पुलिस में एक घनिष्ठ मित्र, जो देश के आम्बड्समन द्वारा भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण से निलंबित किया गया था, को सौंप दिया। तीसरा, उन्होंने फिलीपीनी नहीं अपितु अमरीकी प्राथमिकताओं को दर्शाते मिशन का आदेश दिया–यह जानते हुए कि कोई भी दुर्घटना महत्वपूर्ण शांति वार्ता को कमजोर करेगी। सुशासन के नाम पर, मैंने मांग की, कि राष्ट्रपति को इस विफलता की पूरी जिम्मेदारी लेनी चाहिए और छापे के सभी आयामों, विशेष तौर पर अमरीका की भूमिका, को उजागर करें।

जैसे ही प्रशासन का सत्ता का संकट बढ़ा, मैंने अकबयान को सुधार के लिए दबाब बनाने के लिए कहा। मैंने तर्क दिया कि राष्ट्रपति की कमजोर नैतिक स्थिति में, हमें उन पर न सिर्फ इस दुखद छापे की जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए ही नहीं बल्कि भ्रष्ट, अयोग्य और लापरवाही अधिकारियों को बर्खास्त करने के लिए और जीर्ण–शीर्ण सुशासन कार्यक्रम को पुनर्जीवित करने के लिए दबाब डालना चाहिए। पार्टी नेतृत्व ने इसके लिए मना कर दिया।

एक ऐसा राष्ट्रपति जो हादसे के लिए जिम्मेदारी उठाने से मना करता है और जो भ्रष्ट, अयोग्य साथियों को लगातार संरक्षण देता है, को समर्थन देने में असमर्थ, मेरा संसद में अकबयान के प्रतिनिधि के रूप में इस्तीफा देना अपरिहार्य था।

इस बात को समझकर कि पार्टी नेतृत्व गलत था मैंने यह महसूस किया कि यदि मैं पार्टी की बुनियादी स्थिति, जैसे राष्ट्रपति को उसका सतत् समर्थन, से सहमत नहीं हूं तो मुझे पार्टी के प्रतिनिधि के रूप में कार्य नहीं करना चाहिए। किसी ने मुझे निजी तौर पर इस्तीफा देने को नहीं कहा, परन्तु पार्टी की आचार संहिता स्पष्ट थी। मैंने 19 मार्च 2015 को इस्तीफा दे दिया।

> महत्वपूर्ण सबक

इस वृत्तान्त के माध्यम से मैंने तीन हिमायतों : प्रजनन स्वास्थ्य, कृषि सुधार और सुशासन के अनुसरण से निकलने वाली सीख को चिन्हांकित किया है।

प्रजनन स्वास्थ्य संघर्ष इस बात को दर्शाता है कि कैसे सांस्कृतिक मुद्दे एक कार्यक्षेत्र को उपलब्ध कराते हैं जहां प्रगतिशील एजेण्डे को सावधान गठबंधन निर्माण और असंबद्ध रणनीतियों के माध्यम से उन्नत किया जा सकता है। परिवार नियोजन की लड़ाई में, प्रजनन स्वास्थ्य समर्थक शक्तियाँ उच्च और मध्यम वर्ग के मध्य दरार पैदा करने में सक्षम रहीं। ऐसा उन्होंने जनसंख्या नियंत्रण के वृत्तान्त को महिलाओं के प्रजनन अधिकारों पर विमर्श से पलट कर, कट्टर

>>

विरोध के बावजूद कानून को पारित करने के लिए जगह बनाने के द्वारा किया।

कृषि–सुधार अनुभव हमें स्मरण कराता है कि गैर–उद्विकासीय राजनैतिक माहौल में असमानता की संरचनाओं पर सीधे हमले की जीतना कितना मुश्किल है। यद्यपि प्रगतिील ताकतें शक्तिशाली कानून बनाने में कामयाब रहीं, राष्ट्रपति द्वारा उपेक्षा, नौकरशाही कायरता और मकान मालिकों के प्रतिरोध के एक संयोजन के कारण कृषि असमानता की संरचनाएँ ताकतवर बनी रहती हैं।

तीसरा उदाहरण, सुशासन के लिए संघर्ष, सीखो के एक खजाने की पेशकश करता है, यद्यपि इसने दर्दनाक निजी एवं राजनैतिक परिणाम प्रदान किये। एक सीख यह है कि गठबंधन गतिशील हैं : इस मामले में सुधार के लिए गठबन्धन कुछ अलग रूप में विकसित हो सकता है। दूसरा है कि एक प्रगतिशील पार्टी को गठबन्धन में उसकी भागीदारी का लगातार मूल्यांकन करना चाहिए। किसी भी दल के हित–जिसमें प्रशासनिक पद या गठबन्धन में प्रभाव सम्मिलित है, परन्तु कई बार वे हित आधारभूत मूल्यों से टकराते हैं। इस संकटकाल के दौरान, यदि वाम दल को अपनी ईमानदारी को बनाये रखना है तो उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि मूल्य प्रबल रहें।

इस अवसर पर तीसरा सबक है कि पार्टीयों और उनके संसदीय प्रतिनिधियों के मध्य गंभीर मतभेद उभर सकते हैं। ऐसे समय में, प्रगतिशीलों को अपनी आत्मा की आवाज का अनुसरण करना चाहिए, चाहे उसका मतलब अपने ही पार्टी के नेतृत्व का विरोध करना हो। प्रगतिशील होने का अर्थ है समानता, न्याय, एकजुटता और संप्रभुता के आस पास समाज के संयोजन की कल्पना करना और अपनी इस कल्पना को साकार बनाने के लिए राजनैतिक कार्यक्रम का होना। परन्तु इसका अर्थ आचार संबंधी नैतिक रूख का प्रक्षेपण भी है। सरकारी सार्वजनिक कार्यालय में पद धारण करने वाले सच्चे प्रगतिशील का विशिष्ट चिन्ह शायद उनका नीतिगत व्यवहार है। मेरे लिए, शक्ति के गलियारों में प्रगतिशील होने का सबसे उपर अर्थ है, अपने सिद्धान्तों और मूल्यों पर टिके रहना, चाहे उसका मतलब अपना पद, संपत्ति या जीवन को खोना हो। ■

वाल्डन बैलो से पत्र व्यवहार हेतु पता <waldenbello@yahoo.com>

[1] http://isa-global-dialogue.net/power-and-principle-the-vicissitudes-of-a-sociologist-in-parliament-july-4-2015/

> सामाजिक विज्ञान एवं लोकतंत्र
एक प्रभावी बन्धुत्व

दीपांकर गुप्ता, शिव नादर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

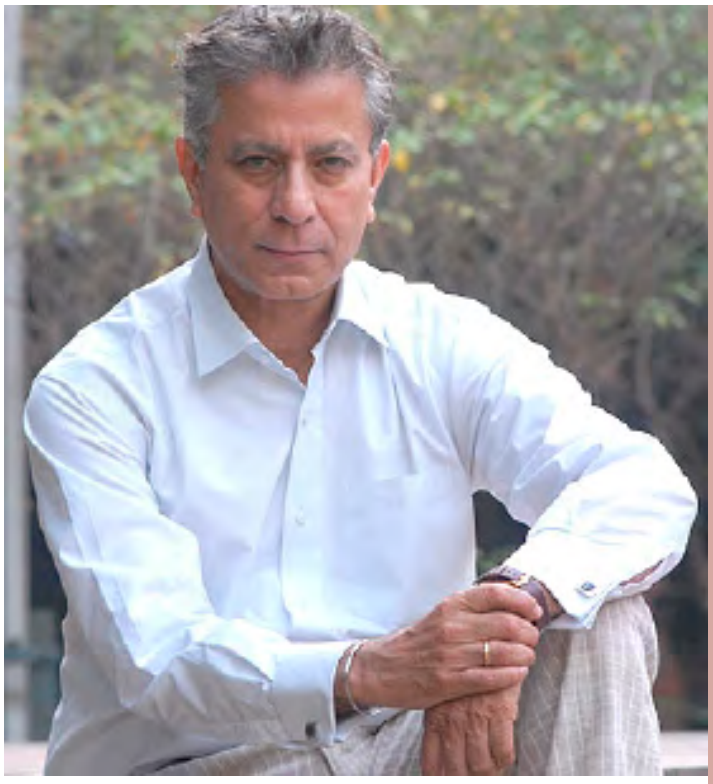

दीपांकर गुप्ता

दीपांकर गुप्ता एक प्रतिष्ठित भारतीय समाजशास्त्री और एक अग्रणी लोक बुद्धिजीवी है। वे नई दिल्ली के शिव नादर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और सेन्टर फॉर पब्लिक अफेयर्स एण्ड क्रिटिकल थ्योरी के निदेशक हैं। लगभग तीन दशकों तक उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र का अध्यापन किया है। 18 किताबों के लेखक एवं संपादक के रूप में उन्होंने भारत के उत्तर औपनिवेशिक रूपांतरण से सम्बन्धित काफी विषयों पर लिखा है। उनकी नवीनतम पुस्तक 'रिवोल्यूशन फ्रॉम अबाव : इंडिया'ज फ्यूचर एण्ड द सिटीजन इलिट', तर्क देती है कि लोकतंत्र ऊपर के हस्तक्षेपों से आगे बढ़ता है। वे द टाइम्स ऑफ इंडिया और द हिन्दू में नियमित स्तंभकार है और विभिन्न संस्थाओं जैसे रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया और नेशनल बेंक फॉर एग्रीकल्चर एण्ड रूरल डेवलपमेण्ट में निदेशक के रूप में भागीदारी के माध्यम से सार्वजनिक मामलों में संलग्न हैं। वे टोरोन्टो, पेरिस और लंदन में विजिटिंग प्रोफेसर होने के साथ कई अमरीकी विश्वविद्यालयों में वरिष्ठ फैलो रहे हैं। कई सम्मानों से नवाजे गये, उन्हें 2010 में फ्रांस की सरकार द्वारा शेवेलियर ऑफ द आर्डर ऑफ आर्टस एण्ड लेटर्स की उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया। इस लेख का पूर्ण संस्करण ग्लोबल एक्सप्रेस में पाया जा सकता है।

आपने क्या कभी यह सोचा है कि दर्शनशास्त्र के साथ सामाजिक विज्ञान सिर्फ लोकतांत्रिक समाजों में क्यों पनपते हैं? उदाहरण के लिए, दुनिया के सबसे अमीर देशों में से कुछ–सऊदी अरब, चीन एवं रूस ने प्राकृतिक विज्ञानों में काफी प्रगति की है परन्तु सामाजिक विज्ञान काफी दयनीय स्थिति में हैं। चीन और रूस इलेक्ट्रोनिक्स, भौतिक विज्ञान, चिकित्सा, परिवहन में सर्वश्रेष्ठ से मुकाबला कर सकते हैं परन्तु समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, यहां तक कि इतिहास के आते ही ये देश लड़खड़ाने लगते हैं। क्या लोकतंत्रों में ही सामाजिक विज्ञान सक्रिय रूप से पढ़े जाते हैं? और यदि ऐसा है तो क्यों?

कुछ लोगों ने दलील दी कि लोकतंत्र और सामाजिक विज्ञानों के मध्य स्पष्ट बन्धुत्व एक अधिक सतही पूर्वाग्रह को छिपाता है–वह यह है कि स्पष्ट बन्धुत्व वास्तव में एक विशिष्ट पश्चिमी संस्कृति का उत्पाद है। शायद सामाजिक विज्ञान सांस्कृतिक रूप से सिर्फ तटस्थ दिखाई देते हैं, जबकि वस्तुतः वे यूरोपीय और अमरीकी चिंताओं तक सीमित रहते हैं? सामाजिक विज्ञानों के कई गैर–पश्चिमी आलोचक देशज श्रेणियों के सुधारात्मक उपाय जो सामाजिक विज्ञानों के सार्वभौमिक दिखावे को बेनकाब करते हैं, को प्रोत्साहित करते हैं। परन्तु यह दृष्टिकोण यह भूल जाता है कि सामाजिक विज्ञान, यूरोप और अमरीका में भी, हाल ही में विकसित हुए हैं। एक समय में ये ज्ञान प्रणालियाँ भी दुनिया के उन हिस्सों में भी नयी थीं और इन्होंने अपनी किसी भी विश्लेषणात्मक शक्ति को मध्यकालीन या फिर बाद के मध्यकालीन यूरोप से प्राप्त नहीं किया था।

लोकतंत्र के पूर्व, सामाजिक विज्ञानों की खोज के लिए संदर्भ अस्तित्व में नहीं थे। न ही विभिन्न प्रकार के आँकड़े–जो आधुनिक समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र के लिए प्रधान विषय थे, उपलब्ध थे। सामाजिक विज्ञानों का जन्म तब हुआ जब नये संदर्भ उभरे और जब तथ्यों का एक नया सेट प्रासंगिक बना। यह

> >

एक जुड़वाँ जोर था जिसने सामाजिक विज्ञानों के विकास को प्रेरित किया।

जब तक ज्ञान ऊपर से आए विश्वासों चाहे वे चर्च से हो या राज्य से, से निर्मित होता है, धर्मनिरपेक्षवाद का प्रश्न ही नहीं उठता है। वह एक कोने में खड़ा इंतजार कर रहा था कि कोई व्यक्ति यह पूछे कि ''आप जो कह रहे हैं उसे मैं मानूं, उसके पहले मेरे सामने साबित करो।'' सामाजिक विज्ञानों के लिए धर्मनिरपेक्षता कुंजी है क्योंकि हम क्रियाशील लोगों का अध्ययन करते हैं। जीवन स्थिर नहीं रहता क्योंकि संदर्भ विश्व भर में और इतिहास में अलग होते हैं। प्राकृतिक विज्ञानों को अधिक छूट प्राप्त है : पानी हमेशा प्यास बुझाता है, इन्द्रधनुष आकाश में बनता है, आग से धुआं और रोशनी दोनों ही प्राप्त होती है। इन में से किसी के लिए भी लोकतंत्र की आवश्यकता नहीं है, और न ही वे उसके आगमन के बाद परिवर्तित हुए है। सामाजिक विज्ञान अलग है।

सामाजिक विज्ञानों के लिए यह प्रासंगिक, नहीं, आवश्यक है कि वे अपने विचारों को इस समझ के साथ फ्रेम करें कि जो अन्य करते हैं वह स्व को प्रभावित करता है और उसे परिभाषित भी करता है। यह पक्ष जो आज काफी मुख्य है, पूर्व में इसकी कोई पकड़ या वजन नहीं था। प्रारम्भिक काल में, समुदाय, समूह, एकजुट समूह, जनजातियां, जातियां, वैवाहिक और रक्त सम्बन्धी, अपने सीमित क्षेत्र में रहते थे परन्तु हमारे पास समाज नहीं था। सामाजिक वैज्ञानिक जांच के विषय–आदिकालीन सरहदों के पार व्यापक नियमित अंतक्रियाएँ–हाल ही मानव इतिहास में आई हैं। समाज के आगमन से, पूर्व मौजूदा समूहों में कसकर बंधे रहना अब संभव नहीं है : अपने स्व के निर्माण में भी ''अन्य'' के बारे में जागरूकता निर्णायक बन जाती है।

लोकतंत्र में यह जागरूकता अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। नीतियों या आर्थिक पहलों को बहु–हितों का ध्यान रखना चाहिए, कम विशेषाधिकार प्राप्त का भी। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन का 1934 का गरीब कानून संशोधन अधिनियम लोकतंत्र को स्थापित करने के लिए एक मुख्य कदम था : इसका अर्थ था कि श्रमिक अब पादरियों द्वारा संचालित गरीब गृहों तक सीमित नहीं रहेंगे बल्कि वे नौकरी की तलाश में स्वतन्त्र रूप से घूम सकेंगे।

लोकतंत्र ने एक नया, वृहद तथ्य प्रस्तुत किया। उसकी स्थापना के साथ ही, हम मनुष्य को एक लक्ष्य की मांग करने वाले तार्किक कर्ता जो अपना रास्ता/मार्ग चुनने के लिए स्वतन्त्र था, के रूप में स्वीकार करने लगे। विकल्पों के साथ हमारी गलती करने की संभावना भी थी–यह एक स्वागत योग्य कीमत थी क्योंकि जब कोई गलती करने से डरता नहीं है तभी नवाचार उत्पन्न होता है।

इसका क्या अर्थ है? जब व्यक्तिगत त्रुटियों को दंडित नहीं किया जाता है तो नवाचार और सुधार दोनों के लिए काफी गुंजाइश होती है। यदि लोकतंत्र के नियमों की अवहेलना नहीं होती, उसकी सीमाओं को सम्मान देने वाली त्रुटियों का स्वागत है। लोकतंत्र कई मार्गों की स्वीकृति देता है : बच्चों के परवरिश करने, विवाहित जीवन जीने, रोजगार और पेशे चुनने, दोस्त बनाने के विभिन्न तरीकें। पूर्व में ये विकल्प मौजूद/उपलब्ध नहीं थे परन्तु लोकतंत्र में उन्हें भी जिन्हें पारंपरिक पूर्वाग्रहों को तोड़ना मुश्किल लगता है को आदिमकालीन प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने पर विवश होना पड़ता है।

यही प्रयन्त–त्रुटि विधि की झाड़ सामाजिक विज्ञानों की अनुभवजन्य सामग्री का निर्माण करती है। व्यक्तिगत दृष्टि से त्रुटि करना दुर्भाग्यपूर्ण हो सकता है परन्तु सामाजिक विज्ञानों के लिए, त्रुटियां बुनियादी है और सामाजिक विज्ञानों को उनके तथ्य और अवधारणाएँ दोनों देती हैं। सामाजिक विज्ञानों के उदय के लिए लोकतंत्र आवश्यक शर्त है क्योंकि तभी त्रुटियों को स्वीकारना सामान्य हो पाता है।

अपने आप की लोकतंत्र–पूर्व समाज में एक अर्थशास्त्री के रूप में कल्पना करो। सभी व्यावहारिक रूप में, बाजार ज्ञात था, और वस्तुओं और सेवाओं के क्रेता और विक्रेता पूर्व–निर्धारित थे और प्रारम्भ से चिन्हित थे। मध्ययुगीन ''कारखाने'' (वर्कशॉपस) निश्चित श्रेणी के खरीददारों के वर्ग के लिए उत्पादन करते थे, कौशल की आवश्यकता थी पर उद्यम की नहीं। न ही ''आर्थिक'' त्रुटि करने की संभावना थी; जोखिम उठाने का प्रश्न ही नहीं उठता था क्योंकि क्रय और विक्रय प्रथाओं या संरक्षण द्वारा आकार लेते थे। जब भूमि आसानी से हस्तांतरित नहीं हो सकती थी, और न ही श्रम घूमने के लिए स्वतन्त्र नहीं था, प्रस्थिति प्रारम्भ से ही परिभाषित थी, इसीलिए लोकतंत्र पूर्व के काल में अर्थशास्त्र की एक शैक्षणिक विषय के रूप में कोई जगह नहीं थी। तब कोई छदम् हाथ नहीं था, कोई बाजार असन्तुलन नहीं था, न कोई निर्णय की त्रुटियां जो आर्थिक उतार–चढ़ाव और दिवालियापन को लाती।

यद्यपि, उस संदर्भ में जहां बहु हित अन्तक्रिया करते हैं, एक लोकतंत्र को अपनी अर्थव्यवस्था को संवेदनशीलता के साथ संचालित करना चाहिए। जिस समय बाजार का छदम् हाथ परिचालित होता है, वहीं कभी सामाजिक संतुलन बनाये रखने के लिए कभी कभी राज्य के खुले हस्ताक्षेप की भी आवश्यकता होती है। यदि सरकार एक वर्ग या किसी अन्य के हितों को स्वीकार लेती है तो चोटिल अर्थव्यवस्था को स्वस्थ होने में उतना ही अधिक समय लगता है। यह वह पैटर्न है जो दर्शाता है कि लोकतंत्र में अन्य की जागरूकता कितनी केन्द्रीय है और ऐसा हितों को कटा कर और त्रुटियों को स्वीकार कर होता है।

एक विषय के रूप में अर्थशास्त्र खड़ा नहीं रह सकता है, यदि बुनियादी सिद्धान्त न हो कि लोग त्रुटियाँ करते हैं। क्या यह मात्रात्मक मुक्ति का समय है? क्या विनिमय दर को एक निश्चित स्तर पर रखना चाहिए अधिनायकवादी अर्थव्यवस्थाओं में ऐसे प्रश्नों की गुंजाइश गंभीर रूप से सीमति है क्योंकि निर्णय उपर से लिए जाते हैं। लोकतंत्रों में हम मांग कर सकते हैं कि ''इसे साबित करो।''

इसी तरह, सत्ता से शक्ति को अलग कर, राजनीति विज्ञान लोकतंत्र पर अपनी निर्भरता को रेखांकित करता है। पूर्व में, शासकों के पास शक्ति थी, परन्तु सत्ता सिर्फ स्वतन्त्र रूप से प्राप्त लोकप्रिय जनादेश से मिलती है। लोकतंत्र में दूसरे लोगों का महत्व है। लोकतंत्र समाज में हितों की बहुलता को एक आवश्यक शर्त के रूप में स्वीकार करता है; चाहे किसी भी दल के पास सत्ता हो, विरोधी विचार एवं लक्ष्यों स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनावों के ढाँचे के अन्तर्गत व्यक्त होने चाहिए। ऐसा वह भगवान या राजा के नाम पर नहीं अपितु लोगों के नाम पर करते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए, किसी सत्ता–इच्छाधारी को–कृषक, औद्योगिक श्रमिक, कर्मचारी वर्ग इत्यादि–के परस्पर विरोधी हितों के मध्य संतुलन बनाये रखना चाहिए। और इन सभी में उप–समूह भी हैं जो राजनीति में उपस्थित को ''दूसरों'' पर ध्यान देने के लिए बाध्य करते हैं।

राजनीति विज्ञान के लिए आवश्यक है कि व्यवस्था लोगों को गलती करने व उसे सुधारने की, नियमों के तहत, अनुमति दें। गलती करो और आप शक्ति खो देते हैं। लोकतंत्र में, जो सत्ता में है, वे अपने उच्च स्थान को स्वीकृत नहीं मान सकते हैं : मतदाता

>>

अपना मन बदल सकते हैं और यहां तक कि उन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। लोकतंत्र के बिना, कोई विकल्प नहीं, कोई चुनाव नहीं, कोई खण्डन नहीं और कोई सत्ता–विरोधी कारक नहीं हैं।

समाजशास्त्र, एक ऐसा विषय जिसका प्राथमिक उद्देश्य प्रघटना को वर्ग, श्रेणियों, लिंग, व्यावसायिक समूहों के माध्यम से अपवर्तन करना है, का क्या होगा? विवाह जैसी सामाजिक प्रथाएँ वास्तविक परिपाटी के संदर्भ में परखी जाती है या फिर जाति, वर्ग, धर्म, व्यवसाय के प्रभावों के भिन्न लैंस से अन्वेषित की जाती है। यह जांच की एक ऐसी शैली है जो ''दूसरों'' के बारे में जागृति से प्रारम्भ होती है।

यथार्थ के लोकप्रिय धारणाओं, या फिर अधिक विशिष्ट रूप से तात्विकवाद, को छोड़ कर, समाजशास्त्र आत्म चेतना से तुलनात्मक पद्धति में गहनता से घुसता है। ऐसा वह समय और स्थान सापेक्ष विभिन्नताओं की खोज में विद्वानों को निष्पक्ष और समीक्षात्मक रहने के लिए दबाव डाल कर के करता है। तुलनात्मक अध्ययनों से हम एक सामाजिक प्रघटनाओं चाहे वह धर्म, विवाह या सामाजिक वरीयता हो, के सामान्य लक्षणों का पता लगाने के साथ ही यह समझने का प्रयास करते हैं कि उनके स्थापन पर निर्भर, कैसे सामाजिक तथ्य भिन्न प्रकार से प्रकट होते हैं।

अतः लोकतंत्र के साथ समाजशास्त्र के जुड़ाव को समझना आसान है : यह विषय इस बात पर केन्द्रित हो कि सांस्कृतिक सीमाओं और आर्थिक सीमाओं के अन्तर्गत और पार लोग कैसे अन्तक्रिया करते हैं, ''दूसरों'' के बारे में, संदर्भ के बारे में जागरूकता से, अपने आप को परिभाषित करता है। जानबूझकर अपवर्तन की यही प्रवृत्ति समाजशास्त्र को कई क्षेत्रों में विशेष रूप से सामाजिक गतिशीलता के अध्ययनों में अग्रणी बनाती है।

गैर लोकतांत्रिक सेटिंग्स में, इन प्रश्नों को पूछने की स्वतन्त्रता कहाँ है? लोकतंत्र द्वारा दी गई स्वतन्त्रता के बिना, बिन्दुओं पर किसी भी पूछताछ को ध्वंसकारी करार दिया जायेगा। इसके विपरीत, लोकतंत्र ऐसे जांचों से पोषित होता है क्योंकि सत्ता के आकांक्षी सभी प्रार्थी प्रतिस्पर्धा करते हैं और यह बहुल हितों को कैसे सर्वोत्तम रूप से प्रतिनिधित्व दिया जाए को आंकता है।

समाजशास्त्र सक्रियतावादी प्रतीत हो सकता है, या फिर नीति निर्माताओं की तत्काल रूचियों से अभिप्रेरित लग सकता है। यह विषय की गलत व्याख्या है परन्तु यह भी सच है कि लोकतांत्रिक राजनेता समाजशास्त्र से लाभ उठा सकते हैं। यदि नीति निर्माताओं को एक समस्या की पूरी तस्वीर चाहिए तो वे समाजशास्त्र की तरफ देख सकते हैं।

तथापि जब समाजशास्त्री सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के इशारे पर कार्य करते हैं, वे अपने तथ्यों/आंकड़ों को गैर–शैक्षणिक हितों के अनुरूप अपमिश्रित/दूषित करने की जोखिम उठाते हैं। समाजशास्त्र परिवर्तन की दिशा के बारे में समग्र रूप से पूछने के लिए सबसे उपयुक्त है। इससे अक्सर गर्मागर्म विवाद उत्पन्न होता है जो कि व्यापक दृष्टि को बाधित करता है। परन्तु समाजशास्त्र एक अधिक समावेशी समाज जहां अधिक भागीदारी और भिन्नताओं और त्रुटियों के लिए अधिक सहनशीलता हो, की तरफ मार्ग प्रशस्त कर मदद कर सकता है। समाजशास्त्र के हृदय में यह प्राक्कथन है कि लोग गलतियाँ करते हैं, परन्तु वे उन्हें सुधारने की भी कोशिश करते हैं। ऐसा वे पूर्व–निर्धारित साधनों के माध्यम से लक्ष्य प्राप्त कर नहीं करते हैं।

इसी प्रकार के तर्क इतिहास और दर्शनशास्त्र के लिए भी दिये जाते हैं। ईमानदारी से कहा जाए तो इतिहास वर्तमान के साथ जुनून है। हम अपने सीमित जीवन के नजरिये से भूतकाल को देखते हैं। लोकतंत्र में, बीते हुए काल की संवीक्षा/जांच हमें अतीत की खामियों को, यह पहचान कर कि कैसे पहले के युगों ने वर्तमान को प्रभावित किया है, स्वीकारने की अनुमति देती है। इसके बिना, इतिहास एक रंग हीन वृत्तान्त या एक रंगहीन संचरित्र लेखन–दोनों ही मामलों में शैक्षणिक रूप से बेकार रहता है।

इसी प्रकार दर्शनशास्त्र भी लोकतंत्र के आगमन से रूपांतरित हुआ है। ''अहम्'' जिसने अकेले ही पश्चिमी दर्शन में देसकार्टस से लेकर कान्ट तक राज्य किया, को ''दूसरे'' के लिए स्थान बनाना पड़ा–एक ऐसा रूपांतरण जिसे समझौतापरक नहीं अपितु अंगभूत के रूप में पढ़ा जाना चाहिए क्योंकि दर्शन आज स्पष्ट रूप से स्वीकार करता है कि दूसरे के बिना कोई ''स्वयं'' नहीं हैं। यदि लोकतंत्र ''दूसरो'' के लिए चिंता को द्योतित करता है और त्रुटियों की अनुमति देता हैं तो हम वास्तव में लोकतांत्रिक कानून एवं शासन के आधार स्तम्भ ''नागरिकता'', जिसमें बड़े पैमाने पर नैतिकता होती है, के बारे में बात कर रहे हैं। लोकतांत्रिक संस्थाएँ और दण्डात्मक संहिता ''दूसरों'' को नैतिक एजेन्ट के रूप में स्वीकार करने पर आधारित होती है। ये हमसे मीमांसीय तौर पर समान है और हमारे अस्तित्व के पूरक हैं।

जब ''अन्य'' इतने केन्द्रीय हो जाती है और जब ''त्रुटियों'' की स्वीकृति रूटीन है, वास्तव में हम नागरिकता की बात कर रहे हैं; समाज वैज्ञानिक नागरिकता को मजबूत करने का प्रयास कर हैं, क्योंकि ऐसा करने से वे क्रमशः अपने विषयों को ताकतवर बना रहे हैं। लोकतंत्र की ताकत को इसके सामाजिक विज्ञानों की मजबूती एवं गहनता से आंका जा सकता है। चयन की स्वतन्त्रता, ''त्रुटियों'' के प्रति खुलापन और यह समझ कि ''अन्य'' स्व को प्रभावित करते हैं ऐसी स्थितियाँ जो सिर्फ लोकतंत्रों के नागरिकों को प्राप्त होती है। फलस्वरूप सामाजिक विज्ञानों को पाश्चात्य या यूरोकेन्द्रीय के रूप में चित्रित नहीं किया जा सकता हैं

यदि कुछ करना है तो उन्हें नागरिक केन्द्रित या शायद सिटिजेन्ट्रिक विषयों के रूप में देखा जाना चाहिए। ■

दीपांकर गुप्ता से पत्र व्यवहार हेतु पता <dipankargupta@hotmail.com>

[1] I am grateful to Professor André Béteille and to Professor Deepak Mehta for comments.

[2] http://isa-global-dialogue.net/social-science-and-democracy-an-elective-affinity/

> देखभाल कार्य के वैश्विक परिप्रेक्ष्य

ब्रिजित ऑलनबाकर, जोहान्स केप्लर विश्वविद्यालय, लिंच, ऑस्ट्रिया एवं सदस्य, आई एस ए की अर्थव्यवस्था और समाज (RC02), गरीबी, सामाजिक कल्याण एवं सामाजिक नीति (RC19), कार्य का समाजशास्त्र (RC30) और समाज में महिलाएँ (RC32) की शोध समिति और उपाध्यक्ष, स्थानीय आयोजन समिति, तृतीय आई. एस. ए. फोरम ऑफ सोशियोलोजी, वियना 2016

चित्रण अरबू द्वारा

दैनिक जीवन में और जीवन पर्यन्त, परिवार और रिश्तेदारों द्वारा और देखभाल पेशेवर द्वारा, बाजार में और राज्य द्वारा या नागरिक समाज द्वारा प्रदान देखभाल एवं देखभाल कार्य, स्वयं की देखभाल और दूसरों की देखभाल : यह सभी व्यक्तियों के लिए और सामाजिक एकजुटता के लिए बुनियादी हैं। तथापि देखभाल पर शोध की एक लंबी परम्परा के बावजूद यह मुद्दा हाशिये पर है–शायद इसलिए कि देखभाल तथाकथित निजी क्षेत्र में अदृश्य और सार्वजनिक क्षेत्र में कमतर आंकी जाती है, विशेष रूप से श्रम के लैंगिक और जातीय विभाजन के फ्रेमवर्क में।

हालांकि कुछ सालों से, समाजशास्त्रियों की देखभाल और देखरेख कार्य में रूचि में वृद्धि हुई है : समाजशास्त्रीय शोध एजेण्डे में यह थीम तेजी से बढ़ रही है और समाजशास्त्री देखभाल और उसमें कायम दरारों में सामाजिक अन्तर और असमानताओं का अधिकाधिक अन्वेषण कर रहे हैं।

> देखभाल का संकट और वैश्विक स्तर पर देखभाल का अभाव

वैश्विक उत्तर की उच्च एवं मध्यम आय देशों के समाजशास्त्र में देखभाल और देखभाल कार्य में यह नई रूचि 1980 और 1990 के दशक में प्रारम्भ होने वाली प्रक्रियाओं का परिणाम है जिसमें OECD देशों में नया सार्वजनिक प्रबंधन का क्रियान्वयन और देखभाल के वस्तुकरण के साथ दैनिक जीवन में देखभाल प्रदान करने की अविरत चुनौतियाँ सम्मिलित हैं।

एक तरफ, नई तथाकथित देखभाल उद्योग पनप रहे हैं और निजी परिवार वैश्विक दक्षिण और पूर्व से प्रवासी कामगारों को अधिकाधिक नौकरी पर रख रहे हैं। दूसरी तरफ, जैसे ही दक्षिण और पूर्वी यूरोप के साथ पश्चिमी यूरोप में भी कल्याण राज्य सिकुड़ रहे हैं, 2008 पश्चात् वित्त

> >

मितव्यत्तता देखभाल का एक नया संकट का निर्माण कर रही है–ऐसा संकट जिस पर अक्सर ध्यान नहीं दिया गया, चूंकि देखभाल और देखभाल कार्य हमेशा से ही सामाजिक पुनः उत्पादन के अधीनस्थ और उपेक्षित मुद्दे रहे हैं।

परन्तु वैश्विक दक्षिण की मध्य आय वाले देशों में, पिछले दशकों में आर्थिक वृद्धि नये सामाजिक कार्यक्रमों और कल्याण राज्य के विस्तार के साथ आई हैं, देखभाल और देखभाल कार्य गरीब, बच्चों, वृद्धों या निशक्त जनों के लिए सार्वजनिक क्षेत्र सेवा के रूप में मजबूत हुआ है और आबादी के अन्य हिस्सों में भी अधिकाधिक विस्तृत हुआ है।

देखभाल और देखभाल कार्य पर वर्तमान समाजशास्त्रीय शोध इन विकास क्रमों दर्शाते हैं और वैश्विक संवाद में आगामी लेख दक्षिण उत्तर और दक्षिण के कई देशों के देखरेख व्यवस्था के बारे में अन्तदृष्टि प्रदान करते हैं।

> वैश्विक उत्तर और दक्षिण में देखभाल व्यवस्था

आगामी लेख, हमें विश्व भर में ले जा कर, कई देशों में (निजी) कुटुम्बों, परिवार और रिश्तेदार, नागरिक समाज, राज्य और बाजार के मध्य परस्पर क्रिया पर केन्द्र कर विभिन्न देखरेख व्यवस्थाओं की तुलना प्रदान करते हैं। ये लेख एक साथ, हमें समकालीन देखरेख व्यवस्थाओं में चार मुख्य अंतदृष्टि की पेशकश करते हैं। प्रथम, ये बाजारीकरण की चालू सामान्य प्रवृत्ति को उजागर करते हैं। दूसरा, ये देखभाल के वस्तुकरण और गैर–वस्तुकरण के मध्य जटिल अन्तर्क्रिया को रेखांकित करते हैं। तीसरा, ये दर्शाते हैं कि देखरेख का वस्तुकरण वैसे न सिर्फ देखभाल कार्य के संयोजन में फर्क लाता है अपितु यह कौन देखभाल प्रदान करता है और कौन प्राप्त करता है के बारे में भी प्रश्न उठाती है। अंत में, लेख देखरेख एवं देखरेख कार्य के महत्वपूर्ण रूझानों को समझने हेतु स्थानीय, राष्ट्रीय और पार एवं अंतराष्ट्रीय संदर्भों के परीक्षण का महत्व दिखाते हैं।

माईकल डी. फाइन अपने लेख में वर्णन करते हैं कि कैसे आस्ट्रेलिया की देखभाल व्यवस्था बाजारीकरण और देखभाल का राज्य–प्रबंधन के मध्य पुनर्गठित हो रही है। देखभाल प्रदाताओं के कार्य और कार्य स्थितियाँ के साथ साथ में एक उपभोक्ता के रूप में देखभाल प्राप्तकर्त्ता की अवधारणा में, व्यावसायिता और गैर–व्यावसायिकता के मध्य झूलते हुए, मौलिक परिवर्तन हो रहा है। हिल्डेगार्ड थियोबोल्ड और यायोई सायटो का स्वीडिश और जापानी देखरेख व्यवस्था का वर्णन दर्शाता है कि कैसे राष्ट्रीय नीतियां देखभाल के विचारों को हस्तांतरित और अनुकूल बनाती है और कैसे वे श्रम विभाजन के साथ संबंधित हैं। इन दो देखभाल व्यवस्थाओं में मतभेद के बावजूद, दोनों देशों में लंबे समय तक पेशेवर देखभाल सार्वजनिक देखभाल प्रावधानों को कमजोर करने वाली नीतियों से खतरा महसूस करते प्रतीत होते हैं।

रोलान्ड अजमुला, ब्रिजित ऑलनबाकर, एलमट बचिंगर, फैबीनी डिस्यु और बर्गित रिग्राफ ऑस्ट्रिया और जर्मनी के कल्याण राज्य से विनिवेश राज्य के मार्ग के बारे में अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं जहां वे देखरेख को एक विवादास्पद क्षेत्र और घरेलू, पेशेवर देखरेख, सामाजिक प्रतिरोध और देखरेख की वैकल्पिक अवधारणा में प्रवासी कार्य को आकार देते हुए चित्रित करते हैं। मोनिका बुडोवस्की, सेबास्टियन शैफ और डेनियल वेरा चिलि, कोस्टारीका और स्पेन की देखरेख व्यवस्थाओं की तुलना प्रस्तुत करते हैं और दर्शाते हैं कि कैसे बाल्य देखभाल की व्यवस्था, आर्थिक रूप से अनिश्चित घरों में पुरूषों एवं महिलाओं के मध्य श्रम–विभाजन, कल्याण राज्य का मुख्य देखरेख प्रदाताओं के रूप में बाजार, परिवार या राज्य के प्रति अभिमुखन से आकार लेता है। ऐलिना मूर और जैरेमी सिकिंग्स दक्षिण अफ्रीका के कल्याण राज्य के इतिहास का पुनर्निमाण करते हैं और रंगभेद से रंगभेद–पश्चात् शासन व्यवस्था में ऐतिहासिक परिवर्तन पर जोर डालते हैं। AIDS, अनाथापन जैसी समस्याओं का सामना और वृद्धों एवं बच्चों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, राज्य देखरेख प्रावधानों में केन्द्रीय है परन्तु दक्षिण अफ्रीका की समकालीन देखरेख व्यवस्था में परिवार, सम्बन्धी और हाल ही में बाजार भी महत्व पूर्ण तत्व हैं। संक्षिप्त में, लेख भिन्न देशों में देखभाल के विभिन्न संदर्भों एवं बढ़ते हुए वस्तुकरण के परिणामों की तरफ इंगित करते हैं।[1] ■

ब्रिजित ऑलनबाकर से पत्र व्यवहार हेतु पता
<brigitte.aulenbacher@jku.at>

[1] **For these and further insights on care and care work from around the world see the special issue:** *Soziale Welt* **(Sonderband 20), "Sorge: Arbeit, Verhältnisse, Regime" [Care: Work, Relations, Regimes], 2014 (edited by Brigitte Aulenbacher, Birgit Riegraf, and Hildegard Theobald).**

> ऑस्ट्रेलिया में देखरेख सेवाओं का एक बाजार के रूप में पुनः संरचना

माईकल डी. फाइन, मेक्वेरी विश्वविद्यालय, सिडनी, आस्ट्रेलिया एवं आई. एस. ए. की प्रोढ़ों का समाजशास्त्र की शोध समिति (RC11) के सदस्य

बच्चों की देखभाल पर एक महत्वपूर्ण अलाभकारी क्षेत्र, ऑस्ट्रेलिया में इसे एक सेवाओं के खरीदने और बेचने वाले लाभकारी व्यवसाय के रुप में देखा जा सकता है।

Walzing Matilda, एक बेघर स्वागी जो कार्य की तलाश में आस्ट्रेलिया के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में अपने बिछौने को (मटिल्डा को नचाते हुए) ले कर घूमता है, के बारे में एक भ्रामक खुशनुमा गीत है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आस्ट्रेलियाई के रूप में मान्यता, प्राप्त, यह उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में इस देश की अर्थव्यवस्था में प्रभुत्व वाली औद्योगिक पैमाने की भेड़पालन खेती को सेवा देने वाली घूमन्तू जीवन शैली का प्रतीक है। उसी काल का एक ओर आस्ट्रेलिया का बढ़िया लोक गीत, Past Carin, नये जमाने/युग का थीम बन सकता है जैसे जैसे देखभाल के पुनः संरचित और बाजारी प्रावधान दैनिक स्तर पर निजी देखभाल की आवश्यकता वालों को प्रदान की जाने वाली सहायता को ज्यादा से ज्यादा आकार देंगे। हेनरी लॉसन के शब्दों, जिन पर यह गीत आधारित है, के अनुसारः

Past weareyin' or carin'
Past feelin' or despairing';
And now I only wish to be
Beyond all ligne of Carin'.
(http://www.youtube.com/watch?v=qqpqht2ph04)

थकान या देखभाल के परे
भावना और निराशा के परे;
और अब सिर्फ मेरी इच्छा
देखभाल के सभी प्रतीकों से दूर जाने की है।

उत्तरोत्तर आस्ट्रेलियाई सरकारों, लेबर एवं लेबर–नेशनल दोनों, ने सामाजिक देखभाल के कार्यक्रमों के विस्तार एवं विकास के लिए जन समर्थन चाहा है। परन्तु नव–उदारवाद और वित्तय मित्यव्यत्ता के इस युग में उन्होंने वृद्धि का एक नया टेम्पलेट तैयार किया है जिसमें सार्वजनिक और गैर–लाभ सेवाएँ बाधित होती है जबकि इन सेवाओं का बाजार प्रोत्साहित होता है। सेवा उपयोगकर्ताओं को ''उपभोक्ता'', जिसे जहाँ संभव है अपनी जेब से भुगतान करना पड़ता है, के रूप में ढ़ाला जाता है।

> देखभाल : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण का विकास

हम जानते हैं कि चारों तरफ मानव जीवन में देखभाल आवश्यक है। तथापि देखभाल की समझ एक विषयगत अन्ध बिन्दु रहती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक अत्यन्त आधारभूत या सांस्कृतिक पार तुलना से, यह स्पष्ट है कि जिस तरह से

>>

देखभाल कार्य संयोजित होता है, वह समाज की आंतरिक कार्यप्रणाली को दर्शाता है। अतः देखभाल कार्य का विश्लेषण हमें एक सशक्त सामाजिक नैदानिक उपकरण प्रदान करता है। यह वह तरीका है जिसे माध्यम से सर्वाधिक कमजोर के सामाजिक सम्बन्धों के साथ साथ शक्ति की सामाजिक संरचना एवं व्यवस्था को समझ सकते हैं।

यद्यपि, साधारण तौर पर महिलाओं से अवैतनिक, परिवार के अन्दर, देखभाल कार्य प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है, बीसवीं सदी में परिवार के परे देखभाल कार्य का महत्व विशाल पैमाने पर बढ़ गया है। घर के बाहर महिलाओं के रोजगार में वृद्धि के साथ ही परिवार के बाहर देखभाल कार्य की मांग बढ़ गई है। अन्य जगहों की तरह, आस्ट्रेलियाई सरकार को औपचारिक, सवैतनिक देखभाल तक पहुंच मुहैया करानी पड़ी है।

चुनौतीपूर्ण आर्थिक स्थितियों के बावजूद, आस्ट्रेलिया ने देखभाल के औपचारिक प्रावधानों में उल्लेखनीय विस्तार किया है। इस स्थानांतरण के द्वारा देखभाल के संयोजन और प्रावधानों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। ये परिवर्तन नवजात और शिशु देखभाल से लेकर निशक्तता समर्थन प्रौढ़ देखभाल प्रबंधन तक अपेक्षाकृत विशेषीकृत क्षेत्रों में हुए हैं। यद्यपि देखभाल के प्रत्येक क्षेत्र की विशिष्ट विशेषताएँ हैं, इन विशेषताओं को बड़े रूपांतरण को या फिर उन सामान्य तत्वों को जो कार्य के मांग और सरकार एवं बाजार द्वारा प्रत्युत्तर के रेखांकित करते हैं, को दुरूह नहीं करना चाहिए।

> प्रौढ़ एवं निशक्तता देखरेख

आस्ट्रेलिया में सरकारी खर्चों को सीमित करते हुए, बुढ़ाती जनसंख्या की आवश्यकता को देखते हुए प्रौढ़ों की देखरेख में परिवर्तन किया है। ये परिवर्तन प्रौढ़ देखभाल के सुधार और विस्तार के लगभग 50 वर्षों पर आधारित हैं लेकिन ये व्यवस्था के मुख्य तत्वों को आधारभूत बुनियादी रूप से बदलना चाहते हैं। ऐसा वे सभी प्रकार एवं स्तरों के सेवा के लिए उच्चतर शुल्क लगा कर करते हैं। अब सेवाओं प्रदाताओं में बाजार के सिद्धान्तों पर अधिक निर्भरता और लाभ हेतु सेवा प्रदान करने वाले निजी प्रदाताओं को प्रोत्साहन पर अधिक भरोसा है।

पूर्व के कार्यक्रमों के उल्टे/विपरीत, नया गृह सहायता कार्यक्रम पूर्णतः राष्ट्रीय है और आस्ट्रेलिया के राज्यों के अन्दर इसमें बहुत कम भिन्नता है। आस्ट्रेलिया का निशक्तजन देखरेख सुधार भी निशक्तजनों की बढ़ती संख्या एवं देखरेख की आवश्यकता और साथ ही कुछ राज्य अधिकार क्षेत्र द्वारा पूर्व में असमतल और अपर्याप्त सेवाएँ प्रदान करने के बारे में मानवतावादी चिंता के फलस्वरूप एक राष्ट्रीय कार्यक्रम की शुरूआत करता है।

प्रौढ़ देखरेख के सुधारवादी कार्यक्रम की भांति व्यक्तिगत भुगतान जिसे उपभोक्ता निर्देशित देखरेख दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है–सेवा प्राप्तकर्ता सेवाएँ खरीदने हेतु अपने पैसे पर नियन्त्रण दे देते हैं। यह सुधार निशक्तजनों, बौद्धिक निशक्तता युवा बच्चों जो पारिवारिक देखभाल पर निर्भर रहते हैं, के अभिभावक देखभाल कर्त्ता–विशेष रूप से उनकी माँ, या कमजोर बूढ़े माता–पिता, के लिए विशेष रूप से आकर्षक है।

दोनों कार्यक्रमों में सेवाओं को नकद भुगतान से बदलने का प्रयोजन, सेवा बाजार के विकास और लाभ हेतु सेवा को प्रोत्साहित करना है। यह आकस्मिक रोजगार को भी घेरेगा और कर्मचारियों एवं सरकारी और गैर–लाभ सेवाओं की कार्य की स्थितियों पर काफी प्रभाव डालेगा।

> बच्चों की देखरेख

आस्ट्रेलिया पहला अंग्रेजी बोलने वाला देश था जिसने 1970 और 1980 के दशक में बाल देखभाल सेवाओं हेतु एक राष्ट्रीय कार्यक्रम विकसित किया था। प्रारम्भ में सभी सेवा प्रदाता गैर–लाभ वाले थे, परन्तु 1990 के दशक में लाभ–हेतु प्रदाता प्रारम्भ किये गये। वित्त पोषण प्रणाली, साधन–परीक्षण अनुदान और विनियमन का एक सीमित रूप, बढ़ती फीस के साथ रखने के लिए विस्तार करने में विफल रहा है और कई परिवार बच्चा–देखभाल प्राप्त करने में असमर्थ रहे हैं। वर्तमान की लिबरल सरकार द्वारा प्रस्तावित सुधार उपलब्ध पैसे/कोष का पुनः वितरण करेंगे और प्रावधान बढ़ाएंगे परन्तु वे अनुदान को मातृत्व रोजगार से मजबूती से जोड़ेंगे।

ऊपर वर्णित प्रत्येक कार्यक्रम परिवार–आधारित देखभाल को सवैतनिक औपचारिक सेवा से प्रतिस्थापित करता है। अमरीका को छोड़ कर प्रत्येक OECD देश में काम में लिया जाने वाला वैकल्पिक उपागम, सार्वजनिक रूप से पोषित सवैतनिक पितृत्व अवकाश है। 2011 में अन्ततः, आस्ट्रेलिया में एक राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू हुआ, परन्तु योग्यता को सीमित करने वाली और कार्य–सम्बन्धित लाभ उठाने वाले कर्मचारियों के बाहर रखने के बाद, कुछ ही वर्षों बाद संक्षिप्त कर दिया गया।

> नये देखरेख टेम्पलेट/ प्रारूप के लिए चुनौतियाँ

प्रारंभिक कल्याण कार्यक्रम देखरेख की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने में परिवारों की सीमित क्षमता और बाजारों की प्रतिक्रिया करने में विफलता का प्रत्युत्तर दे रहे थे। आज, राजनेता नियमित, राज्य–समर्थित देखरेख का बाजार पर आधारित वैकल्पिक व्यवस्था के सृजन के आकांक्षी है। आस्ट्रेलिया में उभरने वाले विभिन्न नियमन वाले बाजार सरकार की प्रत्यक्ष लागत को कम करने का वादा करते हैं। ऐसा वे सरकारी निधियन को परिवारों द्वारा साधन–परीक्षण भुगतान और लाभ प्रदाताओं द्वारा प्रदित कम–लागत वाली सेवाओं के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली ''कार्यकुशलता'' से प्रतिस्थापित कर करेंगे। परन्तु जहां यह दृष्टिकोण प्राप्तकर्ता को ''चयन'' की अधिक सुविधा प्रदान कर कुछ आकर्षक है, यह देखरेख की प्राप्तकर्ता और सेवा कर्मचारी, जिनमें से कई कार्य की स्थितियों में कमी और कैरियर की संभावनाओं में हानि का सामना करते हैं, के लिए सुरक्षा की विशेष समस्याएँ भी प्रस्तुत करता है।

समाशास्त्रियों के लिए भी चुनौती काफी बड़ी है। सिद्धान्त के परे जाने के लिए, हमें देखरेख की इस नयी व्यवस्था की कार्य प्रणालियों को भी समझना होगा।

> दूसरी तरफ

ऐसा हम एक तरफ तो तो हमें भुगतान, निष्ठा और इन विभिन्न तरीकों का निजी और परिवार आधारित अतरंगता के लिए प्रेरणा हेतु देखरेख प्रणाली के परिणामों का और दूसरी तरफ भुगतान रोजगार का दस्तावेजीकरण एवं विश्लेषण करके कर सकते हैं। ■

माईकल डी. फाइन से पत्र व्यवहार हेतु पता
<michael.fine@mq.edu.au>

> दीर्घावधि देखभाल

स्वीडन और जापान की तुलना

हिल्डेगार्ड थियोबोल्ड, वेक्ता विश्वविद्यालय, जर्मनी एवं सदस्य प्रौढ़ता, (RC11) गरीबी, सामाजिक कल्याण और सामाजिक नीति (RC19) की शोध समिति और **यायोई सायटो,** ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

जापान में वयोवृद्धों का जीवनयापन
चित्र पिया किन्निगर द्वारा

1980 के दशक से, कई पश्चिमी देशों में दीर्घकालिक, देखरेख की नीतियों को व्यापक रूप से पुनसंरचित किया गया जिसका देखरेख प्राप्तकर्त्ता और देखभाल सेवा कमियों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। देशों ने अक्सर नीति उपायों को एक दूसरे से उधार पर लिया है। यद्यपि स्वीडन और जापान में दीर्घकालिक देखभाल के कार्यक्रम विभिन्न कल्याण व्यवस्थाओं और पारिवारिक उत्तरदायित्व के विचारों/सिद्धान्तों के फ्रेमवर्क में स्थापित हुए थे, दीर्घकालिक देखभाल की नीतियों के विकास में विशिष्ट भूमिका निभाई हैं।

स्वीडन में, 1960 के दशक के प्रारम्भ से ही, बुजुर्ग लोगों की सामाजिक देखभाल के प्रति उन्मुख सार्वभौमिक सार्वजनिक सेवा मॉडल को क्रमशः नगरपालिका स्तर पर विस्तृत किया गया। यह तब 1982 में समाज सेवा के राष्ट्रीय कानून द्वारा औपचारिक नियमित था। कानून सहायता के सामान्य अधिकार की गारंटी देता है। यद्यपि कानून में योग्यताओं या विशिष्ट सेवाओं के बारे में विस्तृत नियमों का अभाव है, वह स्थानीय अधिकारियों को देखरेख की आवश्यकताओं को पूरी करने की जिम्मेदारी दे कर ऐसा करता है। 1980 के दशक के बाद से, वित्तीय बाधाओं और जनसांख्यिकीय परिवर्तन का अर्थ है कि सार्वजनिक सेवाओं के उत्तरोत्तर सबसे अधिक आवश्यकता वाले लोगों के प्रति लक्षित होने से उसके कार्यक्षेत्र में क्रमश कमी आई है। 2012 में 65 वर्ष या उससे अधिक उम्र का 9% सार्वजनिक घरेलू देखरेख सेवाओं का इस्तेमाल कर रहे थे, जबकि 5% आवासीय देखभाल सुविधाओं में रहते थे। हालांकि, अंतर्राष्ट्रीय परिपेक्ष्य से, प्रदत्त सेवाओं की रेंज अपेक्षाकृत ऊंची बनी हुई है, और निजी सह–भुगतान देखरेख की कुल लागत का तकरीबन 5% ही पूरा करती है।

जापान में भी बुजुर्ग लोगों की सहायता करने के लिए सार्वजनिक सेवाएँ 1960 के दशक में प्रारम्भ की गई थी, यद्यपि ये

>>

सेवाएँ अकेले रहने वाले बुजुर्ग तक सीमित थी और कार्यक्रम का साधन–परीक्षण किया गया था। पारिवारिक उत्तरदायित्व और प्रतिबंधात्मक सामाजिक अधिकारों पर जोर ने घरेलू देखभाल की सेवाओं को सीमित किया। यद्यपि, 1989 के बाद से, ''बुजुर्गों के कल्याण और स्वास्थ्य देखरेख को प्रोत्साहित करने की दस–वर्षीय रणनीति'' (स्वर्ण योजना) ने स्वीडिश स्थानीय सार्वजनिक सेवा मॉडल का अनुसरण करते हुए नगर निगत स्तर पर कर–आधारित गृह सहायता सेवाएँ दी। हालांकि, घरेलू सहायता सेवाओं के विस्तार की बाधाओं, नगर निगम के सीमित साधन और कर–वृद्धि, के प्रति जापानी आबादी के गंभीर रूख ने 2000 में सार्वभौमिक दीर्घावधि देखरेख बीमा की शुरूआत में योगदान दिया। इसमें कर और सामाजिक बीमा वित्त पोषण का मिश्रण था। LTCI के ढ़ाँचे के अन्तर्गत, कार्यक्रम ने गंभीर और मामूली आवश्यकताओं वाले अधिक उम्र के व्यस्कों के लिए आवासीय देखभाल और गृह–सहायता सेवाएँ प्रदान की। इसने लाभार्थियों की संख्या में काफी वृद्धि की। 2011 में, 65 वर्ष या उससे अधिक उम्र के व्यस्कों के लगभग 13% ने दीर्घावधि तक देखरेख सेवाएँ प्राप्त की। इसमें से 4.4% ने गृह–सहायता सेवाओं को प्राप्त किया, 5.4% ने डे–केयर केन्द्र में भाग लिया और 3% आवासीय देखभाल सुविधाओं में रह रहे हैं। अप्रेल 2015 में, एक नये सुधार ने गंभीर देखरेख की आवश्यकता वाले अधिक उम्र के वयस्कों के लिए सार्वजनिक समर्थन जुटाने की चेष्टा की। इस सुधार कार्यक्रम ने उच्च आय बुजुर्गों के लिए सह–भुगतान को लागत के 10% से 20% कर दिया।

यद्यपि, स्वीडन और जापान दोनों में सेवा प्रावधानों का बाजारीकरण हुआ है, यह अभी भी सरकार द्वारा पोषित है। स्वीडन का पूर्व में अच्छे से स्थापित सार्वजनिक आवासीय और गृह आधारित देखरेख का बुनियादी ढाँचा 1990 के दशक में निजी गैर या लाभ के लिए प्रदाताओं के लिए खोल दिया गया था। प्रारम्भ में, बाजारीकरण मुख्य रूप से लाभ हेतु प्रतिस्पर्धा पर आधारित प्रदाताओं को सार्वजनिक देखभाल प्रावधानों को आउटसोर्स करने पर आधारित था परन्तु, आज, नगर निगम स्तर पर उपभोक्ता चयन मॉडल बहुत आम है। इन कार्यक्रमों में नगरपालिकाएँ भिन्न निजी एवं सार्वजनिक प्रदाताओं का पंजीयन करती हैं और लाभार्थी अपना प्रदाता का चयन कर सकते हैं। 2012 तक, घर की देखभाल और आवासीय देखभाल का लगभग 20% बड़ी श्रंखला द्वारा संचालित लाभ हेतु प्रदाताओं के हाथों में था।

जापान में, LTCI ने गृह देखभाल में सार्वजनिक लाभ हेतु और गैर–लाभ प्रदाताओं के मध्य प्रतिस्पर्धा द्वारा संगठित एक बाजार को खोला, अन्य शब्दों में उपभोक्ता चयन पर आधारित एक मॉडल/आवासीय देखभाल की सेवाएँ, यद्यपि, अभी भी सार्वजनिक या गैर–लाभ संगठनों द्वारा प्रदान की जाती हैं। नगरपालिकाएँ LTCI के माध्यम से वित्त और कर वित्तपोषण को आरक्षित कर व्यवस्था को चलाती है, जबकि प्रशासक प्रान्त देखभाल प्रदाताओं और अतिरिक्त कर वित्त पोषण को अधिकृत करते हैं। सार्वभौमिक LTCI की शुरूआत के कारण गृह–सहायता सेवा प्रदाताओं के विस्तार से लाभान्वितों की हिस्सेदारी 2000 में 30% से 2012 में 63% की वृद्धि हुई।

सार्वजनिक सहायता में इन बदलावों परिवर्तनों के साथ, देखभाल के बुनियादी ढाँचे और बाजार उन्मुख सुधारों के (गैर) विस्तार, देखभाल कामगारों की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, विशेष रूप से गृह–सहायता सेवा प्रदाताओं द्वारा नियोजित में। दोनों देशों के गृह सहायकों की स्थिति में हाल ही की जांच में देखभाल कार्य में उच्च स्तर का मानकीकरण और उच्च कार्यभार का पता चला। दोनों देशों के गृह सहायक ने रिपोर्ट किया कि उनके कार्य अधिकांशतः पहले ही उच्च दबाव वाली समय–सारणी में तय हो जाते हैं परन्तु वे इस पुनर्गठन को देश–विदेश घटनाक्रम की पृष्ठभूमि के सामने/सम्मुख देखते हैं। स्वीडन में, सार्वजनिक दीर्घकालिक देखभाल सहायता के क्रमिक ह्रास, देखभाल प्रावधानों के संकीर्ण समय फ्रेम के साथ मौजूदा देखभाल के बुनियादी ढाँचे की बाजार उन्मुख पुनर्गठन, प्रचलित मानदण्डों का उल्लंघन करते हैं जिनकी देखभाल कर्मियों तगड़ी आलोचना करते हैं। जापान में, देखभाल कर्मियों ने समान घटनाक्रम को इतना नकारात्मक रूप में नहीं लिया है क्योंकि देखभाल सेवाओं और सार्वजनिक सहायता में विस्तार बाजार उन्मुख पुनर्गठन के समय ही हुआ। हालांकि, दोनों देशों में, देखभाल कर्मियों का लगभग 40% से अधिक, अपनी नौकरी छोड़ने का विचार कर रहे हैं। यह कार्य की स्थितियों के साथ उनके असंतोष का खुलासा करता है। जापान में, असंतोष मुख्यतः देखभाल के भारी बोझ और कम वेतन से उपजता है, जबकि स्वीडन में कार्यक्रम संबंधी परिवर्तन कर्मियों के असंतोष का स्त्रोत है। ■

हिल्डेगार्ड थियोबोल्ड से पत्र व्यवहार हेतु पता <hildegard.theobald@uni-vechta.de>
यायोई सायटो से पत्र व्यवहार हेतु पता <ysaito@hus.osaka-u.ac.jp>

> ऑस्ट्रिया और जर्मनी में देखभाल कार्य का बदलता चेहरा

रोलैंड अजमुला, योहानेस केप्लर युनिवर्सिटी लिंज और गरीबी, सामाजिक कल्याण और सामाजिक नीति पर ISA शोध समिति के सदस्य (RC19); **ब्रिगिते ऑलनबाकर**, योहानेस केप्लर युनिवर्सिटी लिंज और अर्थव्यवस्था और समाज पर ISA शोध समिति (RC02), RC19, कार्य का समाजशास्त्र (RC30), और समाज में महिलायें (RC32) के सदस्य, और Third ISA Forum of Sociology, वियना, 2016 की स्थानीय संगठन समिति के उपाध्यक्ष; **एलमट बचिंगर**, इंटरनेशनल सेंटर फॉर माइग्रेशन पॉलिसी डवलपमेंट, वियना, ऑस्ट्रिया; **फैबीनी डिस्यू**, योहानेस केप्लर युनिवर्सिटी लिंज, ऑस्ट्रिया; **बर्गित रिग्राफ**, यूनिवर्सिटी ऑफ पाडेरबोर्न, जर्मनी और RC02, RC19, RC30 और RC32 के सदस्य

एक आस्ट्रियन बाल विहार में विशिष्ट परिस्थिति। चित्र आस्ट्रिया की ऑरबेटेकेमर ओबेरोस्टेरिच द्वारा

ऑस्ट्रिया और जर्मनी, पूर्वीय यूरोप के साथ सीमा पर दो आर्थिक रूप से शक्तिशाली पश्चिमी यूरोपीय देश, जो कि रूढिवादी कल्याणकारी राज्य माने जाते है, वर्तमान में आधारभूत पुनर्गठन की प्रक्रियाओं से गुजर रहे हैं। दोनों देखभाल और देखभाल कार्य के क्षेत्र में बढती मांग, दायित्वों और लागत का सामना कर रहे हैं, मुख्यतः वृद्ध देखभाल और बाल देखभाल में; दोनों इन दायित्वों को निजी घरों और व्यवसायिक क्षेत्रों में पूरा करते हैं।

> >

पहली मई – श्रम का अदृश्य दिन! लोकप्रिय जर्मन अभिनेत्री इडा शुमेचर की मूर्ती, जो कि अदृश्य कार्यों को प्रस्तुत करती है।
चित्र ब्रिगित अर्बे द्वारा

> प्रवासी कामगारों का शोषण

जर्मनी और ऑस्ट्रिया में अधिकतर देखभाल परिवारों में, मुख्यतः महिलायों द्वारा, मुफ्त प्रदान की जाती है। हालांकि महिलाओं की श्रम बाजार में बढती भागीदारी और आजीविका के वैकल्पिक रूपों का मतलब है कि परिवार अब और अधिक एक स्थिर संरचना नहीं माना जा सकता है, सरकारी "देखभाल–के लिय–नकद" नीतियों का उददेश्य मौद्रिक प्रोत्साहन और कर लाभों के माध्यम से इसे बनाये रखना है। जर्मनी और ऑस्ट्रिया में, दूसरे देशों की तरह ही, प्रवासी महिलायें प्राय तीन "सी" /कार्यों में नियुक्त होती हैंः सफाई, देखभाल, और घर में खाना पकाना। यह व्यवस्था लिंगों के मध्य परंपरागत श्रम विभाजन को अछूता छोड देती है, और सार्वजनिक क्षेत्र में देखभाल कार्य की मांग को राहत देती है।

ऑस्ट्रिया और जर्मनी की सीमा स्थिति, पूर्व और पश्चिम की आय की असमानता, और पूर्वी यूरोप में कुशल कर्मियों की बडी संख्या की उपस्थिति, मुख्यतः इन देशों से प्रवासी महिलाओं के रोजगार को बढावा देती है। तथाकथित 24 घंटे की देखभाल को नियमित करने के लिये, ऑस्ट्रिया ने घरेलु कार्य के इस रूप को कानूनी करने का निर्णय लिया। जर्मनी में, घरेलु क्षेत्र में प्रवासी श्रमिकों में कानूनी, अर्द्ध–कानूनी और गैरकानूनी निवास और रोजगार शामिल है। ऑस्ट्रिया में राजनीतिक रूप से वांछित और सब्सिडी दिये जाने वाले और जर्मनी में अनौपचारिक रूप से सहन किये जाने वाले, लिव–इन रोजगार स्थापित हो गये हैं हालांकि ये दोनों देशों के रोजगार मानकों के नीचे है। सामाजिक अलगाव और कम आय के साथ चौबीस घंटे की उपलब्धता और अधिक कार्यभार, मालिक के घर में रहने वाली प्रवासी महिलाओं के कार्य को आकार देते है।

ऑस्ट्रिया और जर्मनी में, एक ओर कल्याणकारी राज्य और दूसरी ओर प्रवासी श्रमिकों की मदद से, मध्यमवर्गीय परिवार जरूरी देखभाल प्राप्त करने मे सक्षम हैं। पूर्वी यूरोपीय देशों में, तो भी, आपूर्ति में एक नयी समस्या उभर रही है, जैसे कि प्रवासी महिलाओं के रिश्तेदार जो पीछे रह जाते हैं उनकी देखभाल का अभाव हो जाता है। प्रवासी महिलायें अक्सर, ऑस्ट्रिया या जर्मनी के घरों में जहां उनको देखभाल कार्य के लिये वेतन मिलता है और उनके अपने देश में, जहां वे अवैतनिक प्रजनन कार्य करती है, के बीच में घूमती रहकर दो घरों की सेवा करती है।

> सार्वजनिक क्षेत्र में देखभाल कार्य

विशेष रूप से 2008 के वित्तिय संकट और फलस्वरूप मितव्ययता योजनाओं के बाद से, वृद्ध देखभाल और बाल देखभाल में व्यवसायिक देखभाल कार्य बहुत दवाब में आ गये, क्योंकि क्षेत्र के काफी बडे बाजार में निजि प्रदाताओं ने प्रतिस्पर्धा करना शुरू कर दिया है। इसके अलावा, नये सार्वजनिक प्रबंधन के साथ तार्किकीकरण और पुनर्गठन के उपायों का अर्थ ये हुआ कि उनको आर्थिक रूप से अधिक कुषल बनाते हुये कार्यस्थल और कार्य प्रक्रियायें सुव्यवस्थित हो गयी हैं, जो कि अच्छी देखभाल के विरोधी है। वृद्ध देखभाल में, अनियमित कार्य योजनायें मानसिक देखभाल और यहां तक कि शारीरिक सहयोग को सुरक्षित करना मुश्किल कर देती हैं। किंडरगार्टन में, शिक्षा के माध्यम से बाल देखभाल कार्य के उन्नति के वादे समस्यात्मक स्थितियों के कारण रह जाते हैं जैसे कि कक्षा का बडा आकार।

वृद्ध देखभाल और बाल देखभाल के क्षेत्र लंबे समय से "हडताल–प्रतिरोधी" माने जाते है, क्योंकि श्रमिक उनकी देखभाल में रहने वाले लोगों को बिना सेवा छोडने के लिये अक्सर अनिच्छुक रहते हैं। परंतु यह गत्यात्मकता/स्थिति बदलना शुरू हो

> >

गयी है: जर्मनी में वर्तमान में किंडरगार्टन शिक्षक बेहतर वेतन और कार्य परिस्थितियों और व्यवसायिक प्रस्थिति मे सुधार के लिये हडताल पर हैं। 2009 में इस प्रकार की हडताल ऑस्ट्रिया तक फैल गयी: ऑस्ट्रिया का "Kollektiv Kindergartenaufstand" (सामूहिक किंडरगार्टन उपद्रव) जर्मनी की हडतालों की अंतिम लहरों के बाद शुरू हुआ। समूह ने बाल देखभाल में बदतर कार्य और रोजगार परिस्थितियों की ओर ध्यान लाने के लिये कार्रवाई के वैकल्पिक स्वरूपों का उपयोग किया।

किंडरगार्टन और वृद्ध देखभाल में हडतालकर्मीयों को संघों के समर्थन के साथ, ऑस्ट्रिया और जर्मनी, दोनों में नागरिक और सामाजिक आंदोलन कार्रवाई और गठबंधनों के नये रूप उभर रहे हैं। केयर मोब, केयर रिवोल्यूशन, केयर मैनिफेस्टो जैसी पहलों में राजनीतिक मांगों के साथ देखभाल कार्य संगठनों की आलोचना जुडी हुयी हैं जिसमें पूंजीवाद की एक आधारभूत आलोचना और अच्छे जीवन की वैकल्पिक दृष्टि के प्रस्ताव शामिल है।

उसी समय, हालांकि, देखभाल क्षेत्र में तार्किकीकरण और नया सामाजिक ध्रुवीकरण और नया श्रम विभाजन साथ साथ हुआ है, उदाहरण के लिये देखभाल प्रबंधन और देखभाल करने वालों के मध्य संभावित एकजुटता कमजोर हुई है।

> देखभाल की वैकल्पिक अवधारणायें

अंत में, यहां नये प्रस्ताव हैं जो देखभाल कार्य के समुचित संगठन प्रस्तावित करते हुये समाज की बढती हुई देखभाल आवश्यकताओं की पूर्ति करने के उददेश्य रखते हैं। 1990 से विकसित हुये प्राथमिक रूप से डिमेंशिया रोगीयों की सेवा करने वाली स्थानीय प्रशासित आवासीय देखभाल समुदायों ने परिवार देखभाल और नर्सिंग होम्स दोनों के लिये विकल्प की पेशकश करने की कोशिश कर रहे हैं।

स्थानीय आवासीय देखभाल समुदाय सामान्यतः परिवार के सदस्यों द्वारा आयोजित होते हैं जो कुछ देखभाल कार्य उपलब्ध कराना जारी रखते हैं जब गतिशील सेवा प्रदाता आराम पर होते हैं। सहयोग पूर्ण जीवन के इस संस्करण का निर्माण परिवार के मॉडल पर आधारित है परंतु ये सवेतन कार्य है। इस तरह की अधिकतर व्यवस्थायें, कुशल कर्मियों को इन–पेशेंट देखभाल द्वारा दी जाने वाली अनुमति की तुलना में उनका व्यवसायिक कार्य एक अधिक संतुष्टिपूर्ण तरीके से संचालित करने का अवसर प्रदान करने की मध्यमवर्गीय परियोजनायें हैं। परंतु इन परियोजनाओं के लिये सीमित पूंजी अक्सर अनिश्चित रोजगार संबंधों की ओर ले जाती है: योग्य कर्मचारी सिर्फ अंशकालिक कार्य करता है जबकि अनिश्चित रूप से कार्यरत कर्मचारी, अधिकतर प्रवासी महिलायें, सेवक वाले कार्य करती हैं। हालांकि ये दृष्टिकोण देखभाल कर्मियों के लिये ना ही बदतर वेतन और ना ही निम्न सामाजिक पहचान को संबोधित करता है, यह स्पष्ट रूप से कम से कम कानूनी रोजगार संबंधों को पेश करने पर दवाब को प्रतिबिंबित करता है।

> देखभाल कार्य एक प्रतिस्पर्धात्मक क्षेत्र के रूप में

देखभाल क्षेत्र में ये घटनाक्रम, पश्चिम यूरोपीय कल्याणकारी राज्यों के पुनर्गठन से जुडे हुये ध्रुवीकरण प्रभाव पर प्रकाश डालते हैं। बाद वाला केवल राजकोषीय मितव्ययता के दवाब में ही नहीं आये हैं। कल्याणकारी गतिविधियों के पुनर्गठन को आर्थिक विकास और (अंतर्राष्ट्रीय) प्रतिस्पर्धा के दृष्टिकोण से उत्पादक बनाने की आवश्यकता है। एक ओर वृद्धों के लिये कथित तौर पर "अनुत्पादक" व्यय को अधिक या कम अनौपचारिक नृजातीय स्तरीकृत देखभाल व्यवस्थाओं के रूप में उजागर किया गया है। दूसरी ओर आर्थिक अनिवार्यताओं के प्रति कल्याण की बढती परतंत्रता, देखभाल कार्य के कुछ हिस्सों को, उदाहरण के लिये बाल देखभाल में, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और युवा लोगों के भविष्य की कैरियर संभावनाओं में एक निवेश में परिवर्तित कर देती है। हालांकि, हमारा उदाहरण दिखाता है कि व्यक्तिगत देखभाल, योग्य कार्य और सामाजिक एकजुटता में गिरावट देखभाल कार्य के संगठन के विभाजनकारी तरीकों से संबंधित है। इसके अलावा, ये उदाहरण दिखाता है कि कल्याणकारी राज्य से निवेश राज्य तक की राह ने विरोधों को उकसाया है जो देखभाल कर्मियों के साथ साथ प्राप्तकर्ताओं को संगठित करने और देखभाल को सामाजिक कल्याण का एक प्रतिस्पर्धात्मक क्षेत्र बनाना चाहते हैं। ■

ब्रिगिते ऑलनबाकर से पत्र व्यवहार हेतु पता
<brigitte.aulenbacher@jku.at>
बर्गित रिग्राफ से पत्र व्यवहार हेतु पता
<briegraf@mail.uni-paderborn.de>

> चिली, कोस्टारिका और स्पेन की अस्थिर परिस्थितियों में घरेलू देखभाल कार्य

मोनिका बुडोवस्की, फ्रीबोर्ग विश्वविद्यालय, स्वीटरजरलैंड एवं आई.एस.ए. की अर्थव्यवस्था एवं समाज (RC02), गरीबी, समाज कल्याण एवं सामाजिक नीति (RC19) और सामाजिक सूचक (RC55) की शोध समिति; **सेबास्टियन शैफ**, फ्रीबोर्ग विश्वविद्यालय, स्वीटजरलैंड; **डबल्यू. डेनियल वेरा रोजास**, वेल पराइसों का पोंटिफिकल कैथोलिक विश्वविद्यालय, चिली[1]

कोस्टारिका में अनिश्चित जीवन।
चित्र डब्ल्यू. डेनियल वेरा रोजास द्वारा

समाज देखभाल को भिन्न तरीकों से संयोजित करते हैं। परिवार एवं घर के सदस्य, विशेष तौर पर महिलाएँ अधिकांश देखभाल प्रदान करते हैं; परन्तु देखभाल किस प्रकार से आयोजित की जाती है यह राज्य–प्रदान सेवाओं, बिकाऊ सेवाओं और समुदाय समर्थन पर भी निर्भर होता है। हमारे अध्ययन ने पूछा कि कल्याण शासन के आयोजन सिद्धान्त कैसे चिली, कोस्टारिका और स्पेन के देखभाल के प्रावधानों को आकार देते हैं।

चिली के कल्याण शासन सिद्धान्त उदार है; वे बाजार और व्यक्तिगत जिम्मेदारी की मजबूत भूमिका पर जोर देते हैं। अतः हम घरों से देखभाल के मुद्दों को व्यक्तिगत स्तर पर निपटने की अपेक्षा कर रहे थे और यदि कुछ सस्ती बाजार सेवाएँ हैं तो घरेलू श्रम के लैंगिक विभाजन पर निर्भर थे। कोस्ता रिका के सिद्धान्त सामाजिक लोकतांत्रिक हैः राज्य की नीतियाँ महत्वपूर्ण हैं और आवश्यकता होने पर घरेलू इकाइयाँ राज्य सेवाओं और कार्यक्रमों की तरफ मुडेंगी। स्पेन की कल्याणकारी नीतियाँ कई रूढ़िवादी सिद्धान्तों को समाविष्ट करती हैः राज्य देखरेख कार्य को घरेलू इकाइयों (मुख्य रूप में महिलाओं) को सौंपता है और औपचारिक रोजगार (मुख्य रूप से पुरूष) के लोगों की सुरक्षा करता है, तो, स्पेन में बच्चे की देखभाल घर और परिवार के सदस्यों द्वारा प्रबंधित की जायेगी। सिर्फ देतिपक स्तर पर राज्य की नीतियाँ और समुदाय या दोस्त उसमें जुड़े होगें। सभी तीन देशों में, घरों में लैंगिक श्रम–विभाजन देखरेख के प्रावधानों में केन्द्रीय है। और, निस्सन्देह, तीनों देशों में चल रहे वित्तीय संकट देखभाल के मुद्दों के साथ वर्तमान में किस तरह से निपटा जाता है को प्रभावित करता हैं।

>>

> अस्थिर/अनिश्चित घरों में शिशु पालन का आयोजन

तीनों देशों के लिए हमने पूछा कि गरीबी की दहलीज के निकट और उपर (गरीब नहीं परन्तु गरीब की विपदा के करीब) अनिश्चित सामाजिक–आर्थिक स्थितियों में घरों में रोजमर्रा की जिंदगी का प्रबंधन कैसे होता है। ऐसे घर गरीबों की मदद करने के उद्देश्य वाली सामाजिक नीतियों से सुरक्षित नहीं होते हैं, लेकिन उनकी सीमित वित्तीय क्षमता उनके लिए देखरेख कार्य को आउटसोर्स करना मुश्किल होता है जैसे शिशुपालन के लिए भुगतान करना। 2008 और 2010 के मध्य, हमने तीन शहरों में घरों के समान प्रतिदर्श (प्रत्येक देश के एक शहर में 24 से 31 घरों के बीच) का, यह जानने के लिए कि इन घरों के सदस्य शिशुपालन के बारे में क्या सोचते हैं और उससे कैसे निपटते हैं, साक्षात्कार किया।

चिली में स्वीकृत शिशुपालन माता–पिता, अनौपचारिक अवैतनिक पारिवारिक समर्थन/सहारा और भुगतान वाली शिशुपालन सेवाओं पर निर्भर है। निजी (वित्तीय छूट वाली) औपचारिक शिशुपालन तब काम में लिया जाता था जब इसे बच्चे के विकास के लिए लाभदायक माना गया या जब माता–पिता दोनों की आय को घर के जीवन स्तर को बनाये रखने या भविष्य की योजनाओं के लिए आवश्यक माना गया। देखभाल कार्य के श्रम बाजार के लाभों के बारे में उत्तरदाता द्वैधवृत्तिक थे: कार्य के अधिक घंटे; खराब कार्य स्थितियाँ, कम पारिश्रमिक, और अस्थायी रोजगार को आय, संतुष्टि, सुरक्षा और पहचान के साथ तोला गया। कई उत्तरदाताओं ने इस बात की व्यापक स्वीकृति से कि ''माँ की भूमिका'' वैतनिक कार्य और देखभाल के मध्य तनाव पैदा करती है, पारंपरिक लैंगिक श्रम–विभाजन को प्रतिबिंबित किया। न तो बाजार, राज्य या नागरिक समाज संगठन इस तनाव को कम कर सकते थे।

कोस्तारिका घरों, जिनका अध्ययन के लिए साक्षात्कार लिया गया, ने शिशुपालन का लैंगिक और अंतर पीढ़ीगत श्रम विभाजन के माध्यम से आयोजन किया। घरों के भीतर, अलग–अलग पीढ़ीयों की महिलाओं के मध्य कार्य और शिशुपालन, कौन सबसे अधिक आय अर्जित कर सकता है, से सुलझाया जाता है। कभी–कभी महिलाएँ अनौपचारिक तौर पर एक दूसरे को शिशुपालन के लिए भुगतान करती है: यदि एक महिला पूर्ण–कालिक कार्य पाने में सफल होती है तो घर के अन्य सदस्य, जो बेरोजगार हैं या अंशकालिक रोजगार में है–दादी–नानी, भाई–बहन, ससुराल वाले बच्चों की देखभाल करते हैं। यदि शिशुपालन की आवश्यकता घर के साधनों के परे चली जाती है, उत्तरदाताओं का मानना था कि राज्य, कुछ हद तक श्रम बाजार इस खाई को भर सकता है। ऐसा लगता हैं कि, कोस्टारिका के श्रम बाजार चिली और स्पेन की तुलना में शिशु पालन के लिए कम तनाव या जटिलताएँ पैदा करता है। हालांकि, पुरूष शिशुपालन में कम भागीदार लगें और महिलाओं ने स्पष्ट रूप से उनसे योगदान की माँग नहीं की।

स्पेनिश घरों में, महिलाएँ शिशुपालन को अपने दम पर ही निभाती हैं। वित्तीय संकट ने रोजगार के अवसरों में कमी और सार्वजनिक शिशुपालन के लिए सरकारी मदद में कटौती की है; और अन्य सुरक्षा जाल कम ही उपलब्ध हैं। चयनित स्पेनिश घरों में बहुत कम महिलाओं के बच्चे थे। जिनके थे, उन्होंने घरों में आंशिक रूप से वित्तीय संकट के कारण लैंगिक श्रम–विभाजन की आलोचना की और सीमित रोजगार अवसरों और निजी या सरकारी देखभाल सुविधाओं के अभाव के बारे में शिकायत की। परिचित और समुदाय शिशुपालन की आपात स्थितियों से निपटने के लिए आगे आए। कई उत्तरदाताओं ने अन्यायपूर्ण लैंगिक श्रम विभाजन को महिलाओं के अपने परिवार के आकार को सीमित करने के फैसले के लिए जिम्मेदार ठहराया।

> देशों के मध्य तुलना

कम आय वाले घरों में शिशुपालन की व्यवस्था की तुलना दो मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डालती है; पहला, यह शिशुपालन के लिए परिवार और घरों के महत्व के साथ ही घरों के अन्तर्गत अन्तर–घर या अंतर पीढ़ीगत लैंगिक श्रम विभाजन के सतात्य को रेखांकित करता है। दूसरा, यह देशों की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना के साथ मिलकर कल्याणकारी शासन का उन घरों के अर्न्तगत शिशुपालन के आयोजन पर पड़ने वाले महत्वपूर्ण प्रभाव के तरीकों को रेखांकित करता है।

अनिश्चित स्थितियों में अधिकांश घरों (गरीब नहीं तथापि गरीबी की आंशका वाले) के लिए घरेलू संरचना और आकार के साथ लैंगिक श्रम विभाजन शिशुपालन के आयोजन के लिए आवश्यक था। क्या ये भूमिकाएँ समाज द्वारा स्वीकृत की जाती हैं या इन पर सवाल उठाये जाते हैं और क्या आय–अर्जित करने के अवसर और राज्य मदद उपलब्ध थी, ने भी शिशुपालन के आयोजन और अनुभवों को प्रभावित किया। कोस्टारिका की परिवार–उन्मुख नीतियों ने शिशुपालन को राहज देते हुए तीन पीढ़ी वाले घरों के निर्माण के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया। चिली में, शिशुपालन के आयोजन में पारंपरिक लैंगिक विचारधारा के साथ श्रम स्थितियों, कार्य के अवसरों और शिशुपालन सुविधाओं के मध्य तनावपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त रहते है स्पेन में, कम बच्चे या बच्चे नहीं होना महिलाओं पर शिशुपालन के बोझ को कम करता है। उसी समय, वित्तीय संकट के कारण सार्वजनिक सेवाओं और वैतनिक कार्य के अवसरों में कमी आई है जिसके कारण माताओं को शिशुपालन का भार उठाना और उसे कार्य के साथ संभालना पड़ता हैं।

शिशुपालन का आयोजन कोस्टारिका में सबसे कम तनाव पूर्ण था, जहाँ अन्य महिलाएँ, परिवार के सदस्य और राज्य मदद ने कठिन परिस्थितियों में बफर प्रदान किया। चिली में श्रम स्थितियाँ, सस्ती सार्वजनिक और निजी शिशुपालन सेवाओं का अभाव, लैंगिक श्रम विभाजन और पारंपरिक लैंगिक विचारधारा के साथ द्वन्द्व कर शिशुपालन को तनावपूर्ण बनाती हैं। स्पेन में शिशुपालन लैंगिक श्रम विभाजन (जो अन्यायपूर्ण माना गया), शिशुपालन सुविधाओं के संकट द्वारा प्रेरित कटौती और सीमित रोजगार अवसरों के मिश्रण से, सर्वाधिक तनावपूर्ण था। ■

मोनिका बुडोवस्की से पत्र व्यवहार हेतु पता <monica.budowski@unifr.ch>

[1] The Swiss National Science Foundation funded the project. The University of Fribourg (Switzerland) collaborated with the Public University of Pamplona (Spain), the Catholic University of Temuco (Chile), and the University of Costa Rica (Costa Rica).

> दक्षिण अफ्रीका में देखभाल का प्रावधान

ऐलेना मूर, केपटाउन विश्वविद्यालय एवं **जेरेमी सिकिंग्स,** केपटाउन विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका और आईएसए की प्रादेशिक एवं नगरीय विकास की शोध समिति (RC21) की पूर्व उपाध्यक्ष और निर्धनता, समाज कल्याण एवं सामाजिक नीति शोध समिति (RC19) की सदस्या

दक्षिण अफ्रीका वित्तीय सहायता के उच्च स्तर और शारीरिक देखभाल की आवश्यकता है और दी जाती है। अप्रत्याशित उच्च बेरोजगारी, लगातार निर्धनता और HIV-AIDS का अर्थ है कि 50 लाख की आबादी का लगभग तीन–चौथाई जिसमें 20 लाख बच्चे, तीन लाख गैर–कार्यकारी बुजुर्ग, कामकारी आयु के एक लाख अक्षम पुरुष एवं महिलाओं के अलावा 12 लाख बेरोजगार सम्मिलित हैं– को किसी प्रकार की देखभाल या वित्तीय सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

1920 के दशक के प्रारम्भ से ही दक्षिण अफ्रीका में वित्त पोषित सार्वजनिक सेवाओं, सामाजिक सहायता और देखभाल के ब्रिटिश मॉडल को आधार मान, महिलाओं एवं बच्चों (और पुरुषों पर कम) की 'योग्य' श्रेणियों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया है। दक्षिण अफ्रीका में यद्यपि, 'योग्य' नागरिक भी नस्लीय रूप से परिभाषित थे : दक्षिण अफ्रीका की 'अफ्रीकी' या 'अश्वेत' आबादी कल्याण राज्य एवं सामाजिक नागरिकता के साथ मताधिकार और राजनैतिक नागरिकता से भी (पहले पूर्ण, फिर आंशिक रूप से) वंचित थी। अफ्रीकी लोग क्या कार्य कर सकते हैं और कहाँ निवास कर सकते हैं, पर निषेध ने एक नस्लीय प्रवासी श्रमिक व्यवस्था को प्रबल किया। इस कारण कई कार्यशील माता–पिता को अपने बच्चों को दादा–दादी के पास लालन–पालन के लिये मजबूर होना पड़ा और वे अपनी आय का एक हिस्सा उन्हें भेजते थे। 1970 के दशक के बाद से ही, आर्थिक वृद्धि और राजनैतिक स्थिरता की अनिवार्यता ने रंगभेदीय राज्य को coloured, भारतीय और बाद में अफ्रीकी के रूप में वर्गीकृत लोगों के लिये सार्वजनिक संस्थानों को धीरे–धीरे पुनः आवंटित करने के लिये दबाव डाला। यह एक देखभाल की अधिक समावेशी व्यवस्था की तरफ ऐसा बदलाव था जो 1994 में दक्षिण अफ्रीका के पहले लोकतांत्रिक चुनावों के बाद ही पूरा हुआ।

सार्वजनिक नीतियों, विशेष रूप से सामाजिक सहायता कार्यक्रम, सार्वजनिक शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य का वि–नस्लीयकरण का परिणाम एक विस्तृत और पुनर्वितरित (यद्यपि असमान रूप से) कल्याण राज्य के रूप में हुआ है। यह कल्याणकारी राज्य बढ़ते हुए बाजार प्रावधानों एवं जारी (हालांकि खत्म होते हुए) परिजन प्रावधानों के साथ–साथ विद्यमान है।

कई बच्चे अभी भी, अक्सर एक या दोनों माता–पिता के बिना, विस्तृत परिवारों के साथ रहते हैं। दक्षिण अफ्रीका के बच्चों में से तीन में से एक अपने जैविक पिता के साथ रहते हैं, और लगभग 5.5 लाख बच्चे अपने एक भी जैविक माता–पिता के साथ नहीं रहते हैं। देखभाल प्रदान करने में रिश्तेदार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी समय श्रम शक्ति का स्त्रीकरण और बदलते परिजन सम्बन्धों के कारण देखभाल के बाजार प्रावधानों में वृद्धि हुई है। 0–4 आयु वर्ग के लगभग 30 प्रतिशत बच्चे किसी प्रकार के क्रेच या डे–केयर सुविधा में भाग लेते हैं।

राज्य ने विद्यालयों के, देखभाल प्रदाता (पालक माता–पिता सहित) के लिये नकद अनुदान और 2000 के दशक के प्रारम्भ में विस्तृत प्री–स्कूल सुविधाओं के माध्यम से देखभाल सेवाएं प्रदान कीं। देखभाल प्रदाताओं को नकद अनुदान देने का पैमाना कवरेज और लागत (सकल घरेलू उत्पाद के सम्बन्ध में) दोनों में, ब्राजील के बोत्सा फैमिलिया जैसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कार्यक्रमों की तुलना में भी, अधिक अद्वितीय है।

राज्य वृद्ध दक्षिण अफ्रीकियों को मुख्य रूप से गैर–अंशदायी वृद्धावस्था पेंशन के माध्यम से सहायता करता है। सकल घरेलू उत्पाद का एक प्रतिशत से अधिक, लगभग तीन लाख पेंशनरों को पुनः वितरित किया जाता है। वृद्धावस्था पेंशन साधन–परीक्षण द्वारा तय होती है परन्तु आय और धन की सीमा रेखा उच्च स्तर पर तय की जाती है ताकि सिर्फ अमीर दक्षिण अफ्रीकी ही बाहर हों। रंगभेद पश्चात राज्य द्वारा बुजुर्गों के लिये वित्तीय सहायता का विस्तार बुजुर्गों के लिये सार्वजनिक रूप से प्रदान की जाने वाली देखभाल के रोलबैक के साथ विरोध में है।

बुजुर्गों के लिये आवासीय देखभाल का प्रत्यक्ष (राज्य संचालित वृद्धावस्था गृह) और अप्रत्यक्ष (अनुदान प्राप्त वृद्धावस्था गृह) सार्वजनिक प्रावधान लोकतंत्र में पारगमन को झेल नहीं पाया। वृद्धावस्था पेंशन जो उदार लाभ देती है, का देखभाल के प्रावधानों और घरेलू आय पर महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष प्रभाव होता है। तीन–चौथाई बुजुर्ग कामकाजी आयु के वयस्कों वाले घरों में रहते हैं जबकि एक छोटी संख्या बच्चों के साथ किसी कामकाजी वयस्क की उपस्थिति के बिना रहते हैं। जहाँ बुजुर्ग आर्थिक रूप से युवा परिजनों की सहायता करते हैं, युवा परिजन बुजुर्गों की देखभाल में बहुत कम समय व्यतीत करते हुए दिखते हैं।

लगभग एक लाख बीमार और विकलांग कामकाजी आयु के वयस्क विकलांगता अनुदान प्राप्त करते हैं। एड्स ने वित्तीय सहायता और शारीरिक देखभाल की आवश्यकता वाले बीमार कामकाजी लोगों की संख्या में वृद्धि की है। गुणात्मक शोध यह सुझाव देता है

>>

> **“वैश्विक उत्तर के उदार कल्याणकारी शासन के विरुद्ध, दक्षिण अफ्रीका के सामाजिक सहयोग कार्यक्रम काफी विस्तृत पहुंच रखते हैं।”**

कि एड्स ने नातेदारी के बंधनों को तनावपूर्ण बनाया है और यह कि बीमार अक्सर मदद के लिए दूर के या फिर नजदीकी परिजनों को बुलाने में असमर्थ रहते हैं। नातेदारी देखभाल का लैंगिक होना जारी है और एड्स ने इस पैटर्न को तीव्र किया है।

दक्षिण अफ्रीका बेरोजगार, कामकाजी आयु के वयस्क को वर्कफेयर कार्यक्रमों के अलावा बहुत कम सार्वजनिक समर्थन की पेशकश करता है। राज्य के समर्थन के बिना और बाजार के माध्यम से समर्थन तक पहुँच के बिना, बेरोजगार वयस्क नातेदारों पर निर्भर रहते हैं परन्तु नातेदार समर्थन अब बिना शर्त नहीं है। आज, जब दक्षिण अफ्रीकी योग्य और अयोग्य नातेदारों चाहे वे निकट के हों या दूर के, के मध्य भेद करते हैं, मेयर फोर्टेस जैसे मानवशास्त्री द्वारा 40 वर्ष पहले वर्णित आदर्श बंधन और अनिवार्य नातेदारी आज अधिकांशतः अनुपस्थित दिखाई देते हैं।

दक्षिण अफ्रीका की कल्याण और देखभाल प्रणाली वैश्विक उत्तर के उदारवादी कल्याण शासन के साथ कुछ समानताएं प्रदर्शित करती हैं। राज्य के संसाधन साधन–परीक्षित सामाजिक सहायता कार्यक्रम जो गरीब लागों की योग्य श्रेणियों पर केन्द्रित हैं, की ओर निर्देशित है। राज्य ने अंशदायी पेंशनों और स्वास्थ्य बीमा के साथ निजी क्रेचों के माध्यम से देखभाल के बाजार प्रावधानों के विस्तार को प्रोत्साहित किया है।

हालाँकि, वैश्विक उत्तर के उदारवादी कल्याण शासन व्यवस्थाओं के विपरीत, दक्षिण अफ्रीका के सामाजिक सहायता कार्यक्रमों की व्यापक पहुँच है। तकरीबन तीन वयस्कों और बच्चों में से एक किसी न किसी प्रकार का अनुदान प्राप्त करता है और आबादी की लगभग दो–तिहाई जनसंख्या ऐसे घरों में रहती है जहाँ किसी को अनुदान प्राप्त होता है। अनुदान इस प्रकार सबसे निर्धन घरों सहित, तकरीबन सभी घरों में से आधे में पहुँचता है। पहुँच के मामले में, ये कार्यक्रम वैश्विक उत्तर के अधिक समावेशी सामाजिक लोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं के तरह लगते हैं।

जहाँ नातेदारी सम्बन्ध बदल रहे हैं और मदद उत्तरोत्तर व्यक्तियों के आचरण एवं व्यवहार पर निर्भर है, कई दक्षिण अफ्रीकी वित्तीय सहायता और शारीरिक देखभाल हेतु अपने परिवार में से किसी पर निर्भर रहते हैं। इस में, दक्षिण अफ्रीका परिवार केन्द्रित दक्षिणी यूरोपीय मामलों जैसा दिखता है।

पिछले कुछ दशकों में सामाजिक अनुदानों का वि–नस्लीयकरण और परिजन समर्थन में परिवर्तन ने दक्षिण अफ्रीकी कल्याण शासन व्यवस्था को अधिक सामाजिक लोकतांत्रिक दिशा में प्रोत्साहित किया है, परन्तु राज्य भी शारीरिक देखभाल (विशेष रूप से कुछ बुजुर्गों के लिये) के प्रवधान में अपनी सीमित भूमिका से पीछे हट गया है और इसने लोगों को परिजनों और उत्तरोत्तर बाजार पर निर्भरता के लिए प्रेरित किया है। ■

ऐलेना मूर से पत्र व्यवहार हेतु पता <elena.moore@uct.ac.za>
जेरेमी सिकिंग्स से पत्र व्यवहार हेतु पता <jeremy.seekings@gmail.com>

> एक प्रतिकूल वातावरण में समाजशास्त्र

लोक समाजशास्त्र प्रयोगशाला, सेंट पीटर्सबर्ग, रूस

सेन्ट पीटर्सबर्ग सार्वजनिक समाजशास्त्र प्रयोगशाला के सदस्य। ऊपरी पंक्ति में बांयी ओर से दक्षिण की ओर : माक्सिम एल्यूकोव, केश्निया ईर्मोशीना, स्वेतलाना अर्पीलेवा, इल्या मात्वेव। नीचे की पंक्ति में बांयी ओर से दक्षिण की ओर : आन्द्रे नेवस्की, नतालिया स्वलयेवा, डिलयारा वलेवा, औलेग झुराव्लेव।

लोक समाजशास्त्र प्रयोगशाला सेंट पीटर्सबर्ग में वामपंथी विद्वानों और कार्यकर्त्ताओं का एक स्वतंत्र शोध समूह है। हम में से कुछ ने 2007–2008 में मॉस्को राज्य विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में शिक्षा के व्यवसायीकरण और भ्रष्टाचार तथा विज्ञान के अनादर के विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया, जबकि अन्य ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में समाज विज्ञान का अध्ययन करते हुए वामपंथी राजनीतिक और कलात्मक संघों में भाग लिया। 2011 में हमने प्रतिबद्ध विद्वानों का एक समूह बनाने का निश्चय किया जो हमारे अराजनैतिक समाज में राजनीतिक विरोधों का अध्ययन करे। 2011–2012 में रूस के निष्पक्ष चुनावों के लिये अभियान के दौरान बड़े पैमाने पर अनुसंधान करने के बाद हमने 'सेंटर फॉर इंडिपेंडेंट सोशल रिसर्च' (CISR) के सहयोग से क्यीव में यूक्रेनियन मैदान और मैदान–विरोधी आंदोलनों का अध्ययन शुरू किया। यहां हम तीन मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे– प्रथम, हमारी परियोजना के विकास का संदर्भ; द्वितीय, 'लोक समाजशास्त्र' में जुड़ने का हमारे लिये महत्व; और तृतीय, सीमायें जो संस्थागत परिवेश हमारी गतिविधियों पर लगाता है और इन सीमाओं से कैसे उबरा जा सकता है।

> रूसी समाजशास्त्र : अभिकरणवाद और व्यवसायीकरण के मध्य

हमारे पेशेवर समाजीकरण के दौरान, रूस में विषय में तीन प्रकार के मतैक्य ने आकार लिया है जिसने दो प्रकार के समाजशास्त्रीय ज्ञान, अभिकरणवाद और पेशेवर का नेतृत्व किया। पहले को इंस्टीट्यूट ऑफ सोश्योलॉजी ऑफ द एकेडमी ऑफ साइंसेज में देखा जा सकता है जिसमें राजनैतिक वफादारों का घर होने के कारण संरचनात्मक स्वायत्तता की कमी है और उन समाजशास्त्र विभागों में, जिनका विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा चुपचाप निजीकरण कर दिया गया है। इन संस्थानों में विद्वानों को या तो बाजार के तर्कों से रूबरू होना पड़ता है, या मध्यम वर्ग, परिवर्तन, समस्याओं का रूसी समय आदि छद्म वैज्ञानिक अध्ययनों में भाग लेना पड़ता है।

इस प्रकार की आधिकारिक या अभिकरणीय समाजशास्त्र की प्रतिक्रिया में, ये तर्क देते हुए कि 'वास्तविक' व्यवसायिक समाज विज्ञान को राजनीतिक प्रतिबद्धता से मुकरना चाहिये, एक स्वायत्तवादी गुट ने आकार लिया। इस परिप्रेक्ष्य से, अभिकरण समाजशास्त्र के दोनों प्रकार अव्यवसायिक हैं, न केवल इसलिये कि बुर्दियो के अर्थों में उनमें स्वायत्तता की कमी है, बल्कि निश्चित रूप से अपने ग्राहकों के प्रति प्रतिबद्धता के कारण भी।

अभिकरणवादी मतैक्य के प्रति हमारे विरोध ने मॉस्को राज्य विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग की नीतियों के खिलाफ हमारे प्रतिरोध के लिए मंच प्रदान किया परन्तु हम ''पेशेवरों'' के अराजनैतिक मतैक्य से भी असहमत थे। सक्रिय कार्यकर्त्ताओं, जो कई बार पेशेवर विद्वानों से अधिक चिंतनवादी थे, के साथ सहयोग करने से हम सैद्धान्तिक और संभ्रान्तवादी दृष्टिकोण के साथ साथ पद्धतीय मतांधता से भी दूर हो गये। 'स्वायत्ता' के सिद्धान्त के

> >

सबसे सतत् समर्थकों में से एक, समाजशास्त्री विक्टर वखशत्यान दावे के साथ कहते हैं कि रूस में ''वैज्ञानिक'' भाषा ''नव–सोवियत'' और ''गैर सोवियत'' भाषाओं से प्रतिस्थापित हुई है और रूसी समाजशास्त्र को पेशेवर बनाने के लिए एक ''अवचनबद्ध'' विज्ञान की स्थापना करना आवश्यक है। वखशत्यान समाजशास्त्र के मिशन को ''ज्ञान के लिए ज्ञान का उत्पादन'' के रूप में देखते हैं; उनका तर्क है कि समाजविज्ञान का किसी प्रकार का राजनैतिकरण वैज्ञानिक तार्किकता के लिए विनाशकारी होगा।

हम मानते हैं कि यह परिप्रेक्ष्य, जैसा कि वखशत्यान दावा करता है, ''मूल्य–मुक्त'' विज्ञान के लिए प्रतिबद्ध नहीं है। इसके विपरीत हमारा मानना है कि यह स्थिति इस अर्थ में वैचारिक है कि यह सोवियत पश्चात के नवउदारवादी व्यवस्था के लिए केन्द्र में है। यह राजनीति में निराशा, बुद्धि की सार्वजनिक क्षेत्र को कलंकित करने वाली विचारधारा पर चिन्तन करती है जो निजी जीवन में पलायन को न्यायोचित ठहराती है। वखशत्यान की पीढ़ी ने ''शुद्ध ज्ञान'' का यह आदर्श अपने शिक्षकों से विरासत में पाया है–ये शिक्षक जो बुर्जआ समाजशास्त्र के अग्रवर्ती आलोचक थे, जिनके लिए गैर प्रतिबद्धता के लिए गहन आकांक्षा के बजाय परिशुद्ध समाजशास्त्रीय ज्ञान सोवियत शासन के पतन के कारणों को जानने की आवश्यकता से प्रेरित था। उन्होंने समाजशास्त्र को आत्म वास्तविकीकरण के उपकरण के रूप में समझा। हालांकि, गैर राजनैतिकरण के संदर्भ में, सैद्धान्तिक गहनता का यह आदर्श ''युद्ध ज्ञान'' के सम्मोहन में तबदील हो गया।

2011–2012 में जब रूसी समाज का राजनैतीकरण होने लगा, पुतिन विरोधी प्रदर्शन, मैदान और यूक्रेन में युद्ध, पेशेवर समाजशास्त्रियों को अपने दर्शकों का अनुसरण करते हुए अपना ध्यान प्रदर्शनों पर केन्द्रित करना पड़ा। यथापि, राजनीति पर वैज्ञानिक चिन्तन के अनुभव के अभाव में, वे या तो सैद्धान्तिक रूढ़ोक्तियाँ का पुर्नउत्पादन करने या फिर प्रतिरोध के यथार्थ को पूर्व–स्थापित सैद्धान्तिक फ्रेमवर्क में कृत्रिम रूप से रखने के लिए अभिशप्त थे।

> लोक समाजशास्त्र से हमारा क्या अर्थ है?

यदि ''पेशेवरों'' के शिक्षकों की पीढ़ी 1980 के दशक के सामाजिक परिवर्तन के दुखद अनुभवों से प्रेरित थी और यदि ''पेशेवर'' स्वयं समाज की अस्तित्वपरक समस्याओं, जिसने निजी जीवन के क्षेत्र में पलायन का नेतृत्व किया, से प्रेरित थे तो गेर राजनैतीकरण स्वयं हमारी अस्तित्व संबंधी समस्या बन गया, विशेष रूप से तब जब हमारे मित्रों, वैज्ञानिक वातावरण और समाज ने हमारे सक्रियतावाद की आलाचेना की। इस तरह हम सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के मध्य बदलते सम्बन्धों के फ्रेमवर्क में गैर–राजनैतीकरण का अध्ययन करने लगे।

इसके अलावा, सार्वजनिक क्षेत्र की तहकीकात ने हमें अपने परिणामों को उन्हीं लोगों के साथ चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया जिनका हम अध्ययन कर रहे थे अर्थात् आने वाली जनता। अतः अब हम स्थानीय नागरिक सक्रिय समूह, जो 2011–2012 के प्रदर्शनों के समय उभरे थे, के साथ सम्मेलन की योजना बना रहे हैं। हम अपने अध्ययन को सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को इस आशा में सौंप रहे हैं कि हम इन समूहों के मध्य विमर्श को प्रारम्भ और नेटवर्क स्थापित कर सकते हैं।

हमारा मानना है कि सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं के साथ अतिव्यवस्तता सामाजिक सिद्धान्तों को नये दृष्टिकोण से जाँचने और समझने की माँग करती है। क्या हम दुर्खीम के प्रोजेक्ट को प्रतिमानहीनता की चिंता किये बिना समझ सकते हैं? क्या हम निजी क्षेत्र तक सीमित गरीबी के जीवन का जिक्र किये बिना अरेन्दत और हैबरमॉ से लेकर फ्रेजर, नेग्त और क्लूज तक प्रचार के सिद्धान्तों का अन्वेषण कर सकते हैं? हमारा घोषणा पत्र कहता है, ''प्रयोगशाला का मुख्य उद्देश्य सामाजिक शोध के पेशेवर दृष्टिकोण को सार्वजनिक वचनबद्धता के साथ जोड़ना था। लोक समाजशास्त्र प्रयोगशाला जो वैज्ञानिक प्रश्न उठाती है वे रूसी सामाजिक स्थिति और दुनिया भर की प्रासंगिक सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित हैं। इसके अतिरिक्त, प्रयोगशाला का मिशन सामाजिक वचनबद्धता और नागरिक दायित्वों को सैद्धान्तिक और अस्तित्व संबंधी गहनता के साथ जोड़कर सामाजिक समस्याओं का अनुभवजन्य कर ''वृहद सिद्धान्त'' की समस्याओं को सुलझाना है। उदाहरण के लिए, नवीनतम विरोध प्रदर्शन के दौरान राजनैतिक लामबंदी का अध्ययन हमें अकेलापन और सुदृढ़ता, व्यक्तिवाद और सुदृढ़ता की समस्याओं को पेश करने की अनुमति देता है।

> रूस में लोक समाजशास्त्र के समक्ष बाधाएँ

परन्तु समकालीन रूस में इस स्थिति का पालन करना क्या आसान है? कुछ बाधाएँ हमारे प्रोजेक्ट के अस्तित्व को ही जोखिम में डालती हैं। हम ''पेशेवरों'' और ''अभिकरण वादियों'' के साथ बड़े विश्वविद्यालयों और अनुदान के बाजार के मध्य फँस गये हैं। वैज्ञानिक संस्थान, चाहे वह प्रतिगामी विज्ञान अकादमी हो या ''अग्रवर्ती'' छोटे विश्वविद्यालय, कठोर संस्तरण और कैरियर के लाभ जो उनके पुनः उत्पादन का कार्य करते हैं–को पैदा करते हैं। यह तर्क शोधार्थियों के कणीकरण और उन्हें वशीभूत कर सहकार्य और सुदृढ़ता को विघटित करता है। यही वजह है कि हमने रूस के सर्वाधिक स्वतन्त्र, जमीनी और पेशेवर समाजशास्त्रीय केन्द्र CISR में पैर जमाने का प्रयास किया है। परिणामस्वरूप, असंतुष्ट विद्वानों के विरूद्ध सरकारी दबाब के कारण अनुदान बाजार तेजी से सिकुड़ रहा है। उदाहरणार्थ, हमारी पुस्तक The Politics of the Apolitical जो 2011–2012 के राजनैतिक प्रदर्शनों को समर्पित थी, का प्रकाशन एक कारण था जिसके कारण राज्य अधिकारियों ने CISR को एक ''विदेशी एजेण्ट'' के रूप में दोषी ठहराने की कोशिश की।

अतः आज हम एक प्रतिकूल वातावरण का सामना कर रहे हैं। अब तक हमने समूह के अन्तर्गत व्यापक सम्बन्धों और अनौपचारिक नेतृत्व के लिए सशक्त नैतिक और राजनैतिक मतैक्य के सीमित संसाधनों पर भरोसा किया है। हालांकि, यह हमारे प्रोजेक्ट को बनाये रखने के लिए काफी नहीं है। हमारा मानना है कि हमें विद्वानों और कलाकारों का एक ''अंतराष्ट्रीय'' समूह बनाना होगा जो अपने क्षेत्र के समर्पित वैज्ञानिकों और बुद्धिजीवियों को दुनिया भर के वैज्ञानिक और बुद्धिजीवियों से जोड़ेगा। ■

लोक समाजशास्त्र प्रयोगशाला से पत्र व्यवहार हेतु पता
<publicsociologylab@gmail.com>

[1] **See V. Vakhshtayn's article in *Global Dialogue*, 2.3 and response from N.V. Romanovsky and Zh.T. Toshchenko in *Global Dialogue*, 2.5.**

> प्रारंभिक सोवियत वास्तुकला में समाजवादी आदर्श

नतालिया ट्रेगुबोवा और **वेलनटिन स्टारिकॉफ,** सेंट पीटर्सबर्ग राज्य विश्वविद्यालय, रूस

रूसी में "सोवियत" शब्द का अर्थ है 1) परिषद्, सभा, बोर्ड; 2) सिफारिश, सुझाव; 3) सामंजस्य, तारतम्यता। एक शब्द के रूप में, यह एक विशिष्ट प्रकार के राजनीतिक संगठन की ओर इंगित करता है, जो 1917 की अक्टूबर क्रांति के बाद शुरू हुआ और जिसने राजनीतिक सत्ता को पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया: "कामगारों, किसानों, और सैनिकों के प्रतिनिधियों की परिषदें", जिन्हें सोवियत के नाम से भी जाना जाता है।

सोवियत को ऐसी शासकीय निकायों के रूप में परिकल्पित किया गया "जो काम करते है" के द्वारा निर्वाचित हो और जहां सब कुछ सामूहिक निर्णय लेने पर आध ाारित हो। सोवियत युग के आरंभ में, कम से कम, ये "सोवियत" प्रत्यक्ष लोकतंत्र को सुगम बनाने के लिये डिजाईन किये गये थे। ये सामाजिक जीवन के नये सिद्धांतों को समाविष्ट किये हुये थे –एकजुटता, सामूहिकता, और स्वसंगठन – उसी समय ये सिद्धांत पूर्व के उत्पीडित वर्गों की "तानाशाही" पर आधारित थे।

इस नयी समाजवादिता ने –कामगारों के हालातों और किसानों की रोजमर्रा की प्रथाओं दोनों में –ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में दैनिक जीवन की नयी शैली की मांग की। जन शिक्षा और सांस्कृतिक परवरिश, शहरी पलायन, महिला उत्थान, शासन की नये रूप –इन सभी को स्थानिक संगठन के सहित दैनिक जीवन के प्रतिमानों में समाहित करना था।

इसने वास्तुकारों के लिये भवन निर्माण के नये प्रकारों और रूपों को ईजाद करने की एक शक्तिशाली चुनौती पेश की। इस प्रकार, 1920 और 1930 के शुरू में सामाजिक और राजनीतिक जीवन की वास्तविकताओं द्वारा विश्व–प्रसिद्ध सोवियत रचनात्मक अग्रणी/ अंदज.हंतकम वास्तुकला का जन्म हुआ।

आज भी दिखाई देने वाली सबसे बडी और सबसे सुरक्षित रचनात्मक परियोजनाओं में से एक है नर्वसकाया जस्टावा जिले के सेंट पीटर्सबर्ग (पूर्व में लेनिनग्राड) में एक भवन समूह। बींसवीं सदी के आरंभ में एक श्रमिक वर्ग के एक प्रारूप/टिपिकल उपनगर, नर्वसकाया जस्टावा "खूनी रविवार" की दुखद घटनाओं का एक स्थल था, जब 1905 में, मजदूरों के एक शांतिपूर्ण प्रदर्शन का जार के इंपीरियल गार्ड द्वारा दमन कर दिया गया था। 1917 की क्रांति के बाद, इस घटना को पवित्र माना गया और यह नयी सर्वहारा विचारधारा का एक पवित्र निशानी बन गया (चित्र 1)।

नर्वसकाया जस्टावा का क्षेत्र वास्तुकला प्रयोगों का एक स्थान बन गया, और विस्तृत औद्योगिक जिले का बडा सार्वजनिक केंद्र बन गया।

सर्वहारा वर्ग के लिये सार्वजनिक आवासों का विकास करते हुये जब वास्तुकारों ने स्थानिक संगठन के नये सिद्धांतों की मांग की, तब ट्रकोर्नाया स्ट्रीट के आवासीय भवन (1925–27 में निर्मित) सर्वोच्च प्राथमिकता थे। टकटार्नाया स्ट्रीट वास्तुकला और नगर नियोजन दोनों में एक परिवर्तनकालिक शैली का एक उदाहरण है :इसमें रूसी नियोक्लासिज्म की विशेषताओं के साथ नयी उभरती हुये आकारों, सुप्रीमासिस्ट मोटिफ्स और प्रकार्यात्मक क्षेत्रीकरण का मिश्रण था। नर्वसकाया जस्टावा के भवनों नें पूरे जिले में परिवर्तन की प्रकिया शुरू कर दी (चित्र 2)।

1927 में लेनिनग्राद में प्रथम माध्यमिक विद्यालय, जिसका नाम "द स्कूल ऑफ टैन्थ रिवाल्यूशन एन्निवर्सरी" था, शुरू किया गया। जो विद्यार्थीयों में स्वतंत्रता और सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने के उददेश्य से शिक्षण और प्रशिक्षण के नये तरीकों के साथ शिक्षकों की संख्या को कम करते हुये, प्रायोगिक कार्यक्रम के तहत डिजाईन किया गया। विद्यालय, जिसमें 1000 विद्यार्थी थे, में विभिन्न प्रकार की कक्षायें, प्रयोगशालायें और एक खगोलीय वेधशाला भी शामिल थे (चित्र 3)।

इस नये वास्तुकला दृष्टि में सार्वजनिक स्थानों की महत्ता के बारे में प्रकार्यवादी विचार निहित थे। ट्रेड यूनियन आंदोलन द्वारा शुरू की गयी पहली बडी परियोजना, क्षेत्र का सामुदायिक केंद्र (1925–27) था। सामुदायिक केंद्रों ने श्रमिक वर्ग को सामाजिक मेलजोल का स्थान प्रदान किया: थियेटर, कक्षायें, जिम और पुस्तकालय। 1930–32 में, व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिये विद्यालय को शामिल करते हुये सामुदायिक केंद्रों का विस्तार हुआ, जिसने श्रमिकों और युवा लोगों को उनके व्यवसायिक कौशल को विकसित करने के अवसर प्रदान किया (चित्र 4)।

नर्वसकाया जस्टावा में एनसेम्बल के मध्य में एक डिपार्टमेंटल स्टोर और भोजन कारखाने थे (1929–31)। ये नवीन संस्थायें बडें पैमाने पर निर्मित रेडी–टू–सर्व रात्रि भोजन (बींसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध के फास्ट फूड इकाईयों के साथ भ्रमित नहीं हो!) और अर्द्धनिर्मित भोजन उपलब्ध कराने के लिये डिजाइन की गयी थी। भवनों का संयोजन दैनिक जीवन की गतिशीलता को दर्शाता है: बडी आकृतियां, विभिन्न आकार, परस्पर संबंधित क्षैतिज और उर्ध्वाधार रेखायें, असममित भाग। विशाल कांच से ढका हुआ डिपार्टमेंटल स्टोर स्ट्रीट से दिखता था, पूर्ण खुलेपन, उत्थान और एकजुटता के आदर्शों की एक स्पष्ट अभिव्यक्ति, जो सोवियत विचारधारा के केंद्र थे (चित्र 5)।

किरॉफ–जिला सोवियत (1930–1935) के निर्माण के साथ ये अनूठा रचनावादी एनसेम्बल पूर्ण हो गया जिसमें जिले के नगर परिषद् को रखा गया। 1920 के दशक में शक्तिशाली और लोकतांत्रिक स्थानीय सरकारों का विचार सोवियत राजनीतिक संगठन की बातचीत के केन्द्र में था। दूर से दिखाई देने वाले इस प्रशासनिक केन्द्र में जिला प्रशासन, सांस्कृतिक संस्थायें, एक बैंक, एक पोस्ट ऑफिस और एक विधानसभा हॉल रखा गया। इस परियोजना में उस समय के सभी प्रकार्यात्मक और तकनीकी नवाचारों का इस्तेमाल किया गया। उसी समय, हांलाकि, किरॉफ–जिला सोवियत के एक भवन को सोवियत अग्रदल/ Soviet

>>

avant-garde की मृत्यु का संकेत माना जा सकता है: इसके अर्द्ध–शास्त्रीय बरामदे और अन्य जानकारियां नयी सर्वसत्तात्मक/ जवजंसपजंतपंद विचारधारा को समेटे हुये आधुनिकीकृत शाही वास्तुकला की ओर झुकाव के लक्षण थे (चित्र 6)।

कुछ साल बाद, मुख्यतः जन समूहों और रैलियों को मंच प्रदान करने के लिये भवन के सामने एक बडा चौराहा बनाया गया। 1938 में लेनिनग्राद कम्युनिस्ट पार्टी के दिग्गज नेता सर्गेई किरॉफ की मूर्ति यहां लगायी गयी (चित्र 7)।

किरॉफ की याद में एक बडा स्मारक ने (1934 में जिसकी हत्या ने ग्रेट पर्ज में स्टालिन की दमन के बढत की समाप्ति की शुरूआत के रूप में काम किया) सोवियत वास्तुकला और समाज के इतिहास के अंत का संकेत दिया। अगले युग में अन्य प्रकार की वास्तुकला आकृतियों की आवश्यकता थी जो अन्य प्रकार की सामाजिकता को बढावा दे: सामूहिकता के स्थान पर जनता, लोकप्रिय लोकतंत्र के स्थान पर सर्वसत्तात्मक शासन, और एकजुटता के स्थान पर समतावादी उपभोक्तावाद। प्रतीकात्मक रूप से, 1000 लोगों की सीटों वाला विधानसभा भवन अंत में एक सिनेमाघर में बदल गया।

आज, लगभग एक सदी बाद, नर्वसकाया जस्टावा क्षेत्र अभी भी मुख्यत श्रमिकों की जनसंख्या वाला औद्यागिक जिला है। माध्यमिक विद्यालय, सामुदायिक केंन्द्र, आवासीय मकान और किरॉव जिला सोवियत भवनों के प्राथमिक कार्य बरकरार हैं, फिर भी सामाजिक और सामूहिक गतिविधियों के एक स्थान के रूप में उनकी महत्ता फीकी पड गयी है। रचनावादी वास्तुकला पहले (शाही) और बाद में (स्टालिन और उत्तर सोवियत) समय की संरचनाओं सें प्रभावित है और संपूर्ण क्षेत्र आजकल एक पैलिम्पसेस्ट के जैसे दिखता है (चित्र 8)। ■

नतालिया ट्रेगुबोवा से पत्र व्यवहार हेतु पता
<natalya.tr@mail.ru>

चित्र 1 : 1905 के एक खूनी रविवार को नार्वा गेट पर श्रमिकों का प्रदर्शन, जबकि जारिस्ट आर्म गार्ड देखते हुए। चित्र अनजान द्वारा।

चित्र 2 : ट्रेक्टोरनाया गली के नुक्कड पर मकान।

चित्र 3 : प्रारम्भिक सोवियत स्कूल मे वेधशाला।

चित्र 4 : प्रारम्भिक सोवियत सामुदायिक केन्द्र।

चित्र 5 : प्रारम्भिक सोवियत ''भोजन कारखाना''।

चित्र 6 : विरोव जिले का सोवियत

चित्र 7 : कम्युनिस्ट नेता सरगेई किरोव की मूर्ती।

चित्र 8 : नर्वा चौक में स्टालिन का शिल्प।

प्रथम चित्र के अलावा अन्य समस्त चित्र नतालिया ट्रेगुबोवा और वैलेन्टीन स्टेरिकोफ के द्वारा लिए गये हैं ।

> 'आऊ जोड़े' का प्रवास, मार्ग की रीति के रूप में

जूजाना सीकीराकोवा बयूरीकोवा, मसारयक विश्वविद्यालय ब्रनो, चेक रिपब्लिक

1990 के प्रारम्भिक दशक से स्लोवाकिया की महिलाओं के लिए आउ जोड़े देशान्तरण का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। विशिष्ट नियुक्ति करने वाले माध्यम, मेजबान परिवारों को ढूंढते है, तथा लंदन से और लंदन के लिए गाडियों की व्यवस्था भी करते हैं। लंदन के विक्टोरिया बस अडडे पर आऊ परिवार उन मित्रों को जो कि अपना प्रवास पूरा कर चुके हैं विदा करते हैं।
चित्र जूजाना सीकीराकोवा ब्यूरीकोवा द्वारा।

''आऊ जुड़ना'', वेतन वाले घरेलू कार्य, जो अस्थायी प्रवासियों द्वारा किये जाते हैं, सांस्कृतिक विनिमय जो राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय नियमों से परिभाषित होता है और मूल जीने की व्यवस्था को एक साथ लाता है। ब्रिटिश नियम जो 2004 और 2005 में पारित किये गये थे, के अनुसार, 'आऊ जोड़े' युवा विदेशी है जो परिवारों के साथ दो सालों तक रहते हैं ताकि वो अंग्रेजी सीख सके और देश के बारे में भी जान सके। 'आऊ जोड़े' 'परिवार के भाग के रूप में' रहते है, जिन्हें खाना, रहना एवं 'जेब खर्च' मिलता है–वेतन नहीं–बच्चों का ख्याल रखने और/या घरेलू कार्य करने के बदले में। परिवारों को, 'आऊ जोड़ो' को समानता का दर्जा देना होता है। आप्रवास निर्देशालय निर्देशों एवं ऐजेंसियों के अनुसार, इन्हें परिवार के सदस्यों के समान दर्जा देना चाहिये।

1990 के शुरूआत से, 'आऊ जोडो' का प्रवास उत्तर समाजवादी केन्द्रिय एवं पूर्व यूरोप से महिलाओं के देश में आने का एक महत्व पूर्ण मार्ग बन गया है, खासकर स्लोवाकिया से, जिसमें विश्व की 'आऊ जोडे' प्रवासी की संख्या सबसे उच्च आँकड़े में से एक पायी जाती है। मीडिया काफी बार 'आऊ जुडाव' को एक आर्थिक व्यूहरचना के रूप में चित्रित करता है, जो उत्तर–समाजवादी परिवर्तन से

> >

सामंजस्य का कार्य करता है। निश्चित रूप से, स्लोवाकियन मीडिया में और दैनिक चर्चाओं में 'आऊ जोडे' को आर्थिक परेशानियों और उच्च युवा बेरोजगारी से जोडा जाता है, परंतु साथ ही विदेशी भाषा एवं समुद्रपार यात्रा के उच्च सांकेतिक मूल्य से भी।

फिर भी स्लोवाक 'आऊ जोडो' के 50 साक्षात्कार जो लंदन में एक वर्ष के सहभागी अवलोकन के दौरान, जो 2004 एवं 2005 में किया गया, यह उजागर करते हैं कि उनके उद्देश्य को केवल आर्थिक व्यूहरचना तक निम्नतर नहीं किया जा सकता। सामान्यतया, कार्य करने की इच्छा, ज्यादा धन कमाने की इच्छा या अंग्रेजी सीखने को व्यक्तिगत विषयों के साथ मिश्रित कर दिया गया : प्रवासी निर्णयों को अभिभावकों, पार्टनर और दोस्तों के संबंधों के साथ जोड़ दिया गया। अगर एक महिला कहती है कि वो 'आऊ जोडी' बहुत परिश्रमपूर्ण और काफी कम वेतन वाले फैक्ट्री के कार्य को छोड़ने के लिये बनी, दूसरी महिला यह समझा सकती है कि उसने जाने के संदर्भ में निर्णय इसलिये लिया क्योंकि उसने अभी–अभी संबंधों में एक बदसूरत बिखराव झेला है और वो उसी गाँव में रहना बर्दाश्त नहीं कर सकती है, जिस गाँव में उसका पूर्व प्रेमी रहता है। 'आऊ–जोडे' के प्रवास से प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ (या फिर भविष्य में उसके वस्तुकरण के आसार), काफी बार ज्यादा जटिल एवं कम प्रत्यक्ष उद्देश्य का छद्मावरण था। सामान्य रूप से, यह अधिक सुविधाजनक दावा करना था, कि भाषा को सीखने की आशा की थी, अपेक्षा इस कथन से कि 'आऊ जोडी' बनने से अंत हुये प्रेम से भाग जा सकता था या फिर अभिभावक के घर पर प्रतिबंधित जीवन से बचा जा सकता था।

प्रवास से पहले, ज्यादातर स्लोवाक 'आऊ जोडे' अपने अभिभावकों के घर में रहते थे। उनके 'आऊ जोडे' प्रवास ने एक पूर्ण वैध साधन स्वतंत्र रहने के लिये प्रदान कर दिया : 'आऊ जोडे' अपने को इस प्रकार देखते है, एक ऐसा काल जो अभिभावकों के घर छोड़ने के और स्वयं के स्थापित होने के मध्य में आता है (संभवतया स्वयं के परिवार की शुरूआत)। वो अपने विदेश में गुजारे गये समय को एक साहसिक कार्य के अवसर के रूप में, एक प्रयोग के रूप में एवं मनोरंजन के रूप में देखते हैं। 'आऊ जोडे' अपने घर वापस कोई रकम नहीं भेजते थे और उनसे ऐसी अपेक्षा भी नहीं की जाती थी। उनकी कमाई–अर्थात 'जेब खर्च'–'जेब खर्च' की तरह से ही प्रयोग किया जाता था–मौज–मस्ती, फैशन, पार्टी एवं उपहार के लिये। काफी ने यह भी रिपोर्ट किया कि उनकी कमाई का कुछ भाग, हालांकि ज्यादा नहीं, भविष्य के लिये बचाया गया या फिर भाषा सीखने के लिये प्रयोग किया गया। काफी जोडो ने अपने साक्षात्कार में बताया, कि भविष्य में उन्हें ज्यादा सतर्क रहना होगा और धन की बचत करनी होगी, या अपने समय एवं आर्थिक संसाधनों को अपने बच्चों पर कुर्बान करना होगा। पर अब, मस्ती करना आवश्यक था, संबंधों के साथ प्रयोग करते हुये और जिसे 'आऊ जोडे' ने अधिक विकसित उपभोगी संस्कृति के रूप में देखा था।

कई 'आऊ जोडो' ने प्रयोगों को वृहद् प्रोजेक्ट के भाग के रूप में वर्णित किया : विदेश में प्रवास, अपने अभिभावकों से स्वतंत्र होना और सिर्फ स्वयं पर निर्भर रहना, बढ़ने के और स्वयं विकास के संदर्भ में पाठ पढ़ाते है। 'आऊ जोडे' काफी बार अपने कार्य की तुलना सेना से करते है, जो मेरे अनुसंधान के वक्त चेक प्रजातंत्र में तब भी पुरूषों के लिये अनिवार्य था। काफी संख्या में महिलाओं के लिये, 'आऊ जोडना' को एक प्रकार के 'मार्ग की रीति' के रूप में देखा जाने लगा, उन्हें वयस्क रूप में प्रवेश कराने वाला, उनकी स्वतन्त्रता को साबित करते हुये।

इस स्वयं–समझ ने, 'आऊ जोडियो' के लिये गंभीर परिणाम दिये, क्योंकि इसने उनमें से काफी को उन परिस्थितियों को चुनौती देने के लिये उत्साहित किया जिसे वे अन्यायपूर्ण पाते है। वैध नियमों द्वारा सिफारिश किये गये 'आऊ जोड़ी' एवं मेजबान परिवारों के मध्य समान संबंध, शक्ति असमानताओं की परिस्थितियों में मुश्किल से सम्भव हो पाते है। 86 परिवारों में से 82 मेजबान परिवार जिनके लिये मेरे सूचनादाताओं ने कार्य किया, ने नियमों का पूरी तरह से पालन नहीं किया : मेजबान परिवार बारंबार यह मांग करते थे कि उनके 'आऊ जोडे' ज्यादा घंटे कार्य करे, उससे ज्यादा जितने उनको करने निश्चित किये गये है, और वो उस ज्यादा वक्त का भुगतान भी नहीं देते है, या वो 'आऊ जोडो' के खाली समय या भाषा सीखने संबंधी अधिकारों को भी नजरअंदाज कर देते हैं। कुछ 'आऊ जोडो' से उसी कमरे में, यहां तक कि उन्हीं बालकों के समान पलंग पर भी सोने की अपेक्षा की जाती है जिनकी वो देखभाल कर रहे हैं।

'आऊ जोडो' की आप्रवासी प्रस्थिति, यह तथ्य कि वो उन्हीं घरों में रहते थे जो उनका 'कार्य–स्थल' भी था, भाषा–प्रवाह की कमी–साथ ही उनकी संश्यमयी स्थिति, कि घर के अन्दर, जहां वे श्रमिक, मेहमान और अस्थायी परिवार सदस्य थे भी और नहीं भी थे–उनको कार्य और जीवन की स्थितियों के संदर्भ में वार्ता करने के दौरान विशेषतया हानि में लाकर छोड़ दिया। सर्वाधिक 'आऊ जोडो' के लिये, शोषण करने वाले मेजबान परिवार को छोड़ कर जाने का अर्थ था तीन प्रकार के मुश्किल विकल्पों का सामना करना : एक नये मेजबान परिवार को ढूँढना, U.K. में दूसरा रोजगार ढूँढना या फिर वापस स्लोवाकिया लौट जाने का निर्णय लेना।

बारंबार, 'आऊ जोडो' ने रूक जाने का निर्णय लिया हालांकि उनको शोषण का सामना करना पड़ रहा था या फिर वो बुरे व्यवहार से त्रस्त थे। जहां कुछ 'आऊ जोडो' ने वहां रहने के अधिक प्रयोगिक कारण बताये–जैसे घर वापस जाने के लिये धन का न होना, या साफ शैक्षणिक या रोजगार की संभावनाओं की कमी जो रोजगार के असंगत अंत के बाद आयी–कई ने महसूस किया कि उन्हें यह साबित करने की आवश्यकता है कि वो मुश्किल वक्त को झेल सकते है। कॉफी ने वर्णन किया कि शोषण वाली परिस्थिति में रहना एक परीक्षा है, जिसने यह साबित किया कि वे वयस्क थे, और मुश्किलों के बढ़ने के साथ उनको उनके अभिभावकों के पास लौटने की आवश्यकता नहीं थी। विरोधाभासपूर्ण, संरचनात्मक असमानता के साथ उनका वृद्धि के दृढ़ निश्चय ने उनका रूझान शोषण को रोकने की तरफ कम कर दिया। 'आऊ जोडे' का व्यक्तिगत व्यस्कता को प्रदर्शित करने का प्रयास निःसंदेह उनको असक्षम बनाने में योगदान देता है। ■

जूजाना सीकीराकोवा बयूरीकोवा से पत्र व्यवहार हेतु पता <burikova@fss.muni.cz>

> घर पर शिक्षा : चेक शिक्षा में स्वतंत्रता और नियंत्रण

इरिना कैस्परोवा, मसारयक विश्वविद्यालय ब्रनो, चेक रिपब्लिक

घर पर शरीररचना विज्ञान का पाठ! चित्र इरिना कैस्परोवा।

पिछले दो दशकों से, चेक छात्रों की विद्यालयी प्रदर्शन में काफी तेजी से गिरावट आयी है–विभिन्न अंतराष्ट्रीय मापदंडों के अनुसार (उदाहरण-PISA मानक)–यह वह तथ्य है, जिसने शिक्षा, उसकी भूमिका निर्देश और तरीकों के विषय को राष्ट्रीय वाद–विवाद का उत्तेजक विषय बनाया। सिर्फ तुलनात्मक मानकों से ही असंतुष्टी नहीं थी, अपितु वृहद सामाजिक विषय, जैसे व्यक्तिगत उपागम की कमी, अनिवार्य शिक्षा में चुनाव की स्वतंत्रता की कमी, अभिभावकों के अनुसार कि वो उस प्रभुत्व जीवनशैली से काफी असंतुष्ट है, जो कार्य और विद्यालय की शिक्षा काफी कम उम्र में बच्चों को अभिभावकों से अलग कर देती है, भी असंतुष्टी के कारण थे।

साम्यवादी युग के बाद–दबे हुये व्यक्तिवाद के दशक–कुछ चेकवासियों ने बहस की, कि व्यक्तियों को अपनी और अपने परिवारों की जिम्मेदारी लेनी चाहिये। उत्तर साम्यवादी सरकार ने सामाजिक दायरों के विभिन्न क्षेत्रों में नयी संभावनायें खोली दी है, जिसमें शिक्षा का क्षेत्र भी शामिल है। परिणामस्वरूप घर में शिक्षा, विभिन्न शैक्षणिक विकल्पों में से एक विकल्प के रूप में शामिल किया गया।

प्रयोग में, चेक की घर में शिक्षा काफी भिन्न है, इसकी सीमा अविद्यालयी शिक्षा से–बालक चलित सीखने के दर्शन–से घरेलू वातावरण में औपचारिक विद्यालय पाठ्यक्रम को दृढ़तापूर्वक अनुसरण करने की सीमा तक जाती है हालांकि कुछ साक्ष है जो पिछले दस सालों में चेक अभिभावकों में इस शैक्षिक संभावना की बढ़ती माँग को दर्शा रहे है, परन्तु यह एक अल्प प्रयोग ही बना हुया है, जो एक प्रतिशत से भी कम विद्यालय जाने वाले उम्र के बालकों को समावेश किये हुये हैं।

साम्यवादी युग (1947–1989) के दौरान, छात्रों के पास नौ वर्ष की अनिवार्य शिक्षा के लिये राज्य द्वारा संचालित विद्यालयों के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं था। इस प्रकार लगभग सभी समसामयिक चेक अभिभावकों (30 या उससे अधिक उम्र के) की स्वयं की शिक्षा, साम्यवादी विचारधारा, जो समानता, सादृशता, समनुरूपता एवं एकरूपता पर जोर डालता है, से हुयी है।

फिर काफी अभिभावकों के लिये, घर में शिक्षा एक नयी अवधारणा है और सही मायनों में क्रांतीकारी विचार प्रतीत होता है। फिर कुछ उच्च शिक्षित अभिभावक जो विदेश में रह कर आये थे इसके लिये बलपूर्वक एकजुट हुये और घर में शिक्षा वैध रूप से 2005 में बालक और अभिभावक अधिकार के रूप में स्थापित हुयी।

नये नियम के अनुसार, अभिभावकों को बालक को घर में शिक्षा प्रदान करने का अधिकार प्राप्त हुआ (प्रथम से पंचम ग्रेड तक)। वैध नियमावली में शिक्षक–अभिभावक, कम से कम हाई स्कूल डिप्लोमा होना चाहिये और उनके पास एक समर्थन पत्र जो शिक्षाशास्त्र मनोवैज्ञानिक परामर्श केन्द्र जो राज्य द्वारा संचालित हो के द्वारा प्रदान किया हुआ होना आवश्यक है। शिक्षक–अभिभावक को समझाना चाहिये कि वह बालक को घर पर क्यों शिक्षा देना चाहता है और उन्हें शिक्षण हेतु संतोषप्रद क्षेत्र का प्रदर्शन भी करना होगा (अर्थात् फ्लैट में सही फर्नीचर, माहौल और क्षेत्र)। बालक को कम से कम दो बार औपचारिक परीक्षा देनी चाहिये।

यह कानून शिक्षा में स्वतंत्रता प्रदान करता है, पर साथ ही राज्य की यह मंशा भी बता देता है, जो यह दर्शाता है कि राज्य जितना संभव हो सके इस स्वतंत्रता पर नियंत्रण रखना चाहता है, अभिभावकों को अपनी सांस्कृतिक एवं वित्तिय संपत्ति प्रदर्शित करनी होती है। अभिभावक और बालकों को शिक्षाशास्त्र–मनोवैज्ञानिक परामर्श केन्द्र के परिक्षण से गुजरना होगा, जो राज्य के चौकीदार का कार्य करेगा और उसे अनुमति देने की शक्ति होगी। कुछ अभिभावकों ने रिपोर्ट किया कि उन्हें कई परामर्श केन्द्रों में आवश्यक प्रमाण–पत्र प्राप्त करने के लिए घूमना पड़ा।

चेक राज्य ने परामर्श कार्यालय क्यों बनाये थे–जिसका मुख्य कार्य मुख्यधारा विद्यालयी शिक्षा, से वर्जन को बचाना रहा है–घर

> >

में शिक्षण का मध्यस्थ? कई अधिकारी, जो रूढ़िवादी रूझान के है, ने घर पर शिक्षा के विचार का समर्थन नहीं किया और व्यक्तिगत कारणों के आधार पर आवेदनकर्त्ताओं को अस्वीकार कर दिया, जबकि व्यवस्थित कारक जैसे आर्थिक संसाधन की उपलब्धि को नजरअंदाज कर दिया। विद्यालयों से भिन्न, जिन्हें हर बालक जिसका नामांकन हुआ है (इसमें घर में शिक्षा प्राप्त कर रहे वे बालक भी शामिल है जिनका साल में दो बार परिक्षण किया जाता है) के लिये एक निश्चित धन प्रदान किया जाता है, घर में शिक्षा प्रदान कर रहे अभिभावकों को राज्य से कोई वित्तिय सहायता प्रदान नहीं की जाती है, जिसकी मदद से किताबें, फर्नीचर, शिक्षण सामग्री या कम दरों में खाना उपलब्ध करवाया जा सके। घर में शिक्षा, जो ज्यादातर पार्ट–टाईम (या बिल्कुल नहीं) एक या दोनों अभिभावकों की आमदनी से सम्बन्धित है, सिर्फ उन्हीं लोगों के द्वारा प्रयोग की जा सकती है जो इसे वहन करने में समर्थ है।

शिक्षा में वर्जन की अवधारणा राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से काफी संवेदनशील है, चेक के संदर्भ में। पूर्व में, घर में शिक्षा को वर्जित रूप से दो मुख्य कारणों की वजह से दर्शाया गया। एक तरफ चेक कुलीनता और अल्पतंत्र का अनुभव था, जो निजी शिक्षण का खर्च वहन करने में सक्षम था–क्रांति के बाद एक ऐसी वर्जना के रूप में चित्रित किया गया जो केवल अमीरों के लिये अनुचित विशेषाधिकार था। 1947 के साम्यवादी आधिपत्य के उपरान्त इस वर्ग के सदस्य बिखर गये। नये राज्य ने तर्क दिया कि साम्यवाद में घर में शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि निःशुल्क उच्च स्तरीय शिक्षा सबको प्रदान की जा रही है। दूसरी तरफ साम्यवाद के अन्दर, वर्जना और घर में शिक्षा ने एक बिल्कुल अलग अर्थ ले लिया। क्योंकि विद्यालयी शिक्षा ने क्रांति के बाद समरूपता एवं सार्वभौमिकता पर बल दिया पर वहां पर अन्तर की कोई जगह नहीं थी। बालक जिनके पास 'अ–समानुरूपता' की क्षमता है, चाहे वो शारीरिक हो या मानसिक, को मुख्यधारा शिक्षा में जगह बनाने के लिये संघर्ष करना पड़ा। विशेष विद्यालय स्थापित किये गये, उनके लिये जिन्हें 'भिन्न' नाम से चिन्हित किया गया–जिसमें पूरा एक प्रजाति समूह भी शामिल है, जैसे रोमा। अगर यह विशेष विद्यालय पर्याप्त नहीं थे, तो बालक को घर पर पढ़ाया जाता था। जिनको साम्यवादी राज्य में घर में शिक्षित किया जाता था, उन्हें दया का पात्र समझा जाता था और स्वस्थ समाज में समावेश के लिये असक्षम भी।

वर्तमान में, शिक्षा मंत्री ने प्राथमिक ग्रेड के बाद घर में शिक्षा की हर संभावना को खारिज कर दिया है। उनका यह कदम उदाहरण है इसका कि 'घर में शिक्षा' अभी भी चेक जनता में उत्तेजना पैदा करता है। हालांकि देश के वि–केन्द्रीकरण एवं उदारीकरण ने घर में शिक्षा को एक अच्छे विकल्प के रूप में वैध एवं सामाजिक समर्थन प्रदान किया है, परन्तु प्रयोग में यह काफी कम प्रतीत होता है। एक तरफ कानून विकल्पों के लिये स्थान प्रदान करता है, उसकी जड़े राज्य में काफी मजबूती से है। इस प्रकार उनके चुनाव का छद्मावरण किया जाता है। साम्यवाद युग में इसने काफी कुछ किया, वर्जना अभी भी खोते हुये राज्य नियंत्रण को पुकार रहा है, जिसे अभी भी अवांछित माना जा रहा है। इस प्रकार हम अपने आपको एक विरोधाभास के साथ पाते है : राज्य, घर पर शिक्षा के रूप में, समावेशित शिक्षण योजना के द्वारा खोलता है, पर साथ ही नियंत्रण प्रणाली जो घर पर शिक्षा का नियमन करती है, उसे एक वर्जित खण्ड में बदल देती हैं। ■

इरिना कैस्परोवा से पत्र व्यवहार हेतु पता <irenakasparova@seznam.cz>

> चैक रिपब्लिक में रोमा श्रमिकों की याद में

केटरिना सिडिरोपूलू जानकू, मासारयक विश्वविद्यालय ब्रनो, चैक रिपब्लिक

प्राग में नेशनल थियेटर पियाजेटा पर रोमा प्रदर्शनी।
चित्र माइकल हैकोवस्की।

15 मई, 2013 है और हम ओलोमोउक के प्रकाशयुक्त वर्ग में खड़े है, उस शहर में जो ब्रनो और ओस्ट्रावा के मध्य में स्थित है, जहां हम प्रोजेक्ट 'मेमोरी ऑफ रोमा वर्कस' का नाट्यांकन् कर रहे है। यह पूरी टीम की पहली बड़ी लड़ाई है। दस से ज्यादा लोग जिसमें शिक्षाविद्, सामुदायिक कार्यकर्ता एवं शिक्षक शामिल है, ने लम्बे दिवस के प्रारंभ में एक वृत्त में खड़े होकर तैयारी हेतु कार्यों की चर्चा की। समान लक्ष्य पर साथ कार्य करने के लिये, एक दूसरे को जानना और आपसी विश्वास स्थापित करने से बेहतर कोई तरीका नहीं हो सकता। हमारा लक्ष्य है, स्लोवाक रोमा जो 1945 के बाद चेक की धरती पर कार्य करने आये थे पर एक प्रदर्शनी तैयार करना, इन घटनाओं को यादगार बनाना और रोमा को चेक समाज में प्रतिष्ठित प्रस्थिति दिलाना।

''जब मैं शहर के उस हिस्से में घूमता हूं जहां हम कार्य करते है, मैं हमेशा युवतियों से पूछता हूं कि मैं ठीक से नहीं जानता, 'खातर साल?' (कहां के हो?), क्योंकि मुझे पता है कि वो सब और कहीं से आये है और उनके परिवारों की जड़े स्लोवाकिया में है, जैसे कि मेरी है'' बोजीना डूडी कोटोवा का कथन है, जो एक सामुदायिक कार्यकर्ता है और एक रोमा लेखक की पुत्री है, सक्रिय कार्यकर्ता है जो 1952 में स्लोवाक–यूक्रेन सीमा से वर्तमान जेसिआ में प्रथम बार आई थी। भविष्य के प्रदर्शनी के वस्तुकार सुन रहे है, टीम के दूसरे सदस्य प्रदर्शनी के शीर्षक पर सहमति दे रहे है और मैं खुश हूं, प्रोजेक्ट के फिल्मनिर्माता उस पल को कैमरे में कैद कर रहे हैं।

मैंने पूछा, '' 'खातर साल' को कैसे वर्तनी करते हो?'', क्योंकि मेरी रोमा भाषा काफी कमजोर है। मैं कुछ मुख्य वाक्य खण्ड ही जानता हूं, जो अभिनंदन करने के लिये, आदर प्रदान करने के लिये और आवश्यकतानुसार रक्षा की व्यूहरचना करने के लिये काफी है। रोमा भाषा मेरे लिये काफी जटिल है : पांचवे पाठ को मैं नहीं समझ पाया। बोजीना ने वाक्य की वर्तनी की ओर जोड़ा, ''पर हमें प्रदर्शनी

> >

का नाम 'खातर सान' रखना चाहिये? क्योंकि अभी भी प्रौढ़ वर्ग को भाषण देने के लिये औपचारिक शब्दों का प्रयोग प्रचलन में है।''

यह 8 सितम्बर, 2014 है और एक घर के चिपबोर्ड प्रतिरूप के समक्ष मेरा प्रारम्भिक भाषण पढ़ रहा हूं। यह घर बाहर से कच्चा है और अन्दर से चेक और रोमा झंड़ों के रंगों से रंगा हुआ है। लगभग पचास लोगों ने उत्सवी भीड़ बना ली। उनमें से एक सादे वस्त्रों में पुलिसवाला है, जो अतिवाद में विशेषीकृत है, शायद इसलिये क्योंकि यहां पर हमने स्थानीय पुलिस को बताया था कि हमने ओस्ट्रावा – विटकोवाइस वर्ग पर एक प्रदर्शनी की योजना बनायी है, और संकोच के साथ निवेदन किया कि क्या वो चीजों को नजरअंदाज कर देंगे। हमें नहीं पता था क्या हो सकता है। या फिर क्या होगा। प्रदर्शनी को? हमें? ओस्ट्रावा के केन्द्रीय जिले के काउंसलरों ने हमें प्रदर्शनी को मुख्य वर्ग में रखने की अनुमति देने से मना कर दिया और उनके निर्णय पर वाद–विवाद करने के हमारे आमंत्रण को नजरअंदाज कर दिया। ''आश्चर्य नहीं'' ओस्ट्रावा–विटकोवाइस के एक दर्शक ने कहा। ''वो केन्द्रीय ओस्ट्रावा की छवि के लिये खुद को उत्तरदायी महसूस करते है और वो उसे जिप्सी भूमि जैसा नहीं देखना चाहते।'' विटकोवाइस का क्रोनिकल, उसे दूसरे तरह से देखता है। ''मैं काफी उत्साहित हूं कि हमारे पास यह नया सांस्कृतिक प्रारूप है, ओस्ट्रावा में और किसी के पास यह नहीं है।''

सबसे बड़ा आश्चर्य क्या था? प्रदर्शनी के पांच हफ्तों के दौरान सुन्दर वस्तुओं को तहस नहस करने की कोई नीति नहीं आयी। रोमा परिवार तैयार होकर आये, अपने संबंधियों और पड़ोसियों की कहानियां देखने और सुनने के लिये। एक बेघर आदमी ने हमें प्रदर्शनी में अन्दर आते हुये, एक रूचिकर अनुभव के लिये धन्यवाद दिया। तरूण गुजर रहे थे–नवीनतम तकनीक प्रयोग करते हुये, सभी तैयार हुये, समसामयिक, पास पहुंचने भर की संभावना से उन्मादित, क्योंकि हम उनसे बात करना शुरू कर सकते थे। वरिष्ठ चेकवासी 1960 से, रोमा के सह–कार्यकर्ताओं, पड़ोसियों और तरूण प्रेम को याद कर रहे थे। एक प्रारंभिक स्कूल की निर्देशक, जो रोमा शिष्यों से भरा है, उनको यह भी नहीं पता कि रोमा झंडा भी है–अपनी अज्ञानता पता लगने पर भी शर्मिन्दगी प्रकट नहीं की।

9 फरवरी, 2015 है और मुझे चेक के सांस्कृतिक मंत्रालय से एक ई–मेल मिला, जो प्रोजेक्ट 'मेमोरी ऑफ रोमा वर्कस' को फंड दे रहे थे। जैसा हमने वादा किया था, हमने तीन प्रदर्शनी लगायी, परन्तु वो अलग–अलग दो महीने तक नहीं चली। 2014 की बसन्त में, दो महीने की परिस्थितियों को पूरा करने की पूर्ण इच्छा लिये हुये, पर जैसे जैसे रूकावटें और पारदर्शी राजनीतिक एवं प्रशासनिक दबाव बढ़ता गया, मैं इस परिस्थिति से धीरे–धीरे पीछे हटने लगा और मैं भूल गया कि यह ग्रांट की परिस्थितियों को पूरा करने के लिये आवश्यक था। मैं पूरी प्रक्रिया (जिसमें एक जगह के लिये 15 अनुमति लेना, पूरा समय का रिकार्ड रखना शामिल थे) की प्रशासनिक जटिलताओं से और साथ ही अस्पष्ट और कई बार अमित्रतापूर्ण संप्रेषण के तरीके से मैं विह्वल हुआ। हमारे पास पहले से ही दो समूह है जो प्रदर्शनी को अनुसरण करने को समर्थन देने में रूचि रखते है। एक स्वतंत्र विदेशी कला संग्रहालय के अध्यक्ष ने हमारी प्रदर्शनी देखी और हमें प्रशंसा पत्र भेजा, इस आग्रह के साथ कि हम पुराने फोन की कार्यशैली के विषय में बताये, जिसे आप डायल कर सकते है और रोमा साक्षी के विभिन्न कथनों को सुन सकते हैं। भविष्य में प्रदर्शनी में रूचि के अलावा, वहां पर अंतर–प्रजातीय संबंधों, शिक्षा और सामाजिक असमानताओं का निराकरण, या फिर जन संवाद को सक्षम करने की संभावना और 'स्वयं असहयोग' के आयु के अंतर से सौदा करना, पर सैद्धान्तिक चिंतनशील लेख भी थे। हमारा अनुमान है कि करीब 2,500 लोगों ने अंदर से हमारी प्रदर्शनी देखी और हजारों से ज्यादा की संख्या में बाहर से। हम बिल्कुल यह महसूस नहीं कर रहे है कि सब बेकार गया। परन्तु प्रयोगिक–विज्ञान के मापदण्ड के अनुसार हम असफल हुये और हम फिर से वर्ग एक पर आ गये। इसलिये हमने फिर से एक दूसरा प्रदर्शनी टूर की योजना बनायी। भाग्यवश एक समर्थक ने प्रदर्शित सभी वस्तुओं को बचा लिया, जैसे हम प्रदर्शनी बन्द कर रहे थे। वो उन्हें बस अड्डे पर खुद के शहर में प्रदर्शित करना चाहता है, यह एक औद्योगिक केन्द्र है जहां कुछ रोमा साक्षी है, जो युद्ध के बाद कार्य कर रहे है और स्लोवाकिया से आये है। 1989 के बाद शहर केन्द्र में किराये में काफी वृद्धि आयी है, और ज्यादातर रोमा ने परिधि वाले क्षेत्रों के लिये पलायन कर लिया है–चेक शहरों के उत्तर–समाजवादी नमूनों के कई समरूपों में से एक।

प्रवर्तक प्रयोगिक विज्ञान सबसे ज्यादा निभाने वाली और निराशाजनक–व्यवसायिक चुनौती है, जिसका मैंने इन सालों में सामना किया है। ■

केटरिना सिडिरोपूलू जानकू से पत्र व्यवहार हेतु पता <katerinasj@fss.muni.cz>

> चीन की श्रमिक राजनीति में बदलाव के परिदृश्य

लेफेंग लिन, यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कोनसिन, मेडीसन, यू. एस. ए.

युवानझाउ में गैर सरकारी संगठन तथा कार्यकर्ता एक सफल मोलभाव सत्र का आयोजन करते हुए। चित्र लैफेंग लिन द्वारा।

सन् 2010 में जब चीन में राष्ट्रीय स्तर पर हड़तालों की लहर उठी तब संचार माध्यम एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं ने यह कहना शुरू किया कि चीनी श्रमिक अशांत, अनेक दंगों में संलग्न तथा हड़तालों एवं बहिष्कार में सक्रिय समूह बन गये हैं। लेकिन आज श्रमिकों से जुड़े गैर–सरकारी संगठन (NGO) एवं युवा श्रमिक विचारक समान प्रकार के कथनों का उल्लेख करते हैं। विशेष रूप से दक्षिण चीन में जहां विभिन्न देशों के वैश्विक उत्पादक विद्यमान हैं। श्रमिकों का प्रतिरोध व्यक्ति केन्द्रित विधि क सक्रियता से सामूहिक सक्रियता की तरफ अग्रसर हो रहा है तथा गैर–नियोजित दंगों एवं हड़तालों का स्थान रणनीतिक हड़तालों एवं सौदेबाजी ने ले लिया है। इन सबके पीछे श्रमिकों के गैर–सरकारी संगठन एवं सक्रिय कार्यकर्त्ता एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं जिनका मुख्य कार्य सक्रियकरण एवं संगठनात्मक स्थितियों को उत्पन्न एवं विकसित करना है।

ठीक इसी समय, श्रमिक विचारक एवं सक्रिय कार्यकर्त्ता चीन की श्रमिक संघ गतिविधियों की आलोचना कर रहे हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में वे नौकरशाही एवं गैर–प्रतिनिधित्व वाली प्रणालियों का रूप ले चुकी हैं। अनेक अवलोकनकर्त्ताओं का सुझाव है कि शायद श्रमिक संघों का एकमात्र अवलोकनीय काम श्रमिकों की एक ऐसी लॉबी तैयार करना है जो नये श्रम कानूनों के निर्माण के लिए सक्रिय हो सके। श्रमिक संघों के अध्यक्ष कम्यूनिस्ट पार्टियों की समितियों के एवं पीपुल्स कांग्रेस के राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर के नेतृत्वकारी पद पर हैं। ताकि वे कानून के निर्माण में अवलोकिन की जाने वाली भूमिका का निर्वाह कर सकें। सामान्यतः श्रमिक संघों की प्रणाली एक नौकरशाही दल के अवयव के रूप में काम कर रही है। संघ के पदाधिकारी दल के द्वारा नियुक्त किये जाते हैं और उनमें से अनेक का अब श्रमिकों अथवा श्रम सम्बंधों के ज्ञान से आंशिक संपर्क है। इसके साथ ही अनेक अधिकारी केवल इस तथ्य को लेकर ज्यादा सजग रहते हैं कि वे श्रमिक संघ के कितने सदस्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनका श्रमिक संघ कितना शुल्क एकत्रित करता है। वे श्रम अधिकारों के प्रति सजग नहीं है। हड़तालों में अवलोकनकर्त्ताओं ने यह देखा है कि श्रमिक संघों के पदाधिकारी सरकारी अधिकारियों एवं नियोक्ताओं के साथ सहयोग करते हैं और यह कोशिश करते हैं कि श्रमिक अपने–अपने काम पर वापस लौट जाये। स्पष्ट रूप से श्रमिक संघ श्रमिकों को नियंत्रित करने में ज्यादा रूचि लेते हैं और श्रमिकों की समस्याओं की समाधान की उपेक्षा कर देते हैं।

शैनजेन में जब मैंने अपना क्षेत्रीय कार्य प्रारम्भ किया, मैंने अनुमान लगाया था कि श्रमिकों के गैर–सरकारी संगठन एवं सक्रिय कार्यकर्त्ता श्रमिकों के भविष्य के प्रति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते होंगे। मैंने यह अपेक्षा औपचारिक/सरकारी

> >

मान्यता प्राप्त श्रमिक संघों से नहीं की थी। मेरा मानना था कि यदि मैं अपने अवलोकन को गैर–सरकारी संगठनों, उद्योगों एवं समुदायों तक केन्द्रित रखूंगा तो मेरा यह विश्वास था कि संभवतः श्रमिक संघर्षों में गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका केन्द्रीय होगी। परंतु जब मैंने स्थानीय श्रमिक संगठनों के कार्यालयों में अपनी पहुंच बनायी तो मैंने यह देखना प्रारम्भ किया कि श्रमिक संघ एवं गैर–सरकारी संगठन चीन की तेज गति से बदल रही श्रम–संबंधों की प्रणाली से अनुकूलनशीलता बना रहे हैं तथा चीन की श्रम राजनीति को श्रमिक संघ एवं गैर–सरकारी संगठन पुनः आकार प्रदान कर रहे हैं।

श्रम से सम्बंधित गैर सरकारी संगठनों की श्रमिकों को संगठित करने एवं सक्रिय करने में सहभागिता सापेक्षिक रूप से हाल का ही विकास है। पिछले दशक में श्रम से जुड़े इन गैर–सरकारी संगठनों ने अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्र के श्रमिकों की सेवाएं की हैं। ये वे श्रमिक हैं जिन्हें चीन में पंजीकृत नगरीय आवासीयों की तुलना में सामाजिक संसाधन आंशिक रूप से उपलब्ध हैं। ये गैर–सरकारी संगठन श्रमिकों को विधिक् सहायता प्रदान करते हैं विशेषताः उन श्रमिकों को जिन्हें श्रम कानूनों की जानकारी नहीं है तथा वकील की सेवाएं लेने के लिए पैसा नहीं है। ये श्रमिक संगठन (गैर–सरकारी) इन श्रमिकों को सरल प्रकार का मनोरंजन करवाते हैं, जैसे सिनेमा दिखा देना एवं अन्य प्रकार की सामुदायिक सेवाएं करते हैं जैसे विद्यालयी शिक्षा का समय समाप्त होने के बाद विभिन्न कार्यक्रम।

2010 में, हालांकि, अनेक श्रमिकों ने कार्य स्थल गतिविधियों में सहभागिता करना प्रारम्भ कर दिया था। इसके जवाब में, श्रमिकों से जुड़े कुछ गैर–सरकारी संगठन अब संघ के आयोजन और सामूहिक सौदेबाजी में सहायता करने के लिए अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षित करते हैं। परंतु श्रमिकों से जुड़े गैर–संगठन वास्तविक चुनौतियों का सामना करते हैं : उनके एजेण्डा अक्सर अंतराष्ट्रीय वित्तीय सहायता देने वाली संस्थाओं द्वारा बाधित होते है तथा वे चीनी राज्य के द्वारा राजनीतिक दमन का सामना करते हैं। श्रमिकों के कई गैर–सरकारी संगठन बहुत छोटे हैं और उनके पास कार्य को आयोजित करने के लिए सीमित संसाधन हैं। इसके अतिरिक्त, वित्तीय सहायकों के बीच असहमति अथवा वैचारिक मतभेदों के कारण श्रमिकों से जुड़े गैर–सरकारी संगठन अक्सर सापेक्षिक रूप से एक–दूसरे से पृथक रहते हैं। कुछ गैर–संगठनों के संगठनात्मक हित संकीर्ण होते हैं : यदि एक गैर–सरकारी संगठन हड़ताल में शामिल हो जाता है, तो इससे अन्य गैर–सरकारी संगठनों को धक्का लग सकता है। ये संगठनात्मक मुद्दे अक्सर उलझ जाते हैं तब जबकि बाहरी पर्यवेक्षक कभी–कभी एक संयुक्त 'नागरिक समाज' की रणनीति के बारे में क्या कल्पना करते हैं।

यह जानते हुए कि श्रमिकों के गैर–सरकारी संगठन श्रमिकों का समर्थन करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, चीन के श्रमिक संघों ने गैर–सरकारी संगठनों से लंबे समय से सम्बद्ध क्षेत्रों में बढ़ना/अग्रसर होना शुरू कर दिया है। श्रमिक संघ अपने सदस्यों को तेजी से कानूनी सहायता, मनोवैज्ञानिक सहायता, निर्धनता से राहत, सतत् कॉलेज शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति, कौशल प्रशिक्षण, पेशेवर प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए टयूशन में छूट, संघ निर्माण तथा सामूहिक सौदेबाजी के लिए प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। अधिकाधिक संसाधनों व उनके उपयोग के साथ, श्रमिक संघ अक्सर छोटे गैर–सरकारी संगठनों की तुलना में बहुत अधिक हासिल कर सकते हैं। कुछ संघ कार्यस्थल पर कार्यकर्त्ताओं/श्रमिकों को जुटाने के लिए और अधिक ध्यान दे रहे हैं, यहां तक कि लोकतांत्रिक चुनाव कराने, सदस्यों के प्रति जवाबदेह बनने तथा उनके हितों का प्रतिनिधित्व करने का वादा किया है।

हालांकि, संघों के लाभकारी कार्यक्रम और उनकी सुधार नीति अभी भी कारखाने की अधिकांश शाखाओं तक नहीं पहुंची है। चीन के श्रमिक संघों के सात प्रशासनिक स्तर है : केन्द्रीय, प्रांतीय, नगर निगम, जिला, मोहल्ला (गली), समुदाय तथा कारखाना। केवल कारखाना स्तर पर संघों के कर्मचारी हैं, अन्य सभी स्तरों पर, श्रमिक संवर्ग के अधिकारियों की भर्ती दल द्वारा की जाती है। यद्यपि संघों की प्रशासनिक संरचना लम्बवत् है, उच्च स्तरीय संघ निम्न स्तर के संघों को आदेश नहीं दे सकते, क्योंकि प्रत्येक स्तर पर संघ के अधिकारियों को उच्च–स्तर के संघ – चीन में एक सामान्य राजनीतिक संरचना, कभी–कभी इसे ''ट्रेप–एंड–ब्लॉक'' (जाल एवं खण्ड) के रूप में भी वर्णित करते हैं–के बजाय उसी दल की समिति के द्वारा नियुक्त किया जाता है।

समस्या तब विशेष रूप से स्पष्ट हो जाती है जब श्रमिक संघ और श्रमिकों के गैर–सरकारी संगठन श्रमिकों की हड़तालों में हस्तक्षेप करते हैं। पिछले जून में, मजदूर/श्रमिक हड़ताल पर चले गये, जब गुआंगडोंग प्रांत के लांग जिले में एक पुनर्गठित जूता निर्माता कंपनी अपने मजदूरों के साथ मजदूरी और लाभों के संबंध में किये गये समझौते को पूरा करने में असफल हुयी। एक स्वतंत्र गैर–संगठन ने मजदूरों को संगठित करने तथा नियोक्ता एवं पुलिस के साथ सौदा करने में उन्हें प्रशिक्षित करके उनकी सहायता की। जवाब में, नगर निगम संघ ने एक असामान्य कदम उठाया : उसने अधिकारियों को क्षेत्र में भेजा, इन हड़ताली श्रमिकों का समर्थन करने के लिए जिला संघ को कहा।

हालांकि, ना ही जिला संघ ने और ना ही सरकारी संस्थाओं ने नगर निगम संघ के सुझावों का पालन किया। इसके बजाय, जिला पार्टी के नेता के सुझाव पर, उन्होंने हड़तालकर्मियों पर गोली चलाने की नियोक्ता को अनुमति दी तथा पुलिस ने हड़ताल को दबाने की आशा से श्रमिकों के प्रतिनिधियों को गिरफ्तार कर लिया–यद्यपि यह कीमत के लिए की गई थी। गोली चलाने वाले एक कार्यकर्त्ता/श्रमिक ने कारखाने की इमारत से कूदकर आत्महत्या कर ली, तब मीडिया के प्रदर्शन ने बाद में शहर की सरकार तथा पार्टी समिति पर महत्वपूर्ण दबाव डाला। नगर निगम संघ ने गुस्सा होकर जिला संघ एवं सरकारी अधिकारियों की आलोचना की, परंतु मामला वहीं समाप्त हो गया : परंतु ऐसा कोई तंत्र नहीं है जिससे नगर निगम संघ, जिला संघ के प्रति उत्तरदायी/जवाबदेह बने।

मजदूरों की सामूहिक कार्यवाही के जवाब में, श्रमिकों के गैर–सरकारी संगठन तथा श्रमिक संघ दोनों स्वयं को बदल रहे हैं। पिछले एक साल से, श्रमिकों के गैर–सरकारी संगठनों ने एक श्रमिक नेटवर्क निर्मित किया है तथा अपने संसाधनों को एकीकृत किया है। श्रमिक प्रदर्शनों को संगठित करने के उनके प्रयासों में तेजी से समन्वय स्थापित हुआ है। विशेष रूप से एक दिलचस्प पाली में, शैनजेन नगर पालिका संघ ने पिछले साल अपने पुराने संगठनात्मक ढाँचे को तोड़ने और पेशेवर आयोजकों की भर्ती, मजदूरों को संगठित करने के लिए नए तरीकों की तलाश, सामाजिक उथल–पुथल और रूढ़िवादी/संकीर्ण नौकरशाही के बीच एक रास्ता अपनाने के लिए एक प्रयोगात्मक क्षेत्र तैयार किया है।

श्रमिक संघों, राज्य, नियोक्ताओं, श्रमिकों के गैर–सरकारी संगठनों तथा श्रमिकों के मध्य बातचीत से चीन में औद्योगिक संघवाद का एक नया स्वरूप उभर सकता है–जो कि अन्य उत्तर–औद्योगिक कर्त्ताओं में पाये जाने वाले स्वरूप से भिन्न हो? ऐसे समय में जब वैश्विक श्रमिक कार्यकर्त्ता श्रम सम्बंधों में राज्य की संभावी भूमिका की अनदेखी/उपेक्षा कर रहे है, चीन एक उदाहरण पेश करता है जहां कार्यस्थल पर नागरिकों के जीवन को सुधारने में राज्य और समाज अभी भी एक केन्द्रीय/महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ■

लेफेंग लिन से पत्र व्यवहार हेतु पता
<llin@ssc.wisc.edu>

> विश्व पैमाने पर समाज विज्ञान के लिए कार्यक्रम की रूपरेखा

एर्कुमेंट सेलिक, यूनिवर्सिटी ऑफ फ्रीबर्ग, जर्मनी तथा लेबर मूवमेंटस् (RC44) एवं सोशल मूवमेंटस्, कलेक्टिव एक्शन एंड सोशल चेंज (RC48) से सम्बंधित ISA की शोध समिति के बोर्ड सदस्य

जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के ग्लोबल स्टडीज प्रोग्राम के छात्र।
चित्र एर्कुमेंट सेलिक द्वारा।

पिछले दो दशकों के दौरान दक्षिण और उत्तर दोनों में समाज विज्ञान को विश्व पैमाने पर एक गैर–शासकीय विषय बनाना समाज वैज्ञानिकों की चिंता का मुख्य विषय रहा है। यूरोकेन्द्रवाद की समीक्षा तथा ग्लोबल दक्षिण से सामाजिक सिद्धांत के उदय ने दक्षिण से सीखने की आवश्यकता तथा सीखने के अवसरों के लिए एवं विश्व स्तर पर पारस्परिक रूप से सीखने तथा पेशेवर एवं समाज वैज्ञानिकों के सार्वजनिक कार्यों के मध्य संवाद के माध्यम से एक उत्साही बहस को उत्पन्न किया है।

ग्लोबल स्ट्डीज प्रोग्राम (GSP) के तेरह वर्ष का अनुभव इन बहसों पर कितना प्रकाश डाल सकता है? जी एस पी फ्रीबर्ग यूनिवर्सिटी जर्मनी तथा क्वाजुलू यूनिवर्सिटी, नटाल द्वारा संयुक्त रूप से संचालित समाज विज्ञान का एक दो वर्षीय स्नातकोत्तर (मास्टर प्रोग्राम) कार्यक्रम है तथा बाद में केप टाउन यूनिवर्सिटी, दक्षिण अफ्रीका, FLACSO, अर्जेन्टीना, जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, भारत तथा चुलालोंगकार्न यूनिवर्सिटी, थाईलैंड में संचालित हुआ। इसके पाठ्यक्रम में समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, मानव विज्ञान,

>>

श्रम सम्बंधी अध्ययन, अंतराष्ट्रीय सम्बंध तथा भूगोल विषय सम्मिलित हैं। 2002 के बाद से, साठ देखों के तीन सौ से अधिक विद्यार्थियों ने जी एस पी में प्रवेश लिया और प्रत्येक सहभागिता करने वाले संस्थानों में से तीन में अध्ययन कर रहे हैं।

इस अंतराष्ट्रीय, अंतः विषयक एवं अन्तः सांस्कृतिक पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न विश्वविद्यालयों की परम्पराओं, अध्यापन तथा अध्ययन की प्रक्रियाओं का अनुभव करते हैं अथवा सीखते हैं। वे पाठ्यक्रम के दौरान जिन समाजों में रहते हैं, उनके बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं तथा अपने बारे में पुनः खोजते हैं; परिणामस्वरूप, एक विशिष्ट उच्च स्तरीय मास्टर डिग्री तथा साथ ही व्यक्ति, अतुलनीय जीवन अनुभवों द्वारा एक वैश्विक समाज विज्ञान के आधार को निर्मित करने वाले मूल्यों को भी प्राप्त करता है। जी एस पी का अनुभव विद्यार्थियों को वास्तविक 'विश्वबंधुत्व' क्या है, को समझने में सक्षम बनाता है, अन्तः सांस्कृतिक वातावरण उन्हें ऐसे स्थानों तथा परिस्थितियों, जिन्हें वे बेहतर ढंग से जानते हैं, से भिन्न है, में रहने के अवसर प्रदान करता है। इन अवसरों के माध्यम से, विद्यार्थी ''अन्यों'' को समझने, सहने तथा पहचानने की नई क्षमताओं को विकसित करते हैं। अनजाने में, जी एस पी एक ऐसा मंच बन चुका है जिस पर सहभागी स्वेच्छा तथा सहयोग, पारस्परिकता एवं सम्मान के विचारों को विकसित व मजबूत करता है, जिसे अरी सीतास 'सामंजस्य की नीति' की संज्ञा देते हैं।

समाज विज्ञान की कार्यप्रणाली में विश्व स्तर पर न केवल विद्यार्थियों को, अपितु संकाय सदस्यों तथा प्रशासकों को भी अन्तः सांस्कृतिक क्षमता विकसित करने की आवश्यकता है, जिनसे विभिन्न देशों के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के प्रति, संस्थानों, वर्ककल्चर (कार्य संस्कृति) के प्रति संवेदनशील होने की आशा की जाती है। विश्व स्तर पर, इन विद्यार्थियों की सहायता के लिए तत्परता, समाज विज्ञान के विकास के अनेक पक्षों में से एक है, जो कि सहभागियों को प्रोत्साहित करता है कि वे विद्यार्थियों को एक बोझ के रूप में नहीं अपितु एक संभावना के रूप में देखें। जी एस पी संकाय एक महत्वपूर्ण 'वैश्विक जनता' (ग्लोबल पब्लिक)–स्पष्टवादी, आत्मविश्वासी, सामाजिक और अन्तः सांस्कृतिक ढंग से व्यस्त 'ग्लोबल' नागरिक को व्यस्त रखती है जो विश्व स्तर पर जुड़े हुए हमारे समाजों को आकार देने की संभावना रखते हैं।

एक गैर–शासकीय पारस्परिक अध्यापन इस प्रकार के किसी कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण पक्ष होना चाहिए। कोई भी यह कल्पना कर सकता है कि जी एस पी, चार महाद्वीपों में साझेदार विश्वविद्यालयों के साथ, यूरोप तथा ग्लोबल दक्षिण दोनों से सम्बंधित प्रत्येक विश्वविद्यालय अपनी विशिष्ट परम्पराओं व ज्ञान प्रणालियों के साथ–ज्ञान की एक विश्वस्तरीय प्रणाली को जानने और लागू करने की एक आदर्श/संपूर्ण संरचना अथवा रूपरेखा है। रेवेन कॉनेल लिखते हैं कि मेट्रोपोल में एक स्नातक पाठ्यक्रम के रूप में यह महानगरीय विज्ञान के पेशेवर प्रतिमानों से प्रतिबंधित है, यह उन लोगों के लिए एक चुनौती है जो विश्व स्तर पर एक समावेशी पाठ्यक्रम की ओर अग्रसर हैं। निश्चित रूप से, पिछले दशक में जी एस पी ने फ्रीबर्ग विश्वविद्यालय में एक चुनौती का सामना किया। तथापि पाठ्यक्रम एवं संस्थागत बाधाओं के बावजूद, संकाय सदस्यों ने नए पाठ्यक्रमों तथा व्याख्यानों जैसे ''आधुनिकता संवाद एवं यूरोकेन्द्रितावाद की चुनौतियां'', ''लोक बुद्धिजीवियों के रूप में समाजशास्त्री : एक दक्षिणपंथी परिप्रेक्ष्य'', ''वैश्विक समाजशास्त्र में रूपक, दृष्टांत एवं कहावत'' के माध्यम से अधिक समावेशी पाठकों को तैयार करने का मार्ग प्रशस्त किया है। इसके प्रति विद्यार्थियों में भी सकारात्मक प्रतिक्रिया देखी गई। विशेष रूप से उत्तर–अमेरिका एवं जर्मनी के विद्यार्थियों ने आलोचनात्मक लेखों द्वारा स्पष्ट किया कि किस प्रकार उनका स्नातक अध्ययन यूरोप–अमेरिका केन्द्रित ज्ञान से प्रभावित था तथा इसके विषय में वे कितना कम जानते थे।

पेशेवर अकादमिक कार्य तथा सार्वजनिक कार्य के मध्य वार्ता की तैयारी, जी एस पी का एक ऐसा प्रयास है जिसे हम अब 'लोक समाजशास्त्र' (पब्लिक सोशियोलॉजी) की संज्ञा देते हैं। जब हम जी एस पी के इतिहास पर पुनः विचार करते हैं, हम पाते हैं कि विभिन्न देशों में सहयोगी विश्वविद्यालयों में अपने अध्ययन के दौरान, विद्यार्थी क्षेत्रीय कार्य करने के लिए प्रोत्साहित थे, अक्सर इन समाजों की समस्याओं से वे दिल से जुड़े रहते थे। अनिवार्य इंटर्नशिप उन्हें वास्तविक कार्य तथा सामाजिक आंदोलनों, गैर–सरकारी संगठनों, सामुदायिक संगठनों, श्रमिक संघों, साथ ही अकादमिक एवं सरकारी संस्थानों इत्यादि के जीवन में भाग लेने हेतु सक्षम बनाता है। माइकल बुरावे के शब्दों में, ''वे नागरिक समाज (सिविल सोसॉयटी) से अपने संबंधों को बनाएं रखते हैं।'' विद्यार्थी 'सावयवी' जीएसपियन बन जाते हैं, चाहे वे समाजशास्त्री हैं या नहीं। अधिकांश मामलों में, इस प्रकार की 'सार्वजनिक' गतिविधियां उनकी मास्टर थीसिस में अकादमिक कार्य तथा वैज्ञानिक विश्लेषण में विकसित होती हैं। जी एस पी लोक नीति, आलोचनात्मक तथा पेशेवर समाजशास्त्र को जोड़ने के लिए एक मंच प्रदान करता है और विशेष रूप से, पेशेवर एवं लोक समाजशास्त्र के मध्य संवाद उत्पन्न करता है।

जी एस पी की सबसे गंभीर बाधाओं में से एक बाजार एजेंडा है जो दुनिया भर के विश्वविद्यालयों को आकार देता है। एक महत्व पूर्ण मुद्दा शैक्षणिक/अकादमिक सदस्यों की काम करने की स्थितियों की बढ़ती अनिश्चितता है, जो कार्यक्रम की स्थिरता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। विशेष रूप से जर्मनी में, मध्य स्तरीय संकाय तथा प्रशासकों को काम की सुरक्षा प्राप्त नहीं है और अधिकांश को जी एस पी के विजन के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं के बावजूद भी कुछ मुद्दों पर कार्यक्रम को छोड़ना पड़ेगा।

दूसरी चिंता सहयोगी विश्वविद्यालयों के बीच असमान शक्ति सम्बंधों के संदर्भ में है। जानबूझकर या अनजाने में, फ्रीबर्ग विश्वविद्यालयों साझेदारी में प्रभावी भूमिका का निर्वाह करता दिखाई देता है, भविष्य में, कार्यक्रम तैयार करने में हम सहभागी विश्वविद्यालयों की एक समान भूमिका की अपेक्षा कर सकते हैं। जी एस पी तथा इसी तरह के कार्यक्रमों की सफलता के लिए समतावादी संरचना महत्वपूर्ण है।

हालांकि, सभी चुनौतियों के बावजूद, जी एस पी के अनुभव, एक विश्व स्तर पर, समाज विज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करता है, परिधि से सीखने को प्रोत्साहित करता है, आपसी समझ को विकसित करता है तथा एक अकादमिक मंच उपलब्ध कराता है जहां समाजशास्त्रीय कल्पना राजनीतिक कल्पना के साथ सम्बद्ध की जा सकती है। ■

एर्कुमेंट सेलिक से पत्र व्यवहार हेतु पता <ercumentcelik@gmail.com>

> अंतराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पेशे : संबंधित पक्षों की सार्वजनिकता[1]

एलन कुहलमन, कारोलिंसका इंस्टीट्यूट स्वीडन, **टयूबा एगर्टन**, प्रोविडेंस कॉलेज, यू. एस. ए., **डेवी बोनिन**, यूनिवर्सिटी ऑफ प्रिटोरिया, दक्षिण अफ्रीका, **जेवीर पाबलो हर्मो**, यूनिवर्सिटी ऑफ ब्यूनस आयर्स, अर्जेंटीना, **अलेना इयरकाईया–सिमरनोवा**, हायर स्कूल ऑफ इकनोमिक्स, मोस्को, रूस, **मोनिका लेंग्यूर**, टेकनिकल यूनिवर्सिटी ऑफ डार्टमंड, जर्मनी, **शाउन रिग्यूनन**, यूनिवर्सिटी ऑफ क्वाजूलू–नेटल, दक्षिण अफ्रीका एवं **विरेन्द्र पी. सिंह**, यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद, भारत। ये सभी लेखक प्रोफेशन से सम्बंधित ISA की शोध समिति (RC52) के सदस्य हैं।

वैश्वीकरण ने आधारभूतीय तरीके से पेशे के क्षेत्र एवं व्यवहार का विस्तार किया है। विशेष रूप से उभार लेती हुयी अर्थव्यवस्थाओं में ऐसा हुआ है। ब्रिक्स के देशों में (ब्राजील, रूस, भारत, चीन एवं दक्षिण अफ्रीका) तेज गति से विकसित होता हुआ बाजार एवं मध्यम आर्य वर्ग के कुछ अन्य देशों में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों में पेशेवर विशेषज्ञता एवं पेशेवर सेवाओं के लिए नवीन माँगों की उत्पत्ति हुई है। हालांकि, पश्चिमी विश्व में नव्य–उदारवाद के मोड़ ने विभिन्न राज्यों में कल्याणकारी सिद्धांतों के सामने सवालिया निशान उत्पन्न किये हैं। और साथ ही मितव्ययता की राजनीति ने पेशेवर सेवाओं के लिए सार्वजनिक–आर्थिक योगदान को सीमित किया है।

विकास के इन पक्षों ने विभिन्न सामाजिक संदर्भों में उत्पन्न हुए एवं परिवर्तित पेशों के क्षेत्र में 'रियल टाइम' (वास्तविक अवधि) अनुसंधानों के विशिष्ट अवसरों को उत्पन्न किया है। इसके साथ ही वैश्विक दृष्टि के द्वारा पेशों के मूल्यांकन ने पेशों एवं पेशावाद की अवधारणाओं के विषय में आलोचनात्मक दृष्टि उत्पन्न की है। ये अवधारणाएं 20वीं शताब्दी के पश्चिमी कल्याणकारी राज्यों की राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियों के आधार पर विकसित हुई है।

हालांकि, पेशों की विवेचना में राज्य एक केन्द्रीय मुद्दा है परंतु समाजशास्त्रियों ने 'राज्य' एवं 'नागरिकता' जैसी अवधारणाओं के भू–राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों पर कम ध्यान दिया है। हाल के अनुसंधान वैश्वीकरण एवं ट्रांसनेशनल शासन पर अधिक बल देते हैं। यह अनुसंधान अंतराष्ट्रीय तुलनाओं को मजबूत देते हैं लेकिन पेशों से जुड़ी हुई अधिकांश विवेचनाएं मुख्यतः पश्चिमी देशों पर केन्द्रित हैं। उन्होंने वैश्विक दक्षिण एवं पूर्वी देशों पर कम ध्यान दिया है।

हम इस उपागम को, जो कि वर्तमान में विद्यमान है, उलट देते हैं और उन अनुसंधानों को केन्द्र में लाते हैं जिन्हें विभिन्न विचारकों ने दक्षिण अफ्रीका, भारत, अर्जेंटीना, रूस, तुर्की एवं अरब देशों के संदर्भ में किया है। इन अनुसंधानों में 'कल्याणकारी राज्य से सम्बंधित पेशे' के परे अन्य'संदर्भ इकाईयों' पर एक सामान्य दृष्टिकोण को महत्व नहीं दिया है। हम आगे चलकर ऐसे उदाहरण देंगे जो कि राज्य एवं पेशों के मध्य सम्बंधों के एकीकृत विकास को पेशे से सम्बंधित विकास के साथ जोड़कर अध्ययन से लिए गये हैं।

अरब देशों में 'पेशावाद' एक सार्वभौमिक अवधारणा मानी जाती है। अरब पेशेवर विशेषज्ञ (उदाहरण के लिए विश्वविद्यालय के प्रोफेसर) पेशे से सम्बंधित मूल्यों की विवेचना करते हैं और इस विवेचना को 1960 एवं 1970 के दशकों से जुड़ी प्रकार्यवादी विवेचना के समकक्ष रखते हैं। यह विवेचना एकजुटता, गोपनियता एवं सत्यपरकता साथ ही सामाजिक उत्तरदायित्व, वस्तुपरकता एवं ज्ञान आधारित कार्य पर केन्द्रित है। साथ ही यह विवेचना पश्चिमी प्रकार्यवाद के मुख्य तत्वों जैसे पेशे से सम्बंधित संगठनों के ढाँचे, नियंत्रण एवं एकाधिकार के उद्देश्यों की उपेक्षा करती है। यह विवेचना दर्शाती है कि पेशे से सम्बंधित क्षेत्र को निर्मित करने के लिए पेशावाद को रणनीतिक तरीके से सक्रिय करना चाहिए। हालांकि, आज भी विभिन्न पेशे वैज्ञानिक साक्ष्यों की अनेक बार उपेक्षा कर देते हैं और सार्वजनिक नियंत्रण एवं राज्य के समर्थन के परिपक्व तरीकों को स्वीकारते हैं।

तुर्की एवं रूस में केन्द्रीकृत राज्य पेशेवर समूहों के क्षेत्र एवं पेशावाद के विचार में अवरोधक हैं। अतः दोनों देशों में नीतिगत परिवर्तन राज्य एवं पेशों के मध्य के सम्बंधों को पुनः आकार देते हैं। इस आकार को देने में भिन्न–भिन्न तरीके सम्मिलित हैं। मध्यम आय वाले देश के रूप में तुर्की का उभार लेता हुआ बाजार उपभोक्तावाद की वृद्धि के तर्क को स्वीकारता है। इस तर्क ने सार्वजनिक क्षेत्रों की सेवाओं की मांग में वृद्धि की है। साथ ही नवीन सार्वजनिक प्रबंधन की प्रणाली ने विभिन्न पेशों को नियंत्रित भी किया है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य के क्षेत्र में विभिन्न रणनीतियों का समुच्चय साफ नजर आता है। नवीन प्रबंधन नीतियों ने चिकित्सकों पर नियंत्रण में वृद्धि की है। परंतु साथ ही, चिकित्सा के पेशे से जुड़े समूहों एवं राज्य के मध्य नवीन सम्बंध भी विकसित हुए हैं। सरकार ने चिकित्सकों के लिए नवीन प्रबंधन पदों को जन्म दिया है जबकि दूसरी ओर, स्वास्थ्य सम्बंधी पेशा चिकित्सा शिक्षा में प्रबंधन को एकीकृत कर आगे बढ़ाता है।

रूस में 1990 के दशक से पेशों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण रूपांतरण हुए हैं। उदाहरण के लिए समाजकार्य का एक नवीन पेशे के रूप में जन्म हुआ है जिसमें पेशे से सम्बंधित क्षेत्रों से जुड़ी पुरानी एवं नवीन मूल्य प्रणालियों को सम्मिलित कर प्रशिक्षण व्यवस्था को उत्पन्न किया गया है। हालांकि, सरकार की कम वेतन की नीतियों एवं लैंगिक संस्कृतियों ने समाज कार्य के पेशे के विकास में अवरोध उत्पन किए हैं। पर यह भी सच है कि बाजार से संचालित नवीन सामाजिक नीतियों ने सामाजिक कार्य से जुड़े कार्यकर्त्ताओं में पेशाकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया है। उन्हें अनेक पक्षों एवं सुविधाओं की उपलब्धता हुई है और सामाजिक अधिकारों के प्रति

>>

> *"पेशों के बहुत सारे विचार–विमर्श केवल पश्चिमी देशों की ओर मुख्य रुप से देखते हैं तथा वैश्विक दक्षिण अथवा पूर्वी देशों की तरफ जरा भी ध्यान नहीं देते"*

उनके दावे को वैधता मिली है। परिणामस्वरूप समाजकार्य धीरे–धीरे सार्वजनिक क्षेत्र में एकीकृत स्वरूप के साथ प्रविष्ट हुआ है और उसे बाजार के विस्तार का लाभ भी मिला है। परंतु यह भी पाया गया है कि नवीन बाजार नीतियों के तंत्र में समाज कार्य से सम्बंधित कार्यकर्त्ता अपनी पहचान एवं अपने पद की परिभाषा को स्थापित करने वाली ताकत नहीं जुटा पाये हैं। यदि ताकत जुटती है तो ग्राहक के साथ उनके सम्बंध रूपांतरण का भाग बन सकते हैं।

भारत और दक्षिण अफ्रीका दोनों आर्थिक वृद्धि तथा उभरती वैश्विक शक्ति का अनुभव कर रहे हैं तथा दोनों ही देशों ने अनेक बहु–शासकीय व्यवस्थाओं को भी स्थापित किया है। पेशेवर विकास को वैश्वीकरण एवं औपनिवेशिक इतिहास दोनों ने आकार दिया है। और दोनों देशों में, उदार कल्याणकारी राज्य के एंग्लो–सैक्सन मॉडल ने, पेशे के उपयोग पर नियंत्रण रखते हुए, मजबूत स्व–शासन के साथ पेशों को विकसित किया।

भारत में, कानूनी पेशा वैश्वीकरण की मजबूत शक्तियों के साथ–साथ राष्ट्रीय नियमन का भी केन्द्र है जो कि कानूनी फर्मों के बीच बाजार की प्रतिस्पर्धा को सीमित करता है तथा विदेशी वकीलों की पहुंच को प्रतिबंधित करता है। भारतीय और विदेशी दोनों कानूनी फर्मों ने कॉर्पोरेट जांच के नए स्वरूपों के माध्यम से बाजार के विस्तार की रणनीतियों को विकसित किया है। भारत कानूनी प्रक्रियाओं की आउटसोर्सिंग आई टी (सूचना प्रौद्योगिकी) तथा प्रकाशन क्षेत्र में पहले से ही प्रचलित एक रणनीति का एक प्रमुख केन्द्र बनता जा रहा है। इस रूपांतरण ने एक लघु अभिजन पेशेवर समूह को उत्पन्न किया, जो कानूनी पेशेवरों की प्रस्थिति को कम करके आंकते हैं तथा जो वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते। इस अभिजनवर्गीय क्षेत्र में, वैश्विक कॉर्पोरेट राजनीति के प्रभाव के कारण राज्य के हस्तक्षेप ने पेशों के पुनर्निर्माण की शक्ति को सीमित किया है।

दक्षिण अफ्रीका की तीव्र आर्थिक वृद्धि ने सार्वजनिक क्षेत्र में सार्वजनिक पेशेवरवाद तथा एकीकरण के बीच तालमेल बैठाया है। उत्तर–रंगभेद की राजनीति ने अधिक समावेशी पेशेवर विकास के लिए मजबूत मांग को प्रस्तुत किया। फिर भी पेशे लैंगिक एवं प्रजातीय अथवा असमानता के नृजातीय प्रारूपों से निर्मित होते हैं। यहां, पेशेवर राज्य से पृथक, मजबूत स्व–शासन क्षमताओं को जुटाने, पेशेवर क्षेत्रों के उपयोग को नियंत्रित करके व्यवसायिक एकाधिकार बनाए रखने के योग्य बने हैं। पुनः स्तरीकरण, बाजारीकरण तथा प्रबंधन में हुए बदलावों ने लैंगिक तथा प्रजातीय असमानताओं को मजबूत किया है, (औपचारिक) वैधानिक और राज्य के समर्थन के बावजूद, नवीन कानूनी आवश्यकताओं के बावजूद समावेशन को बढ़ावा दिया है। हाल में पेशों को नियंत्रित करने के राज्य के प्रयास–राज्य के परिवर्तन के एजेंडे का हिस्सा है–लंबे समय से चले आ रहे व्यवसायिक एकाधिकार को चुनौती दे सकते हैं और पूर्व में निष्कासित सामाजिक समूहों के लिए दरवाजे खोल सकते हैं।

अंत में, अर्जेंटीना की बढ़ती अर्थव्यवस्था ने भी, तेजी से बहु–शासन व्यवस्था के साथ, विस्तारित सामाजिक सेवाओं के पेशकश की है। इधर, यूरोप के साथ मजबूत ऐतिहासिक सम्बंधों (विशेष रूप से लैटिन देशों के साथ) ने उच्च शिक्षा के लिए नएं अंतराष्ट्रीय विकल्पों, विशेष रूप से पेशेवर शिक्षा तथा स्नातकोत्तर अध्ययन में सार्वजनिक पेशेवरवाद को उत्पन किया है। पेशेवर समूहों ने व्यक्तिगत पेशेवरों के लिए नये कैरियर के अवसरों को निर्मित करके तथा ज्ञान उत्पादन और कौशल प्रमाणीकरण की नई प्रक्रियाओं को उत्पन्न करके अंतराष्ट्रीय बाजार को प्रत्युत्तर दिया है। यह उदाहरण बताता है कि किस प्रकार वैश्वीकरण तथा ट्रांसराष्ट्रवाद/अंतराष्ट्रीयतावाद परिवर्तन के एजेंट तथा नीति निर्माताओं के रूप पेशों की भूमिका को न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु संभावित अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी मजबूती प्रदान करता है।

हमारे वैयक्तिक अध्ययन (केस स्टडी) में उच्च शिक्षा, कानून एवं मीडिया के पेशेवर क्षेत्रों से लेकर समाज कार्य तथा चिकित्सा तक के पेशे सम्मिलित हैं। यद्यपि प्रत्येक कहानी विशिष्ट है तथा अभी भी सभी विकसित हो रही हैं, प्रत्येक अभी भी विकसित होते वैश्विक परिप्रेक्ष्य के माध्यम से पेशों में योगदान करेंगी। ■

एलन कुहलमन से पत्र व्यवहार हेतु पता <ellen.kuhmann@ki.se>

[1] This is a contribution from the ISA Research Committee on Professions (RC52). For details of the country cases and authors, see http://www.isa-sociology.org/pdfs/rc52_professions_in_world_perspective.pdf.

> धन्यवाद, नॉचो !

इजाबेला बार्लिन्सका, आई.एस.ए. कार्यकारी सचिव, मेड्रिड, स्पेन

जो ईग्नेसियो रिग्युएरा, जो हम सब के लिए आई.एस.ए. में नॉचो था।

जनवरी 1987 में आई.एस.ए. के दस्तावेजों के एक डिब्बे ने एम्सटड्रम से मेड्रिड के लिए यात्रा की और आई.एस.ए. सचिवालय का एक नया युग प्रारम्भ हो गया। हमने जल्दि ही इस सामान को खोला और स्थापित किया ताकि मेड्रिड में होने वाली आई.एस.ए. की 12वी विश्व समाजशास्त्र कॉग्रेस की तैयारियां शुरु की जा सकें। उन दिनों आई.एस.ए. में लगभग दो हजार सदस्य होते थे (जो कि अब तुलना में छः हजार हैं), उस समय कॉग्रेस का कार्यक्रम नियमित टाईपराईटर्स पर होता था, तथा फैक्स नवीनतम संचार माध्यम था।

यह उस वक्त की बात है जब जो ईग्नेसियो रिग्युएरा, जो हम सब के लिए नॉचो था, ने सचिवालय के सदस्य की तरह शामिल हुआ और तब से अब तक पिछले तीस सालों से हमारे साथ काम कर रहा है। उन्होने अब सेवानिवृति का आनन्द लेने का निर्णय किया है। पिछले तीन दशकों मे नॉचो ने हमारे सदस्यों के विभिन्न आंकडों का व्यवस्थापन विकसित किया और जब इन्टरनेट युग का शुभारम्भ हुआ तो वह आई.एस.ए. के प्रथम वैब–मास्टर बनें। बहुत–बहुत धन्यवाद नॉचो, आपके प्रगतिशील कार्यों के लिए जिससे कि आई.एस.ए. घर से संचालित संस्था से एक आधुनिक अर्न्तराष्ट्रीय संरचना बन सका। ■